श्याम मोहन अस्थाना

खरीदा हुआ चेहरा

खरीदा हुआ चेहरा • श्याम मोहन अस्थाना

खरीदा हुआ चेहरा

परिवार की वधू

कुशल गृहणी

श्रीमती अमृता अस्थाना

को सप्रेम -

[illegible]

26.11.2013

खरीदा हुआ चेहरा

•

श्याम मोहन अस्थाना

•

राका प्रकाशन
आरा (बिहार)

मूल्य : सोलह रूपये
प्रथम संस्करण : १९८३
प्रकाशक : राका प्रकाशन
आरा (बिहार)
मुद्रक : न्यू कमला मुद्रण
एस. ९/२७१, नईबस्ती, पाण्डेपुर
वाराणसी कैण्ट–२२१००२

Kharida Hua Chehara

(Collection of one act plays)

—Shyam Mohan Asthana

समर्पण

एक आकारहीन आवेग को,
जिसने रूप, रंग और रस प्रदान किया
उस अनन्त सम्भावनाओं से पूर्ण,
भोजपुर की धरती को।
उन सारे परिचित-अपरिचित लोगों को,
जिनके सतरंगी बिम्ब
इन एकांकियों में बिखरे हुए हैं!
उन सारे रंगकर्मियों को
जिनकी मुद्राओं में ढलकर
शब्द अग्नि के कण बन गये!
उन मित्रों एवं शुभचिन्तकों को
जिन्होंने लेखक को
पग-पग पर प्रेरणाएँ दीं!

क्रम :

१. खरीदा हुआ चेहरा १

२. मेरा नाम मथुरा है २५

३. अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ५१

४. अँधेरे की डाल ६९

५. कोई जगह खाली नहीं है ९३

६. अँधेरे से उजाले की ओर १०७

□□

खरीदा हुआ चेहरा

(एक मनोवैज्ञानिक ध्वनि एकांकी)

(आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से प्रसारित)

पात्र-परिचय

१.	मिस नीला (नर्तकी)	आयु ४५ वर्ष
२.	बानू (सेविका)	,, ४० ,,
३.	शोभा (एक गरीब लड़की)	,, २० ,,
४.	मिस्टर कपूर, प्रिंस होटल का मैनेजर	,, ५० ,,
५.	कुमार पंकज (इंदरपुर स्टेट)	,, २५ ,,
६.	महारानी (कुमार पंकज की माँ)	,, ५५ ,,
७.	डाक्टर भाटिया	,, ५० ,,

खरीदा हुआ चेहरा

[१]

स्थान : मिस नीला का बंगला

समय : संध्या ६ बजे

(तबले और घुंघरुओं का सम्मिलित स्वर । मिस नीला कत्थक नृत्य का अभ्यास कर रही है ।

(शोभा का प्रवेश)

शोभा : आंटी !

(नृत्य का अभ्यास जारी रहता है ।)

शोभा : **(जरा जोर से)** आंटी !

(नृत्य थम जाता है)

नीला : कौन, शोभा !

शोभा : हाँ, मैं ही हूँ आंटी; आप बहुत सुन्दर नृत्य करती हैं ।

नीला : तुमको मेरा नृत्य अच्छा लगता है ?

शोभा : आप बहुत शर्मिंदा करती हैं । आपने इसी नृत्य के बल पर देश-विदेश में कितनी ख्याति पाई है ।

नीला : ये सारी कहानियाँ अब खत्म हो गयी हैं ।

शोभा : ये कहानियाँ कभी खत्म नहीं होंगी । इस उम्र में भी आप कितना कठोर अभ्यास करती हैं ।

नीला : मेरी उम्र बहुत अधिक लगती है, शोभा ?

शोभा : आप बुरा मान गयीं, आंटी । मेरा यह मतलब नहीं था ।

नीला : किसी काम से चली हो, शोभा ?

शोभा : हाँ आंटी, क्या कहूँ; बार-बार हाथ फैलाने में बहुत शर्म आती है !

नीला : मैं थोड़ा जल्दी में हूँ, शोभा !

शोभा : बहुत मजबूरी में आई हूँ, आंटी। घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है। माँ अलग बीमार पड़ी है।

नीला : क्या चाहिये, कुछ कहोगी ?

शोभा : दस रुपया दो आंटी। रुपया होने पर लौटा दूँगी।

नीला : ठीक हैं।

(बानू ! बानू ! आवाज देती है)

(बानू का प्रवेश)

बानू : आपने बुलाया है, मेम साहब ?

नीला : हाँ, देखो ड्रेसिंग टेबुल के ड्राअर में मेरा पर्स पड़ा है, ले आओ।

बानू : ठीक है, मेम साहब।

(बानू का प्रस्थान)

नीला : शोभा, तुम कोई काम क्यों नहीं कर लेती ?

शोभा : ऐसे काम कहाँ मिलता है, आंटी ! एक जगह टाइप सीख रही हूँ। अब शायद किसी आफिस में नौकरी लग जाय।

नीला : लेकिन आफिस के अस्सी-सौ से क्या बनेगा ?

शोभा : रेगिस्तान के प्यासे के लिये एक घूंट पानी बहुत होता है।

नीला : तुम्हारी जैसी सुन्दर लड़की अगर नृत्य में उतरे तो बस जादू हो जाय !

शोभा : इस बात को मत कहो, आंटी ! मैंने भी एक दिन सपना देखा था पर माँ के रुख को देखकर सहम कर बैठ गयी।

नीला : अजीब लोग हैं !

(बानू का प्रवेश)

बानू : मेम साहब, ड्रेसिंग टेबुल का शीशा बिलकुल टूटा हुआ है। जैसे किसी ने हथौड़ी से चूर-चूर कर दिया हो !

नीला : ड्राअर से पर्स ले आई ?

बानू : हाँ, यह लीजिये।

(बानू नीला को पर्स देती है।)

नीला : (**रुपये निकाल कर**) लो शोभा, ये रहे दस रुपये ! इतने में तुम्हारा काम चल जायगा ?

शोभा : हाँ आंटी, मैं आपके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकूँगी ।

नीला : ठीक है, जाओ । माँ का खयाल रखना ।

शोभा : आप बहुत अच्छी है आंटी । अब चलती हूँ ।

(**शोभा का प्रस्थान**)

बानू : मेम साहब, ये शीशा कैसे टूटा, आपको कुछ मालूम है ?

नीला : वह शीशा मैंने तोड़ा है, बानू । उसे चुनकर बाहर फेंक दो ।

बानू : मेम साहब !

नीला : शीशा बहुत धुंधला पड़ गया था । उस पर बेहद लकीरें पड़ गयीं थीं ।

बानू : शीशा तो बहुत कीमती था, मेम साहब !

नीला : कीमत से क्या होता है ! मैं इतनी कुरूप नहीं हो सकती !

बानू : मेम साहब !

नीला : ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठते ही मुझे एक बूढ़ी का चेहरा दिखाई पड़ता था—आड़ी-सीधी रेखाओं से घिरा हुआ ! वह मेरा चेहरा नहीं था !

बानू : मेम साहब, उमर के साथ चेहरे पर लकीरें पड़ती ही हैं ।

नीला : नहीं, बानू नहीं....ये लकीरें नहीं, लोहे की जंजीरें हैं ! इनमें मेरा व्यक्तित्व, मेरी ख्याति मेरा सारा भविष्य कैद हो जायगा ।

बानू : आपका कितना नाम है ! इतनी शोहरत किसको मिलती है !

नीला : शोहरत (**घृणा के साथ**) हुँह ! अखबारों की सुर्खियाँ, तालियों की गड़गड़ाहट ! ये आवाजें अब दिनोदिन खोखली हो रही हैं !

बानू : आपको किस बात की कमी है, मेम साहब ! बंगला, रुपया, मान-सम्मान, ऐशो-इशरत, खुदा के फजल से आपको सब कुछ भरपूर मिला है ।

नीला : मैं एक औरत हूँ, बानू । मुझे जीने के लिये प्यार भी चाहिये ।

बानू : प्यार ! बुरा न मानिये, मेम साहब, प्यार तो हमेशा आपके लिये एक खेल ही रहा ।

नीला : बानू !

बानू : आपने इंसानों की एक पूरी पीढ़ी को दरवाजे से लौटा दिया ! आप तो शायद इंदर देवता को भी नापसंद कर देतीं ।

नीला : नहीं बानू, यह बात नहीं है । मैं हमेशा यही सोचती रही कि एक पुरुष के साथ बंध जाने से मेरी कला मर जायगी ।

बानू : आपकी कला को तो लोगों ने हाथो-हाथ लिया !

नीला : जरूर लिया । पर मैं जितनी बड़ी कलाकार बनी उतनी ही लोगों से दूर होती गयी । समय ने अब इस दूरी को बहुत बढ़ा दिया है ।

बानू : तो आप चाहती क्या हैं ?

नीला : बस जो हरेक औरत चाहती है । एक धड़कता हुआ दिल और एक जोड़ी प्यार में डूबी आँखें !

बानू : आप ऐसा क्यों सोचती हैं, मेम साहब ! सिर्फ इशारा करने की देर है । न जाने कितने पैगाम आपके कदमों को चूमेंगे ।

नीला : नहीं बानू, ये सारा इन्तजार बेकार है । ये सारे काफिले गुजर चुके हैं । अब मैं लोगों की नजर में सिर्फ एक नाम, एक आकृति, एक आवाज़ रह गयी हूँ ।

बानू : मेम साहब !

नीला : मैं दुनिया की सबसे दुखी औरत हूँ । ये गरीब लड़की शोभा भी मुझसे बहुत अच्छी है ।

बानू : ये आप क्या कहती हैं ! कहाँ आप और कहाँ शोभा ? आपके पास सब कुछ है । उस बेचारी के पास तो कुछ नहीं है ।

नीला : नहीं बानू, उसके पास सुन्दर सपने तो हैं ।

बानू : गरीबों का सबसे बड़ा सपना एक रोटी होती है ।

नीला : उसके पास एक भविष्य है ।

बानू : गरीबों का कोई भविष्य नहीं होता ।

नीला : उसके पास गजब की खूबसूरती है। कैसा खिले हुए गुलाब सा रंग है।

बानू : गरीब की खूबसूरती सिर्फ एक बोझ होती है, मेम साहब ! ये सारे गुलाब बहार से बहुत पहले झड़ जायेंगे !

नीला : बानू !

बानू : मेम साहब, आप गरीबों की मजबूरी नहीं समझ सकतीं।

नीला : रुपये से सुख नहीं खरीदा जा सकता बानू !

बानू : सुख क्या होता है, मेमसाहब ? आराम-ऐशो-इशरत-रिश्ते—सबकी कीमत होती है। दौलत से सब कुछ खरीदा जा सकता है !

नीला : नहीं बानू, नहीं; अगर ऐसा हो सकता तो मैं अपने सभी सपनों को लौटा लेती !

बानू : मेम साहब........

(काल बेल की आवाज)

नीला : देखो बानू, बाहर कौन है।

(बानू बाहर जाती है। फिर वापस आती है।)

बानू : मेम साहब, प्रिंस होटल के मैनेजर मि० कपूर आपसे मिलना चाहते हैं।

नीला : बातों ही बातों में देर हो गयी। आज वहाँ मेरा प्रोग्राम है। उन्हें बुला लो।

(बानू मि० कपूर के साथ आती है।)

कपूर : गुड इवनिंग, मिस नीला !

नीला : गुड इवनिंग !

कपूर : आपके आने में देर हुई। मैंने सोचा जरा देख लूँ।

नीला : क्यों, आरकेस्ट्रा पार्टी आ गयी ?

कपूर : येस सब लोग आ गये ! सिर्फ आपका इन्तजार है।

नीला : आज बड़ी तैयारी है, मि० कपूर !

कपूर : येस, आज हम फारेन टूरिस्ट की एक पूरी पार्टी को रिसेप्शन दे रहे हैं।

नीला : आपके पास प्रोग्राम की कमी नहीं है। मुझे क्यों तकलीफ दिया!

कपूर : आपकी कौन बराबरी कर सकता है। इस देश के शास्त्रीय और लोकनृत्यों में आप सबसे आगे हैं। टूरिस्टों ने आते ही कहा वी वांट, मिस नीला!

नीला : वह नीला अब मरती जा रही है, मि० कपूर।

कपूर : डोंट टाक सिली! मिस नीला कभी मर नहीं सकती। मिस नीला हजार साल तक याद की जायगी।

नीला : हाँ, लोग एक डांसर को याद करेंगे। लेकिन नीला नाम की औरत घुट-घुट कर मर रही है, मि० कपूर!

कपूर : वी आर गेटिंग लेट, मिस नीला।

नीला : ठीक है, चलिये मि० कपूर।

(नीला एवं मि० कपूर का प्रस्थान)

[२]

स्थान : प्रिंस होटल का मेन हाल।

समय : रात्रि के नौ बजे।

(आरकेस्ट्रा पर दादरे की एक धुन। साथ में घुंघरुओं की आवाज। इन आवाजों के थमते ही तालियों की जोरदार गड़-गड़ाहट।)

कपूर : इस आइटम के बाद हमारा आज का कार्यक्रम समाप्त होता है। हम अपने लोकल और फॉरेन पैट्रनस् को धन्यवाद देते हैं।

(एक साथ कई आवाजें) वी वांट मिस नीला आन द स्टेज...... वी वांट मिस नीला ...... मिस नीला!

(ग्रीन रूम में)

कपूर : मिस नीला!

नीला : कहिये मिस्टर कपूर!

कपूर : पब्लिक आपको स्टेज पर चाहती है। वे आपका नाम बार-बार पुकार रहे हैं।

नीला : लेकिन मैंने तो मेकअप खोल दिया है।

कपूर : आप ऐसे ही चलें। सब आपका अभिनन्दन करना चाहते हैं।

नीला : नहीं मि० कपूर, सब स्टेज की मिस नीला से मिलना चाहते हैं। कलाकार के असली चेहरे को कोई देखना नहीं चाहता।

(दूर से आवाज) वी वांट मिस नीला ! मिस नीला ! मिस नीला !

कपूर : चलिये मिस नीला !

नीला : सॉरी, मिस्टर कपूर।

(मेन हाल में)

कपूर : जंटिलमेन, मिस नीला की तबीयत अचानक खराब हो गयी है। वह स्टेज पर नहीं आ सकतीं।

(सम्मिलित स्वर में) थ्री चीयर्स फॉर मिस नीला ! हिप-हिप हुर्रे ! हिप-हिप हुर्रे ! हिप-हिप हुर्रे !

(ग्रीन रूम में)

कपूर : मिस नीला !

नीला : येस मि० कपूर !

कपूर : आज आपने बहुत सुन्दर नृत्य किया। जस्ट सुपर्ब !

नीला : आपको अच्छा लगा ?

कपूर : बहुत अच्छा। लेकिन आपसे एक बात कहना चाह रहा था। आप में आत्म विश्वास की बेहद कमी आ गयी है। आप दुनिया से दूर, बहुत दूर भाग रही हैं।

नीला : मैं अब अपने को सही पहचान रही हूँ।

कपूर : समय से पहले बूढ़े होने की जरूरत नहीं है, मिस नीला। आप कहीं चेंज के लिये क्यों नहीं चली जातीं।

नीला : सभी जगहें एक जैसी हैं ! सभी शहर भीड़ों से भरे हुए हैं ! सभी लोग सिर्फ अपने में डूबे हुए हैं !

कपूर : आप अपने को चौपट कर रही हैं। चेहरे की कुछ झुर्रियों ने आपको बहुत मायूस कर दिया है। आप प्लैस्टिक सर्जरी क्यों नहीं करा लेतीं।

नीला : इससे क्या होगा ?

कपूर : यह एक नयी वैज्ञानिक मुख-सज्जा है। कुछ हल्के आपरेशनों से चेहरे पर आयु के सभी चिह्नों को मिटा दिया जाता है।

नीला : क्या यह संभव है ?

कपूर : बिलकुल। इस शहर में डाक्टर भाटिया प्लास्टिक सर्जरी की फारेन ट्रेनिंग लेकर आये हैं।

नीला : उनसे कैसे भेंट हो सकती है ?

कपूर : टेलीफोन डायरेक्टरी में उनका नम्बर और पता है। आप टेलीफोन पर समय नियत कर लें। मैं भी उन्हें फोन कर दूँगा।

नीला : थैंक यू वेरी मछ, मि कपूर। मैं डाक्टर से जरूर भेंट करूँगी। शायद कुछ हो जाय।

कपूर : जरूर होगा, मिस नीला। विश यू द बेस्ट आफ लक।

[३]

स्थान : डा० भाटिया का क्लिनिक।

समय : सुबह नौ बजे।

नीला : यू आर डा० भाटिया, मैं हूँ मिस नीला।

भाटिया : ओ येस। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

नीला : डाक्टर, मैं एक डांसर हूँ।

भाटिया : मैंने आपके बारे में काफी कुछ सुना है। आप अपने चेहरे का प्लास्टिक ट्रीटमेंट कराना चाहती है ?

नीला : जी हाँ, क्या ये झुर्रियाँ मिटाई जा सकती है।

भाटिया : ये तो बहुत मामूली बात है, मिस नीला। विज्ञान बहुत आगे जा चुका है। अब तो हृदय, आँख, सभी अंग—यहाँ तक कि पूरा चेहरा बदला जा सकता है।

नीला : चेहरा बदला जा सकता है। यह आप क्या कह रहे है, डाक्टर ?

भाटिया : येस, मिस नीला; चेहरों की बदलना अब बिलकुल सम्भव हो गया है। सिर्फ एक दिक्कत है। इसके लिये आसानी से डोनर नहीं मिलते।

नीला : अगर डोनर मिल जाय तो ?

भाटिया : तब कोई दिक्कत नहीं है। अगर कोई खूबसूरत लड़की अपना चेहरा डोनेट कर दे तो मैं उसे आपके ऊपर सेट कर दूँगा।

नीला : लेकिन उस लड़की का क्या होगा ?

भाटिया : कुछ नहीं होगा। उस पर आपका चेहरा लग जायगा।

नीला : आप जो कुछ कह रहे हैं, क्या यह सब सच है ?

भाटिया : आप विश्वास नहीं करती ! आप किसी डोनर को ले आयें, फिर प्लास्टिक सर्जरी का जादू देखिये।

नीला : पता नहीं अपना चेहरा कौन देना चाहेगा।

भाटिया : लोग रुपये के लिए अपनी लड़कियों को बेच देते हैं। क्या वे उनके चेहरों को नहीं बेच सकते !

नीला : पता नहीं। मैं इस बात को कभी सोचीं नहीं थी।

भाटिया : आप एक डांसर हैं। एक डांसर के पास एक खूबसूरत चेहरा जरूरी है।

नीला : मैं एक खूबसूरत डांसर बनने से पहले एक खूबसूरत औरत बनना चाहती हूँ।

भाटिया : मैं आपकी बात समझ रहा हूँ। शादी के लिये भी चेहरे का आकर्षण बहुत जरूरी है।

नीला : काश यह सब कुछ हो सकता। मेरे बीते हुए दिन लौट आते।

भाटिया : बीते हुए दिनों को नहीं लौटाया जा सकता, मिस नीला। हम गये हुए सौन्दर्य को लौटा सकते हैं। आप एक अच्छे डोनर के लिये कोशिश कीजिये।

नीला : ठीक है डाक्टर। मैं आपसे फिर मिलूँगी। नमस्कार !

भाटिया : नमस्कार।

(नीला का प्रस्थान)

[४]

स्थान : मिस नीला का बंगला।

समय : शाम ४ बजे।

शोभा : आपने मुझे बुलाया है, आंटी ?

नीला : हाँ शोभा; माँ की अब कैसी तबीयत है ?

शोभा : वैसी ही है। माँ को अब हम नहीं बचा सकेंगे।

नीला : ऐसा क्यों कहती हो।

शोभा : माँ को तपेदिक है। इलाज और फल-फूल के लिये बहुत रुपया चाहिये।

नीला : कुछ रुपया चाहिये, शोभा ?

शोभा : बार-बार माँगते बहुत शर्म आती है आंटी। फिर भी कुछ रुपये दे दो। कम से कम पेट के गढ़ो को तो भरना ही पड़ेगा।

नीला : बहुत परेशान लगती हो।

शोभा : क्या कहूँ आंटी, मुझे तो मौत भी नहीं आती। मैंने तो कितनी बार सोचा कि आत्महत्या कर लूँ पर माँ और छोटे भाइयों की बात सोच-कर रुक गयी।

नीला : मैं तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ।

शोभा : आपने बहुत किया है। आपकी मदद के बिना हम कभी मर-खप गये होते।

नीला : मैं तुम्हारे सभी दुख दूर कर देना चाहती हूँ। सोचती हूँ कि एक लाख रुपये तुम्हारे नाम बैंक में रख दूँ।

शोभा : एक लाख रुपये। यह आप क्या कह रही हैं, आंटी ?

नीला : ठीक कह रही हूँ। मैं तुम्हारा दुःख नहीं देख सकती।

शोभा : नहीं, आंटी, नहीं ! मुझसे ऐसा मजाक मत कीजिये। मैं इतना बड़ा मजाक नहीं झेल सकती।

नीला : तुम समझती हो कि मैं मजाक कर रही हूँ।

शोभा : नहीं-नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है। मुझे माफ करो आंटी ! मैं बहुत दुखी हूँ ! मेरी जबान मेरे काबू में नहीं है।

नीला : सुनो शोभा, मैं तुम्हें सचमुच एक लाख रुपया देने को तैयार हूँ।

शोभा : लेकिन आंटी आपने पहिले ही बहुत उपकार किये हैं। मैं इन एहसानों को कैसे चुकाउँगी !

नीला : मैं भी तुमसे एक चीज चाहती हूँ।

शोभा : बोलिये आँटी, मैं आपके लिये जान भी दे सकती हूँ।

नीला : सुनो शोभा, मैं एक नर्तकी हूँ। मैं अभी कला की सेवा करना चाहती हूँ। मुझे तुम्हारा सुन्दर चेहरा चाहिये।

शोभा : माँ, मुझे जीते जी कभी नर्तकी नहीं बनने देगी।

नीला : तुम्हें नर्तकी नहीं बनना पड़ेगा। कुछ आपरेशनों के द्वारा हमारा चेहरा बदल दिया जायगा। मेरा चेहरा तुम्हारा हो जायगा और तुम्हारा चेहरा मुझ पर सेट कर दिया जायगा।

शोभा : चेहरा बदल दिया जायगा !

नीला : हां, इसकी एवज में मैं तुम्हें एक लाख रुपये दूँगी।

शोभा : मुझे आपका प्रस्ताव मंजूर है। मैं इस आपरेशन के लिए तैयार हूँ।

नीला : जरा अच्छी तरह सोच लो।

शोभा : इसमें सोचना क्या है ! मैं इस सुन्दर चेहरे को लेकर क्या करूँ—न खाने को अन्न, न पहिनने को कपड़े। मैं तो जनम से केवल दुःख ही दुःख जानती हूँ।

नीला : इस रुपये से तुम्हारे सभी दुःख कट जायेंगे।

शोभा : एक लाख बहुत होता है, आंटी। मैंने तो कभी एक साथ सौ रुपये भी नहीं देखे हैं। मैं अब और सब्र नहीं कर सकती। मुझसे यह गरीबी और नहीं झेली जाती।

नीला : एक बार माँ से भी पूछ लो शोभा !

शोभा : कोई जरूरत नहीं है। माँ अपनी बीमारी से बेहद ऊबी हुई है। वह कभी इनकार नहीं करेगी।

नीला : तब यही तय रहा।

शोभा : इस बात की अब मत सोचो आंटी। मुझे डर है कि कहीं तुम बदल न जाओ। फिर मुझे यह रुपया नहीं मिलेगा। इन रुपयों से मैं माँ का इलाज करूँगी''''छोटे भाइयों का ठीक से पालन-पोषण करूँगी'''फिर धीरे-धीरे सब कुछ बदल जायगा''''''धीरे-धीरे सब कुछ बदल जायगा....।

[५]

स्थान : प्रिंस होटल

समय : संध्या सात बजे

कपूर : आपका परिचय ?

नीला : आपने नहीं पहचाना ! मैं हूँ नीला !

कपूर : नीला !

नीला : मैं हूँ मिस नीला द डांसर !

कपूर : मिस नीला ! लेकिन यह कैसे हो सकता है !

नीला : यह विज्ञान का चमत्कार है । मैंने एक लड़की से अपना चेहरा बदल लिया हैं ।

कपूर : वेरी स्ट्रेंज ! इट इज जस्ट ए मिरैकिल ! ए मिरैकिल !

नीला : हाँ मिस्टर कपूर, यह एक मिरैकिल है ।

कपूर : कांग्रेचुलेरांस मिस नीला ! इस आपरेशन से आपका पूरा व्यक्तित्व बदल गया है ! कितना ताजा और जानदार !

नीला : सब ईश्वर की कृपा है !

कपूर : आप आज एक प्रोग्राम लेंगी, मिस नीला ! इंदरपुर स्टेट के कुमार प्रशांत अपनी माँ के साथ हमारे मेहमान हैं । हम उनके स्वागत में आज एक स्पेशल प्रोग्राम दे रहे हैं ।

नीला : लेकिन मिस्टर कपूर…

कपूर : नो, अब लेकिन-वेकिन कुछ नहीं । यह देखिये वे लोग आ ही गये ।

(कुमार प्रशांत और उनकी माँ का प्रवेश)

कपूर : हलो मि० कुमार, कम ऐंड मीट मिस नीला, देश की मशहूर डांसर । और मिस नीला ये हैं कुमार प्रशांत, इंदरपुर स्टेट के राजकुमार और उनकी माता जी ।

नीला : नमस्कार !

कुमार और महारानी : नमस्कार !

कुमार : बहुत दिनों से आपका नाम सुन रहा था। मीटिंग यू इज ए प्लेजेंट सर्प्राइज !

नीला : मैं क्या हूँ—जस्ट ए डांसर !

कुमार : ऐसा मत कहिये मिस नीला। मैंने अखबारों में आपके बारे में बहुत कुछ पढ़ा है।

महारानी : सुनो कुमार !

कुमार : येस ममी !

महारानी : मैं ठीक फील नहीं कर रही हूँ। ड्राइव के लिये नहीं जा सकूँगी।

कुमार : डाक्टर बुलवा दूँ ममी ?

महारानी : कोई जरूरत नहीं है। थोड़ा आराम करूँगी, ठीक हो जाऊँगी।

कुमार : ठीक है ममी।

(महारानी का प्रस्थान)

कुमार : आप थोड़ा ड्राइव के लिये चलेंगी, मिस नीला ?

नीला : ड्राइव ! किधर जायेंगे ?

कुमार : कुछ नहीं, योहीं थोड़ा इधर-उधर।

नीला : शाम को मेरा प्रोग्राम है।

कुमार : हम ठीक टाइम पर पहुँच जायेंगे। चलिये मिस नीला !

नीला : चलिये।

(दोनों मोटर पर जाकर बैठते हैं। मोटर चलने की आवाज)

कुमार : अखबारों में पढ़कर आपके बारे में मन में एक तस्वीर बनी थी। पर आप तो उससे बहुत सुन्दर हैं।

नीला : आप तो शर्मिन्दा करते हैं, मि० कुमार !

कुमार : यू आर ए ग्रेट पर्सनलिटी, मिस नीला ! वेरी ग्रेट।

नीला : जो कुछ चमकता है, सब सोना नहीं होता, मि० कुमार !

कुमार : बात बिलकुल उलटी है, मिस नीला। कोयल अपनी वाणी की अनुगूंज नहीं सुन पाती; फूल अपनी सुगंध को नहीं सूँघ सकता; चमकीला सोना भी अपनी चमक से बिलकुल अपरिचित होता है…

नीला : आप तो कविता करने लगे, मि० कुमार !

कुमार : हरेक हृदय में एक पत्थर की शिला होती है। किसी का स्पर्श पाकर वह शिला पिघलने लगती है और एक खूबसूरत अहिल्या का जन्म होता है।

नीला : मि० कुमार !

कुमार : हम शब्दों के माध्यम से अपनी भावनाओं को पहचानते हैं पर जब आकांक्षाओं से सीधा साक्षात्कार होता है तो सभी शब्द झूठे पड़ जाते हैं, हमारी वाणी थम जाती है।

नीला : आप मूक नहीं हैं मि० कुमार।

कुमार : आप ठीक ही कहती हैं, मिस नीला पर जो कुछ कहना चाहता हूँ, नहीं कह पा रहा हूँ।

नीला : हम अब वापस चलें, मि० कुमार ! शाम को प्रोग्राम है। मि० कपूर बहुत नाराज होंगे।

कुमार : आपने कुछ नहीं कहा, मिस नीला ?

नीला : कहने-सुनने के लिये बहुत समय है। चलिये चलें।

कुमार : चलिये।

(कुमार और नीला का प्रस्थान)

[६]

स्थान : प्रिंस होटल।

समय : संध्या आठ बजे।

(स्टेज पर मिस नीला का नृत्य। तबला और घुंघरुओं का सम्मिलित स्वर। नृत्य के समापन पर तालियों की गड़गड़ाहट)

महारानी : मिस नीला इज ए ग्रेट आर्टिस्ट।

कुमार : येस ममी, शी इज रियली ग्रेट !

महारानी : अच्छा कुमार मैं कमरे में जा रही हूँ। थोड़ा रेस्ट करूँगी।

कुमार : तुम चलो ममी, मैं मिस नीला को कांग्रैचुलेट करके आता हूँ।

महारानी : ठीक है जाओ।

(महारानी का प्रस्थान। कुमार ग्रीन रूम के द्वार पर थपकी देता है।)

नीला : कौन ?

कुमार : मैं हूँ कुमार।

(नीला द्वार खोलती है।)

नीला : आइये मि० कुमार !

कुमार : आपके नृत्य की प्रशंसा के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। आप सचमुच सौन्दर्य और कला की देवी हैं।

नीला : यह आपकी कलाप्रियता है, कुमार; वर्ना मैं क्या हूँ।

कुमार : मैं अब और औपचारिकता नहीं बरत सकता, नीला ! तुम अपने को नहीं पहचानती हो पर मैं अपनी भावनाओं को पहचान गया हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सृष्टि के किसी पुरुष ने किसी स्त्री से इतना प्यार नहीं किया होगा।

नीला : लेकिन मि० कुमार, हमको मिले अभी कुछ घंटे ही हुए हैं !

कुमार : यह एक दिन का प्यार नहीं है नीला। इसके पीछे कई जन्मों का संस्कार है। दो आत्माएँ न जाने कितने दिनों से भटक रही थीं। मैंने तुम्हें देखते ही पहचान लिया था।

नीला : लेकिन मि० कुमार····

कुमार : नहीं नीला, मैं अब और बरदाश्त नहीं कर सकता। चलो हम चलें, हिमालय की ओट में····सात समुद्रों के पार····किसी भी देश में····किसी भी शहर में दुनिया की सभी भीड़ों से परे····बस हम दोनों !

नीला : लेकिन मि० कुमार आप तो मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानते !

कुमार : जितना जानना जरूरी है, जानता हूँ। हमारे-तुम्हारे बीच एक वर्तमान है, ये सुलगते हुए क्षण जीने के लिये काफी हैं !

नीला : इतनी भी जल्दी क्या है, मि० कुमार !

कुमार : तुम्हें मेरी भावनाओं का भरोसा नहीं है, नीला ? तो चलो हम अभी कचहरी चले और विवाह की औपचारिकता पूरी कर लें। तुम चाहो तो परम्परा के अनुसार भी प्रबन्ध हो सकता है—फूलों वाला मंडप और शहनाइयों की गूँज !

नीला : नही, मेरा यह मतलब नहीं था।

कुमार : फिर तुम्हें किस बात की हिचक हैं ?

नीला : मुझे थोड़ा सोचने दो, मि० कुमार !

कुमार : तुमने जंगल की आग देखी है, नीला ? कैसे और कब शुरू होती है, कोई नहीं जानता। पर शुरू होने पर उसे कोई नहीं बुझा सकता। मैं ऐसी ही आग में सुलग रहा हूँ।

नीला : आगे बढ़ने के पहले एक दूसरे का परिचय जरूरी है, मि० कुमार !

कुमार : तुम जिसे परिचय कहती हो, वह सच्चा परिचय नहीं है। प्रेम सबको बदल देता है। सबको नया रूप देता है।

नीला : मुझे थोड़ा समय दो, मि० कुमार !

कुमार : मैं प्रतीक्षा का दुख उठा सकता हूँ पर अनिश्चय की यन्त्रणा नहीं झेल सकता। तुम 'हा' कह दो, नीला; मैं तुम्हारे लिये इंतजार कर लूँगा।

नीला : दबाव मत दो, मि० कुमार !

कुमार : यह प्यार का आग्रह है।

नीला : नहीं आज जवाब मत मांगो। मुझे सोचने दो। अपनी भावनाओं को पहचानने दो।

कुमार : लेकिन नीला····

नीला : जाओ, मि० कुमार। बहुत रात हो गयी है। फिर किसी दिन हम इस समस्या पर विचार करेंगे। कोई हल ढूँढ़ेंगे।

(कुमार का प्रस्थान)

[७]

स्थान : मिस नीला का बंगला।

समय : सुबह आठ बजे।

(दरवाजे पर बिजली की घंटी)

नीला : देखो बानू, दरवाजे पर कौन है ?

बानू : इंदरपुर स्टेट जी महारानी कई दिन से आ रही हैं। वही होंगी !

नीला : ठीक है, उन्हें ड्राइंग रूम में बैठाओ।

('बानू का प्रस्थान। नीला ड्राइंग रूम में जाती है। महारानी का प्रवेश)

नीला : आइये रानी साहिबा, नमस्कार !

महारानी : नमस्कार ! मैं इधर कई दिन तुम्हारे घर आई पर तुमसे भेंट नहीं हो सकी। कोई नहीं कह सका कि तुम कहाँ गयी हो !

नीला : जी, मैं शहर के बाहर गयी थी।

महारानी : मैं भी बहुत दुनिया देखी हूँ पर तुम्हारे जैसी पत्थर दिल औरत नहीं देखी।

नीला : रानी साहिबा !

महारानी : तुमने मेरे लड़के को जिन्दगी और मौत के बीच लटका दिया है। तुम उसकी जिन्दगी के साथ खेल रही हो !

नीला : इसमें मेरा क्या कुसूर है ?

महारानी : मेरे भोले से लड़के को अपने जाल में फँसा कर अब अपना कुसूर पूछती हो। ऊपर से इतनी मासूम पर भीतर इतना जहर !

नीला : आप मेरा अपमान कर रही हैं, रानी साहिबा !

महारानी : मैं तुमसे साफ-साफ बात कहना चाहती हूँ। बोलो तुम्हें क्या चाहिये— रूपये की थैली, हीरे का हार, जगह-जायदाद-कोठी ! अपनी कीमत बोलो !

नीला : मुझे यह सब कुछ नहीं चाहिये। ईश्वर ने मुझे सब कुछ दिया है।

महारानी : तब क्या तुम अपने इतिहास से डरती हो ?

नीला : आपका मतलब ?

महारानी : तुम्हारे जैसी नाचने वाली लड़कियों को न जाने कितनी गंदी गलियों से गुजरना पड़ता है। पर मेरे लड़के ने तुम्हें पसंद किया है। हम उस इतिहास को कभी नहीं छुऐंगे।

नीला : रानी साहिबा !

महारानी : कुमार ने तुमसे शादी का वादा किया है। मैंने भी इसे स्वीकार कर लिया है। अब तुमको क्या दिक्कत है ?

नीला : मुझे सोचने दीजिये, रानी साहिबा।

महारानी : क्या तुम मेरे बेटे की मौत तक सोचती रहोगी। तुम्हारे टाल-मटोल ने उसे बहुत मायूस कर दिया है। वह किसी समय आत्महत्या कर सकता है।

नीला : मुझे कुमार के लिये दुख है। मुझे एक दिन का और समय दीजिये।

महारानी : तुम आज नहीं तय कर सकती, मिस नीला ?

नीला : नहीं रानी साहिबा, बस एक दिन और। मैं कल तक कुछ तय कर लूँगी।

महारानी : ठीक है, मैं आज जा रही हूँ। कल आऊँगी।

नीला : अच्छा नमस्कार !

महारानी : नमस्कार !

(महारानी का प्रस्थान। बानू का प्रवेश)

बानू : मेम साहब !

नीला : क्या है बानू ?

बानू : रानी साहिबा चली गयीं ?

नीला : हाँ बानू।

बानू : आपने उनसे क्या कहा ?

नीला : मैंने उनसे कल तक के लिये समय माँगा है।

बानू : कल क्या कहोगी ?

नीला : अभी तक तय नहीं किया है।

बानू : मेम साहब अगर तुमने आज नहीं तय किया तो जिन्दगी भर सोचती रह जाओगी।

नीला : बानू।

बानू : मैंने कुमार को देखा है। ऐसा बाँका नवजवान बड़े भाग से दिखाई पड़ता है। फिर इतना बड़ा राज-पाट; तुम्हें और क्या चाहिये, मेम साहब ?

नीला : कुमार में कोई कमी नहीं है, बानू। कमी मुझमें है।

बानू : आप ऐसा क्यों सोचती हैं, मेम साहब ?

नीला : कुमार मुझसे कम से कम बीस साल छोटा है। उसे जिस दिन यह सच्चाई मालूम होगी, उस दिन क्या होगा ?

बानू : यह सारा डर बेकार है, मेम साहब। कुमार ने स्वयं शादी का पैगाम दिया है। इसमें आपकी क्या गलती है।

नीला : नहीं बानू, मेरे चेहरे ने उसे धोखे में डाल दिया है। कुमार मुझे कभी माफ नहीं करेगा।

बानू : यह सब मत सोचिये, मेम साहब ! कुमार बहुत भले आदमी हैं। एक बार जिम्मेवारी उठाकर पीछे नहीं हटेंगे।

नीला : यह बहुत बड़ी ज्यादती होगी, बानू !

बानू : ऐसा मौका फिर नहीं आयेगा, मेम साहब ! राजा इँदर को दरवाजे से मत लौटा दो।

नीला : यह मुझसे नहीं होगा, बानू !

बानू : ऐसा भी क्या है !

नीला : सुनो बानू मैंने चेहरा बदल लिया है पर उमर नहीं बदल सकी। मन नहीं बदला।

बानू : आप कहना क्या चाहती हैं ?

नीला : पता नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं बीस साल की लड़की का स्वांग नहीं कर सकती। कुमार को देखती हूँ तो मुझमें प्रेम का संचार नहीं

होता। उसे देखकर मेरे मन में ममता उमड़ती है—माँ की ममता, बड़ी बहन का स्नेह। मैंने बहुत कोशिश की पर जो नहीं हो सकता था, नहीं हुआ!

बानू : मेम साहब!

नीला : मैं जरा बाहर जा रही हूँ। शायद लौटने में देर हो जाय।

(नीला का प्रस्थान)

[८]

स्थान : शोभा का घर।

समय : सुबह दस बजे।

नीला : शोभा!

शोभा : कौन?

नीला : मैं हूँ नीला, तुम्हारी आंटी।

(शोभा का प्रवेश)

शोभा : (चीख कर) आ गई तू फिर! डाइन! चुड़ैल! मेरी सुख-शांति पर डाका डालने आ गई! नीच! पापिन!

नीला : शोभा, पागल हो गयी हो!

शोभा : हाँ, मैं पागल हूँ, बिलकुल पागल (अट्टाहास) मुझे लूट कर तू तो खुश है न! लेकिन मैं तुझे चैन से नहीं रहने दूँगी। अपनी मौत के बाद भी तुझे नहीं छोड़ूँगी! अपना सारा जहर तुझमें उड़ेल कर हसूँगी (अट्टाहास)

नीला : शोभा! मैं हूँ, तुम्हारी आंटी नीला!

शोभा : क्यों आई है तू! मुझे बरबाद करके भी तेरा पेट नहीं भरा! अब तू और क्या चाहती है?

नीला : मैं तुमसे माफी माँगने आई हूँ। मुझे माफ कर दो शोभा, मुझे माफ कर दो।

शोभा : तुम मुझसे माफी माँग रही हो, आंटी?

नीला : मुझसे बहुत गलती हुई, शोभा! मुझे माफ कर दो!

शोभा : तुम्हारी इस माफी से क्या होगा ! मैं तो बिलकुल बरबाद हो गयी !

नीला : मुझे बहुत दुख है, शोभा !

शोभा : आंटी, तुम नहीं जानती कि तुमने मुझे कितना दुख दिया है । मैं गरीब थी । मेरे पास खाने को नहीं था । मेरे पास पहिनने को कपड़े नहीं थे । पर मेरे पास सपने थे । एक लाख रुपये में तुमने मेरे सभी सपनों को खरीद लिया । मैं इतनी गरीब कभी नहीं थी ।

नीला : मैंने इतना विचार नहीं किया था, शोभा !

शोभा : चेहरा बदल जाने से मेरा प्रेमी मुझे नहीं पहचानता है । मैंने उससे कितनी बार कहा कि मैं शोभा हूँ, तुम्हारी शोभा, पर वह बिलकुल बदल गया है । मुझे तो ऐसे देखता है जैसे भूत को देख रहा हो !

नीला : मेरे कारण तुमको बहुत दुख उठाना पड़ा ।

शोभा : मैं मर जाउँगी आंटी ! मैं बिलकुल जीना नहीं चाहती । खाने के बिना, कपड़े के बिना जीना सम्भव है लेकिन प्रेम के बिना कैसे जिया जा सकता है ।

नीला : हाँ शोभा, प्रेम के बिना जीना कितना मुश्किल है !

शोभा : आंटी !

नीला : मैं तुम्हारा चेहरा लौटा दूँगी, शोभा !

शोभा : यह क्या कह रही हो आंटी !

नीला : हाँ शोभा, मैं तुम्हारा चेहरा लौटा दूँगी ।

शोभा : लेकिन मैंने तुम्हारे बहुत से रुपये खर्च कर दिये हैं । पर मैं उन्हें लौटा दूँगी । नौकरी कर पाई-पाई अदा कर दूँगी ।

नीला : तुम्हे कुछ लौटाना नहीं पड़ेगा, शोभा । मैं तुम्हारा चेहरा वापस कर रही हूँ । तुम अपने प्रेमी से विवाह कर लो । यह एक लाख रुपया तुम्हारे विवाह का उपहार है ।

शोभा : आंटी ऽ ऽ ऽ !

(पटाक्षेप)

□□

मेरा नाम मथुरा है ।

(एक सामाजिक एकांकी)

(अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता, डेहरी में सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार)

पात्र-परिचय

	आयु
१. मुंशी प्रेमचन्द	५५ वर्ष
२. प्रो० चन्द्रा	३० ,,
३. होरी	६० ,,
४. गोबर	२५ ,,
५. धनिया	५५ ,,
६. झुनिया	२२ ,,
७. सोमारू	५० ,,
८. रतन लाल	५५ ,,
९. रिक्शेवाला	४० ,,

मेरा नाम मथुरा है।

स्थान : नगर के बाहर एक मार्ग।

समय : अपराह्न तीन बजे।

(प्रो० चंद्रा का प्रवेश)

चंद्रा : गुड, यह जगह ठीक है। एक तरफ शहर के पौश मुहल्ले, दूसरी तरफ गरीबीं की निचली बस्ती। उसके बाद खेत और गाँव। प्रेमचन्द का साहित्य ऐसे ही चौराहे का साहित्य है। फील्डवर्क के लिये बिलकुल आइडियल जगह है।

ओ रिक्शेवाले, यहाँ सामान पहुँचा दो।

(रिक्शेवाले का प्रवेश)

रिक्शेवाला : ठीक है, हुजूर !

चन्द्रा : क्या जमाना। आ गया ! पहले लोग लाइब्रेरी में बैठकर थीसिस पूरी कर लेते थे। अब तो शहर में जाइये, गाँवों में घूमिये और इण्टरव्यू लीजिये।

(दो कुर्सिया और एक टेबुल लेकर रिक्शेवाला का प्रवेश)

रिक्शेवाला : कहाँ रख दूँ, हुजूर !

चन्द्रा : देखो, उस पेड़ के नीचे लगा दो।

चंद्रा : ठीक है, मुझे तुमसे कुछ सवाल पूछना है। प्रेमचन्द को जानते हो ?

रिक्शेवाला : नहीं हुजूर, इस बस्ती में प्रेमचन्द नाम का कोई आदमी नहीं है।

चन्द्रा : अजब जाहिल हो। मैं उपन्यासकार प्रेमचन्द के बारे में पूछ रहा हूँ। उनकी जन्म शताब्दी पूरे देश में मनायी जा रही है।

रिक्शेवाला : सरकार, हमको छोड़ दीजिये; यही तो कमाई का समय है।

चन्द्रा : ठीक है, लो पैसे।

(चंद्रा रिक्शेवाले को पैसा देता है)

(रिक्शेवाले का प्रस्थान)

चन्द्रा : देखिए यही है आम आदमी । इसे प्रेमचन्द में कितनी दिलचस्पी है । कहता है : हुजूर, यहाँ प्रेमचन्द नहीं रहते । ईडियट !

(रतन लाल का प्रवेश)

रतन लाल : अजब हाल है । सरकार ने यहाँ भी चुंगी चौकी बैठा दी । सेठ साहुकार तो पैसा देकर निकल जायेंगे । बेचारे गरीब गाँव के आदमी तंग किये जायेंगे ।

चन्द्रा : ए भाई साहब, जरा ठहरिये ।

रतनलाल : सुनिये मेरे पास चुंगी का सामान नहीं है । बाजार में दस पैसे का नमक लेने जा रहा हूँ ।

चन्द्रा : क्षमा करेंगे मैं चुंगी का मुंशी नहीं हूँ । प्रेमचन्द पर रिसर्च कर रहा हूँ । विषय है "प्रेमचन्द का साहित्य और आम आदमी" । आपसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ ।

रतनलाल : चूल्हे पर दाल चढ़ाकर आया हूँ । पूछिये क्या पूछना है !

चन्द्रा : आपका शुभ नाम ?

रतनलाल : जी मुझे रतनलाल कहते हैं । एक वकील के यहाँ क्लर्क हूँ ।

चन्द्रा : महीने में कितना कमा लेते हैं ?

रतनलाल : कमाई क्या है ? आपने रोटी के लिए कुत्तों को लड़ते देखा है ? कचहरी में हमलोग यही करते हैं । फिर भी रोटी कहाँ मिलती है !

चन्द्रा : हाँ रतनलाल जी, आपने प्रेमचन्द के साहित्य को पढ़ा होगा । आप उनके बारे में क्या सोचते है ?

रतनलाल : जी, स्टूडेंट लाइफ में प्रेमचन्द को पढ़ा था । गरीबों के मसीहा थे । कबीर के बाद प्रेमचन्द ने ही गरीबों के दर्द को समझा था । (नेपथ्य से) माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहिं; एक दिन ऐसा आयेगा मैं रौंदूँगी तोहिं ।

(फगुनी चमार का प्रवेश)

फगुनी : माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहि। एक दिन ऐसा आयेगा मैं रौदूँगी तोहि ॥

चन्द्रा : यह पागल कौन है ?

रतनलाल : अपने गाँव का फगुनी चमार है। जमींदार ने इसकी जमीन छीन ली है, इसी दुख से पागल हो गया है।

फगुनी (अट्टाहास करता है)

धरती को रौंद रहे हो। धरती के पुत्रों का शोषण करते हो। एक दिन धरती करवट लेगी। आसमान टूट-टूट कर गिरेगा; ये ऊँची-ऊँची हवेलियाँ ताश के पत्तो जैसी बिखर जायेंगी। धरती सबको निगल जायेगी ! धरती सबको निगल जायेगी।

(चन्द्रा की ओर देखकर)

कौन है यह ?

रतनलाल : ये परदेसी बाबू है ?

फगुनी : ये परदेसी है। हाँ-हाँ ये परदेसी है ! हम सब परदेसी है ?

तब यह देश किसका है ?

हाँ-हाँ बोलिये ? ये देश किसका है !

हाँ हाँ समझ गया—यह देश जमींदार का है !

यह देश मुट्टन का है।

(अट्टाहास करते हुए प्रस्थान)

रतनलाल : बड़ा समझदार आदमी था। लेकिन जमीन के दुख ने तोड़ दिया।

चन्द्रा : हाँ, मैं आपसे प्रेमचन्द के बारे में पूछ रहा था। आप उन्हें सुधारवादी समझते हैं या क्रांतिकारी ?

रतनलाल : सर, इतना पढ़ा लिखा नहीं हूँ कि आपसे बहस कर सकूँ। चूल्हे पर दाल चढ़ा कर आया हूँ। जा रहा हूँ।

(रतनलाल का प्रस्थान)

(मुन्शी प्रेमचन्द का प्रवेश)

प्रेमचन्द : सुनिये भाई साहब, यहाँ से विक्रमपुर कितनी दूर है।

चन्द्रा : बहुत पास है। देखिये, वो सामने निचली बस्ती दिखाई पड़ रही है। उसके पीछे विक्रमपुर है।

प्रेमचन्द : धन्यवाद, चीजे इतनी बदल गयी है कि गाँव का रास्ता पूछना पड़ रहा है।

चन्द्रा : आप बहुत दिनों के बाद आये हैं ?

प्रेमचन्द : जी, ऐसा ही समझिये। एक लम्बा अरसा बीत गया।

चन्द्रा : भाई साहब, आपका थोड़ा समय लूँगा।

प्रेमचन्द : फरमाइए, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ।

चन्द्रा : कुछ सवाल पूछने हैं। आप प्रेमचन्द को जानते ही होंगे।

प्रेमचन्द : प्रेमचन्द ! आप किस प्रेमचन्द की बात पूछ रहे हैं ?

चन्द्रा : मेरा मतलब उपन्यासकार प्रेमचन्द से है। आपने उनका साहित्य पढ़ा ही होगा ?

प्रेमचन्द : आपको प्रेमचन्द में क्या दिलचस्पी है ?

चन्द्रा : जी, मैं प्रेमचन्द पर रिसर्च कर रहा हूँ।

प्रेमचन्द : यह तो बड़ा बाजारू तरीका है। जनाब, प्रेमचन्द के अदब को यो सरे-बजार नीलाम न कीजिए !

चन्द्रा : आप नहीं जानते। यही आधुनिक तरीका है। इसे फील्ड-वर्क कहते हैं।

प्रेमचन्द : वाह साहब वाह, यह भी कोई तरीका है। अगर अदबकार को इज्जत नहीं दे सकते तो कम से कम थुक्का-फजीहत तो न कोजिये।

चन्द्रा : आप बिना वजह आग-बबूला हो रहे हैं। अगर आपको प्रेमचन्द में दिलचस्पी नहीं है तो आप तशरीफ ले जा सकते हैं।

प्रेमचन्द : वाह जी वाह, प्रेमचन्द में मुझे दिलचस्पी नहीं होगी तो किसे होगी।

चन्द्रा : (एकालाप) पूरा क्रैक लगता है। दिमाग खिसक गया है। तो जनाब, आपको प्रेमचन्द में कितनी दिलचस्पी है ?

प्रेमचन्द : आप सचमुच जानना चाहते है ? जनाब प्रोफेसर साहब, मैं ही प्रेम-चन्द हूँ।

चन्द्रा : प्रेमचन्द ! लेकिन यह कैसे हो सकता है ।

प्रेमचन्द : बिरादर, यही हुआ है । वहाँ लोगों ने कहा, भाई प्रेमचन्द, तुम्हारी जनम शताब्दी मनायी जा रही है । सोचा देखूँ क्या शगल है ।

चन्द्रा : (एकालाप) शक्ल तो वही है । लेकिन माई गाड ! ऐसा तो कभी नहीं सुना !

प्रेमचन्द : जी, आपने कुछ कहा ? लगता है आप बहुत डर रहे हैं ।

चन्द्रा : अरे नहीं-नहीं, डर की क्या बात है । हाँ मुन्शी जो तो आप जन्म शताब्दी के मजे लूटने आये हैं ?

प्रेमचन्द : अपनी तारीफ सुनने की इतनी ख्वाहिश नहीं है । विक्रमपुर में बैठ कर मैंने गोदान लिखा था । देखने आया हूँ कि गोदान के गाँव की अब क्या हालत है ।

चन्द्रा : आपने विक्रमपुर में बैठकर गोदान लिखा है ? माई गौड, यह तो जबरदस्त बात है ! ठहरिये जरा मुझे नोट करने दीदिये ।

प्रेमचन्द : लगभग पचास वर्ष बीत गये ! उस समय हम सभी ने मुल्क के बारे में कितने रंगीन ख्वाब देखे थे । पता नहीं ख्वाब और हकीकत में अब कितनी दूरी है ।

चन्द्रा : अगर आप मुझे समय देते तो मैं आपका इंटरव्यू ले लेता ।

प्रेमचन्द : कैसा इंटरव्यू ?

चन्द्रा : बहुह से सवाल हैं । लोगों ने आपके साहित्य के बारे में खूब पतंगबाजी की है । सही बात तो आप ही कह सकते हैं ।

प्रेमचन्द : देखिये बिरादर, मुझे कोई एतराज नहीं है । लेकिन मेरे साथ होरी और उसका परिवार आया है ।

चन्द्रा : होरी और उसका परिवार ! यह आप क्या कह रहे हैं ।

प्रेमचन्द : हाँ, आते समय होरी बोला, कि मुंशी जी विक्रमपुर जा रहे हो तो हम भी चलेंगे । जबरदस्ती साथ लग गया ।

चन्द्रा : क्या होरी रीयल लाइफ का आदमी था ?

प्रेमचन्द । तब आपने क्या रिसर्च किया है । जनाब, मैंने रीयल लाइफ के किस्से लिखे हैं ।

चन्द्रा : माई गौड ! कितनी जबरदस्त बात है ! बड़े से बड़े एक्सपर्ट मुंह फाड़ देंगे । ठहरिये जरा मुझे नोट करने दीजिए ।

प्रेमचन्द : अब तक सबको आ जाना चाहिये । लोगों ने कहा कि दूसरी बस पंद्रह मिनट बाद है ।

(होरी और धनिया का प्रवेश)

प्रेमचन्द : अरे, तुम लोग कहाँ रह गये थे ।

होरी : क्या कहूँ मुंशी जी, बस ने दूसरा रास्ता धर लिया । बीच में विक्रमपुर की पुलिया देखकर सब जिदिया गये । गोबर की माँ को ले आया । लेकिन गोबर और झुनिया गाँव में उतर गये ।

प्रेमचन्द : भई, ऐसी भी क्या जल्दी थी । सब लोग साथ-साथ चलते ।

होरी : क्या कहूँ मुंशी जी, गोबर और झुनिया तो अभी बच्चे हैं । पर ई गोबर की महतारी को देखो । अपना गाँव देखकर मचल गयी ।

धनिया : हम तो मुंशी जी, गाँव का एक चक्कर लगा आये । लेकिन क्या कहूँ, विक्रमपुर तो बिल्कुल बदल गया है ।

होरी : हाँ मुंशी जी । विक्रमपुर में सड़क आ गयी । हम लोग पहले बस पकड़ने दस मील जाते थे । अब तो बस सीधे गाँव आती है ।

धनिया : तुम बस की बात करते हो । अपने गाँव में बिजली भी आ गयी है । हमने अपनी आँख से ठाकुर की हवेली में पंखा चलते देखा है ।

होरी : ठाकुर की हवेली तो बिल्कुल बदल गयी है । बत्तख के पंख सी झकाझक, जैसे राजा का महल हो ।

धनिया : अरे देखे नहीं, खेतों में धकाधक नल चल रहा था । लोग कहते थे कि अब गाँव में पुरवट नहीं चलता । बिजली से पम्प चलता है ।

होरी : क्या कहूँ, गेहूँ का खेत देखकर आँखें जुड़ा गयीं । किसानों का उद्धार हो गया मुंशी जी ।

धनिया : गाँव में कितने पक्के मकान बन गये हैं—एक से एक खबसुरत !

प्रेमचन्द : तुमलोग हरिजन टोली नहीं गये ? वहाँ क्या हाल है ?

धनिया : हमको ई जाने ही नहीं दिये । बोले, चलो मुंसी जी इंतजार कर रहे होंगे ?

प्रेमचंद : गोबर और झुनिया कब तक आयेंगे ?

धनिया : झुनिया अपने मैके जाने के लिए पागल थी । गोबर उसको पहुँचाकर विक्रमपुर जायेगा ।

होरी : अब उसको मैके में कौन मिलेगा ? गाँव की लड़कियाँ अपने-अपने ससुराल होंगी ।

धनिया : लड़की का मायका कभी सूना होता है । लड़की मैके जाकर पेड़-पौधों से मिलती है ।

(गोबर और झुनिया का प्रवेश)

गोबर : दादा, देरी के लिये माफ करना । क्या कहूँ, ई झुनिया मैका जाकर बिल्कुल पगला गयी थी ।

झुनिया : सब हमारा ही दोस है न ? गाँव की मट्टी को माथे कौन लगाया था ? अखाड़े में कौन लोटा था ? आम के पेड़ पर कौन चढ़ा था ?

गोबर : लेकिन मुंशी दादा, अपना गाँव बहुत तरक्की कर गया । सरकार ने वहाँ गेहूँ का फारम बनाया है । क्या कहूँ दादा, गाँव में बंक भी खुल गया है ।

होरी : मुंशी जी, हम सामने की दुकान से मिठाई लेकर आते हैं । गाँव में लड़का-बच्चा है । हाथ पर रखने के लिए कुछ चाहिए न !

प्रेमचंद : ठीक है जाओ !

(होरी और धनिया का प्रस्थान)

प्रेयचंद : सुनो, फगुनी भैया का क्या हाल है ?

गोबर : दादा, फगुनी भैया का हाल ठीक नहीं है । खेत-खलिहान सब बिक गये । अब इधर-उधर पागलों की तरह घूमते हैं ।

प्रेमचंद : गाँव में पुलिस की टुकड़ी जाते देखा था; खैरियत है न ?

गोबर : दादा, जानते हो, गाँव में पुलिस चौकी बन गयी है। पुलिस गारद आती जाती रहती है।

झुनिया : देखो दादा, विक्रमपुर-चक्रमपुर अब ऊ गाँव नहीं रह गये हैं। घर-घर में टरानजिस्टर आ गया है।

प्रेमचंद : सुनकर बहुत खुशी हो रही है। लगता है कि आजादी के सपने पूरे हो गये। गरीबों के दिन फिर रहे हैं।

गोबर : हाँ मुंशी बाबा, गरीबों की रात बीत गयी। भोर का उजाला दिखाई पड़ रहा है।

(दूर से आवाज) होरी खेलें नन्दलाला।

बिरिज में, होरी खेलें नन्दलाला।

झुनिया : दादा, हम गाँव जा रहे हैं। आज रात होलिका दहन है। वह सुनो, लोग फाग गा रहे हैं। गाँव की लड़कियाँ आज रात भर फाग गायेंगी।

गोबर : हाँ दादा, अमराई में नवजवानों की होली भी, जम गयी है। आज पूरी हुड़दंग होगी।

प्रेमचंद : हाँ भाई जाओ। किसी ने कहा है, जहाँ लड़कों का संग, वहाँ बाजे मृदंग। गाँव में ढोलक बज रही है। तुम लोगों को रोकना अन्याय होगा।

झुनिया : दादा, आज रात में इन्तजार मत करना। पूरा रतजगा है।

प्रेमचंद : अच्छा भई जाओ ! देखो इतना मत गाना कि गला खराब हो जाय।

झुनिया : दादा, आज तो जी भर कर गाऊँगी। गला खराब होगा तो गाँव के बुढ़ऊ वैद अभी जिन्दा हैं।

प्रेमचंद : चलो ठीक है। कल शाम तक विक्रमपुर आ जाना। मैं चमारटोली में रहूँगा।

झुनिया : ठीक है दादा, आ जाऊँगी।

(गोबर से) चलो जी।

गोबर : लेकिन मैं तो विक्रमपुर जाऊँगा।

तुम अपने मैके जाओ। मैं अपने मैके जाऊँगा।

झुनिया : वाह जी वाह ! इतने दिनों बाद ससुराल जा रहे हो। सहेलियाँ तुम्हें आने थोड़े ही देंगी। देखना, तुम्हारी क्या गत बनती है !

गोबर : जानती हो, गाँव में पुलिस-चौकी बैठ गयी है। सभी लोगों पर दफा चौवालिस लगवा दूँगा।

झुनिया : बड़े आये दफा चौवालिस वाले। होली के दिन पुलिस नहीं, हमलोगों का कानून चलता है।

गोबर : अच्छा जा रहा हूँ, दादा। कल शाम तक हमलोग गांव पहुँच जायेंगे।

(गोबर और झुनिया का प्रस्थान)

चन्द्रा : सर, मैंने कुछ बातें नोट कर लीं है। आपसे कुछ और सवाल पूछने हैं।

प्रेमचन्द : पूछिये, क्या पूछना चाहते हैं।

चन्द्रा : मेरा मतलब यह है कि आपने गोदान क्यों लिखा। आप कहना क्या चाहते थे ?

प्रेमचन्द : वाह जी वाह, यह खूब रही ! पहले मैं एक उपन्यास लिखूँ फिर लोगों को समझाऊँ कि मैंने उसे क्यों लिखा।

चन्द्रा : अगर आप कुछ टिप्पणी दे देते तो मेरा काम आसान हो जाता।

प्रेमचन्द : वाह, प्रोफेसर साहब; सब कुछ मैं ही करूँगा तो आप रिसर्च क्या करेंगे !

(होरी और धनिया का प्रवेश)

प्रेमचन्द : क्या हुआ होरी भगत, मिठाई ले आए ?

होरी : क्या मिठाई लेंगे मुंसी जी। मिठाई तो बीस रूपया किलो है। अपने समय में बढ़िया से बढ़िया मिठाई रूपये सेर मिलती थी।

प्रेमचन्द : अरे भाई, चीजो की कीमत बढ़ती-घटती रहती है।

होरी : ना मुंसी जी, इतनी मँहगाई में गरीब लोग तो मर जायेंगे।

धनिया : अँधेरा हो रहा है। अब चलना चाहिए।

चन्द्रा : सर, एक दो सवाल और है।

प्रेमचन्द : होरी भगत, तुम तब तक चलो। मैं प्रोफेसर साहब को नाराज नहीं करना चाहता।

होरी : सुन गोबर की माँ, तू चल। हम मुंसी जी के साथ आयेंगे।

धनिया : ठीक है। लेकिन ढेर देर मत करना।

(धनिया का प्रस्थान)

चन्द्रा : मुंशी जी, पचास साल हो गये। आपके साहित्य की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है इसकी क्या वजह है ?

होरी : वजह हमसे पूछो। मुंसी जी सियाही से नहीं, खून से लिखते हैं।

प्रेमचन्द : ठीक कहते हो होरी भगत। बिना खून-पसीने के कोई मजमून बनता है !

(सोमारू का प्रवेश)

सोमारू **(पुकारता है)** कमली ! ओ कमली ! **(सोमारू घूम-घूम कर पुकारता है।)**

सोमारू : पता नहीं कहाँ चली गयी ! कमली ! ओ कमली ! बाबू जी, आप लोगों ने कमली को देखा है ?

होरी : ये कमली कौन है भैया ! तुम्हारी लड़की है ?

सोमारू : नहीं दादा, बकरी है। बड़ी सुन्दर बकरी है।

होरी : इधर उधर देखो भैया ! चरते-चरते कहीं निकल गयी होगी !

प्रेमचन्द : अरे यार बकरी ही ठहरी ! किसी बकरे के पास रोमांस करने निकल गयी होगी।

सोमारू : नहीं बाबू साहब ! अभी तो बच्ची है।

प्रेमचन्द : तुम्हारे पास कितनी बकरियाँ हैं।

सोमारू : ये बकरी अपनी नहीं, मालिक की है।

प्रेमचन्द : ये मालिक कौन हैं ?

सोमारू : आप नहीं जानते ? गाँव के जमींदार मोहन बाबू को सब जानते हैं।

प्रेमचन्द : कहीं चोरी का अंदेशा तो नहीं है ?

सोमारू : हाँ, बाबू जी अक्सर चोरी होती है। आपने किसी मोटर वाले को देखा है ?

प्रेमचन्द : हाँ, थोड़ी देर पहले एक ट्रक गुजरी थी। उस पेड़ के पास रुकी थी।

होरी : लगता है खलासी ने मोटर पर कुछ चढ़ाया था।

सोमारू : जुलुम हो गया ! कमली को मोटर वाले लूट ले गये !

प्रेमचन्द : यह तो दिन-दहाड़े लूट है। नंगई है।

सोमारू : क्या कहूँ बाबू जी, जब से सड़क खुली है, चोरी-चमारी बहुत बढ़ गयी है। बहू-बेटी से छेड़-छाड़ तो आम बात है।

प्रेमचन्द : यह गाँव को शहर की सौगात है। पक्की सड़क की कीमत है।

सोमारू : बाबू जी, मैं तो लुट गया ! बिल्कुल बरबाद हो गया !

प्रेमचन्द : लेकिन यह बकरी तो तुम्हारे मालिक की थी। मालिक से कह देना कि बकरी को मोटर वाले लूट ले गये।

सोमारू : नहीं सरकार, यह सब बेकार है। मुट्टन मुझे रुई सा धुन देगा !

प्रेमचन्द : यह मुट्टन कौन है ?

सोमारू : मालिक का कारिंदा है। भारी लठैत है।

प्रेमचन्द : तुम मालिक से कहना। वे समझ कर माफ कर देंगे।

सोमारू : नहीं सरकार, मुट्टन के खिलाफ कहीं सुनवाई नहीं हैं। बड़ी बेरहमी से मारता है।

प्रेमचन्द : यह तो सरासर जुल्म है ! तुम इस नौकरी को छोड़ दो !

सोमारू : नहीं सरकार, दादा बड़े मालिक से कर्ज लिये थे। मूर-सूद लेकर कई हजार हो गया है।

प्रेमचन्द : यानि कि तुम बंधुआ मजदूर हो। कई पुश्तों से मोहन बाबू की गुलामी कर रहे हो।

सोमारू : गाँव में सरकार ने झोपड़ी के लिये जमीन दी है। मालिक कहते हैं कि जमीन लिख दो, फैक्टरी बैठेगी।

होरी : भैया ई तो ज्यादती है !

सोमारू : मालिक ने फगुआ तक लिखने को कहा है। लगता है कि कुछ बवेला मचेगा।

प्रेमचन्द्र : तुम जमीन क्यों बय करोगे ! सब मिलकर विरोध करो।

सोमारू : नहीं बाबू जी, हम लोग क्या विरोध कर सकते हैं। आज नहीं तो कल मालिक जमीन ले लेंगे।

होरी : नहीं भैया, यह जुल्म बरदाश्त मत करो।

प्रेमचन्द : जाओ मालिक से कहो अब तुम जुल्म नहीं सहोगे; बन्धुआ मजदूरी नहीं करोगे; झोपड़ी की जमीन नहीं दोगे !

होरी : हाँ भैया, अब अन्याय मत सहो। तुमने तीन पीढ़ी गुलामी की। इतना ही बहुत है।

सोमारू : बाबू जी, मार खाते-खाते ये हड्डियाँ बहुत कमजोर हो गयी है !

प्रेमचन्द : जाओ मेरे दोस्त, हर जुल्म का एक न एक दिन अन्त होता है। देखो आकाश में नया सूरज उग रहा है ! यह गरीबों का सूरज है ! यह तुम्हारा सूरज है !

सोमारू : अच्छा जा रहा हूँ बाबू ! लेकिन देखना मुट्टन मुझे तोड़ कर रख देगा।

प्रेमचन्द : जाओ भई, जुल्म का सामना करो। जमाना तुम्हारा साथ देगा।

(सोमारू का प्रस्थान)

होरी : देखता हूँ कि लोग बहुत डरे हुए हैं।

प्रेमचन्द : सुना था कि देश को आजादी मिल गयी है। पर लोग आजाद नहीं हुए।

(नेपथ्य से सोमारू की आवाज) अरे बाप रे ! अरे बाप रे ! नहीं मुट्टन इतना मत मारो। अब ऐसा नहीं होगा। मुट्टन ! मुट्टन !

(प्रेमचन्द नेपथ्य में जाकर सोमारू को लाते हैं।)

सोमारू **(रोते हुए)** बाबू जी, मुट्टन ने बहुत मारा है। हड्डी-हड्डी तोड़ दी है। **(किसी अदृश्य व्यक्ति को देखकर)** अरे बाप रे, मार डाला ! क्या जान ही ले लोगे ? बस करो मुट्टन ! अब ऐसा नहीं होगा।

प्रेमचन्द : कहाँ है मुट्टन ! यहाँ तो कोई नहीं है।

सोमारू : (**नेपथ्य की ओर दिखाकर**) वह देखिये मालिक खड़े हैं। उन्हीं के आदेश पर मुट्टन ने मुझे रूई की तरह धुन दिया है।

(प्रेमचन्द नेपथ्य में जाकर देखते हैं।)

प्रेमचन्द : यहाँ तो कोई नहीं है।

सोमारू : नहीं बाबू है। वह देखिये, मुट्टन खड़ा है।

प्रेमचन्द : कहीं-कोई नहीं है। एक डर तुम्हारे खून में प्रवेश कर गया है ! मुट्टन तुम्हारे लिये एक आदमी नहीं, एक अहसास बन गया है !

होरी : जाओ भैया, कोई जुल्म हमेशा नहीं चल सकता। एक दिन मुट्टन की लाठी टूटेगी ! गरीबों की आह से ये हवेलियाँ सुलग उठेंगी !

सोमारू : दादा, हवेलियाँ जले ना जले, गरीबों की झोपड़ियों पर लगातार चिनगारियाँ उड़ रही है।

प्रेमचन्द : जाओ भैया, इतना मत डरो ! अगर मरना ही हो तो शेर की तरह लड़कर मरो।

(फगुनी चमार का प्रवेश)

फगुनी : कोई शेर नहीं है ! सब गीदड़ हो गये हैं ! लेकिन एक दिन हिसाब-किताब होगा ! भयानक भूकम्प आयेगा ! सब कुछ चूर-चूर हो जायेगा !

(अट्टाहास करते हुए प्रस्थान)

प्रेमचन्द : कौन है यह ?

सोमारू : यही फगुनी भैया हैं ! जमीन के दुख ने इनको तोड़ दिया है !

प्रेमचन्द : अरे फगुनी का यह हाल है। बड़े दुख की बात है।

सोमारू : जा रहा हूँ। अगर जिन्दा रहा तो दरशन करूँगा।

(सोमारू का प्रस्थान)

प्रेमचन्द : तूफान के पहले आसमान में एक तरह का सन्नाटा छा जाता है। इस इस समय ऐसा ही शून्य पैदा हो गया है। लगता है कि तूफान आने ही वाला है।

होरी : क्या कह रहे हो मुंसी जी ! फागुन महीने में कहीं तूफान आता है। कल फगुआ है। कल हंसी-खुसी का तूफान आयेगा।

प्रेमचन्द : वह देखो, विक्रमपुर में पुलिस की दूसरी टुकड़ी जा रही है।

होरी : मुंसी जी, गाँव के बहुत से जवान पुलिस में भरती हो गये हैं : वे फगुआ में घर लौट रहे हैं।

(**दूर से आवाज**) होली खेलें नन्दलाला बिरिज में, होली खेलें नन्दलाला।

होरी : देखो मुंसी जी, लगता है होलिका में आग लग गयी ! कैसी लाल-लाल लपटें उठ रही हैं।

प्रेमचन्द : अब हमको चलना चाहिए।

चन्द्रा : सर, कल आपसे कहाँ भेंट होगी ?

प्रेमचन्द : विक्रमपुर गाँव में। वहाँ दो-चार दिन ठहरूँगा।

होरी : देखो मुंसी जी, गाँव के लोगों ने क्या जम कर होली जलाई है ! पूरा आसमान लाल हो गया है।

प्रेमचन्द : यह होलिका की आग नहीं है। लगता है कोई दुर्घटना हो गयी है।

होरी : अरे, मुंसी जी, यह शहर नहीं, गाँव की होलिका है। जब तक आसमान लाल नहीं हो, तब तक क्या मजा !

गाओ मुंसी जी (**गाता है**) होली खेलें नन्दलाला बिरिज में, होली खेलें नन्दलाला !

(**प्रेमचन्द को पकड़ लेता है**)

प्रेमचन्द : क्या कर रहे हो !

होरी : इतने दिनों के बाद गाँव आये हो ! जरा शंकर जी की बूटी होती तो मजा आ जाता ! **होरी खेलें नन्दलाला, बिरिज में होरी खेलें नन्दलाला !**

(**सोमारू का प्रवेश**)

सोबारू : बाप रे बाप ! बड़ा अनरथ हो गया।

प्रेमचन्द : क्या हुआ भाई ! कोई नयी मुसीबत आ गयी ?

सोमारू : जिसका डर था, वही हुआ। मुट्टन के आदमियों ने फगुनी भैया की झोपड़ी फूंक दी।

प्रेमचन्द : क्या कह रहे हो ?

सोमारू : आग बढ़ती जा रही है ! कोई झोपड़ी नहीं बचेगी !

होरी : अरे बाप रे बाप ! जुल्म हो गया !

प्रेमचन्द : तुमने गोबर की माँ को देखा है ?

सोमारू : कौन किसको देखता था भैया। सबको अपनी-अपनी पड़ी थी। जा रहा हूँ। मुट्टन के आदमी सबको खोज-खोज कर मार रहे हैं।

(सोमारु का प्रस्थान)

होरी : मुंसी जी, हमलोगों को जाना चाहिये। पता नहीं गोबर की माँ कहाँ है।

चन्द्रा : देखिये, आप लोगों का इस हालत में जाना ठीक नहीं है।

होरी : क्या कह रहे हो बाबू जी ! चलो मुंसी जी।

प्रेमचन्द : वह देखो ! लगता है धनिया आ रही है। कैसा बेतहाशा दौड़ रही है।

होरी : हाँ भैया ! गोबर की माँ ही है।

(धनिया का प्रवेश)

होरी : क्या हुआ, गोबर की मां ?

धनिया : बाप रे बाप ! ऐसा जुलुम नहीं देखा; पूरी की पूरी चमार टोली जल गयी।

प्रेमचन्द : तुमने मुट्टन को आग लगाते देखा था ?

धनिया : क्या कह रहे हो मुंसी जी ! मुट्टन के आदमी घूम-घूम कर आग लगा रहे थे।

प्रेमचन्द : चमार टोली के आदमी कहाँ थे ?

धनिया : कुछ लोग तो भाग गये। पर सुनती हूँ कि कुछ लोग झोपड़ी में थे। उनका क्या हुआ, पता नहीं।

प्रेमचन्द : किसी ने विरोध नहीं किया ?

धनिया : कोई क्या विरोध करता। जिसने भी विरोध किया उसे जमींदार के गुंडों ने पीट दिया।

प्रेमचन्द : होरी भगत, यही तुम्हारे नये गाँव की तस्वीर है। पता नहीं हमलोग जाते तो क्या होता ?

होरी : मुंसी जी, आज गरीब मार खा रहा है। कल पासा पलटेगा। ये ऊंची ऊँची मीनारें जल्दी ही टूट कर गिरेंगी।

प्रेमचन्द : ऐसी उम्मीद जल्दी नहीं दिखती। हवेली की दीवारें अभी बहुत मजबूत हैं।

(नेपथ्य से मारो-मारो की आवाज)

होरी : लगता है कि लड़ाई बढ़ती जा रही है।

प्रेमचन्द : सुनो, गोबर और झुनिया कहाँ है ?

होरी : झुनिया अपने मैके गयी है। गोबर उसके साथ गया है।

प्रेमचन्द : जो भी हो, हमको पता लगाना चाहिए।

चन्द्रा : पूरे गाँव में आग सुलग रही है। मैं आपको इस नरक में नहीं जाने दूँगा।

प्रेमचन्द : यह कैसे हो सकता है। घर का लड़का खतरे में है। हम यहाँ कैसे बैठ सकते हैं ?

होरी : देखो मुंसी जी, कोई इधर आ रहा है; लगता है कि गोबर है।

प्रेमचन्द : पर वह लंगड़ा क्यों रहा है ?

धनिया : मुंसी जी, यह गोबर ही है। लगता है पैर में चोट लगी है।

(गोबर का प्रवेश)

(गोबर के कपड़े खून से लथपथ हैं।)

धनिया : अरे बाप रे इतना खून ! जालिम ने सिर पर ही वार किया है ! वैरी का नास हो ! काली मैया उसको निर्वंस कर दें।

होरी : लगता है काफी चोट लगी है।

प्रेमचन्द : ईश्वर की दया से सिर बच गया है।

होरी : लेकिन गोबर, झुनिया कहाँ है ?

धनिया : झुनिया मैके में थी। हमलोग को जाकर उसे बुला लाना चाहिए।

गोबर : दादा, झुनिया चली गयी!

होरी : झुनिया चली गयी, कहाँ चली गयी?

गोबर : दादा, झुनिया नुकसान हो गयी!

प्रेमचन्द : क्या कह रहे हो? पागल हो गये हो!

गोबर : ठीक कह रहा हूँ। झुनिया चली गयी!

प्रेमचन्द : कहाँ चली गयी?

गोबर : दादा, झुनिया हमेशा के लिये चली गयी!

धनिया : ऐसा नहीं हो सकता। गोबर पगला गया है। झुनिया अपने मैंके में है। मैं उसको लेकर आती हूँ।

होरी : गोबर जरूर पगला गया है। गाँव की आग देखकर दहस गया है।

(होरी और धनिया का प्रस्थान)

प्रेमचन्द : बोलो गोबर, ठीक-ठीक बोलो, क्या हुआ है?

गोबर : दादा, झुनिया चली गयी। अब वह कभी लौट कर नहीं आयेगी।

प्रेमचन्द : लेकिन झुनिया तो मैके में थी।

गोबर : हाँ, हम दोनों वहीं थे। लेकिन मेरे मन में कुमति पैदा हुई। हमने कहा चलो झुनिया, होलिका देख आयें। दादा झुनिया जाना नहीं चाहती थी।

प्रेमचन्द : उसके बाद।

गोबर : हम विक्रमपुर पहुँचे ही थे कि मौत का खेल शुरू हो गया। मुट्टन के आदमी होलिका की लकड़ियों को उठा-उठाकर झोपड़ियों पर फेंकने लगे।

प्रेमचन्द : सुनता हूँ कि फगुनी भैया की झोपड़ी पूरी तरह जल गयी।

गोबर : शुरूआत वहीं से हुई। धीरे-धीरे सभी झोपड़ियाँ जलने लगीं। मैंने उन्हें समझाया इस पर मुट्टन के आदमी मुझ पर लाठी लेकर पिल पड़े।

प्रेमचन्द : झुनिया कहाँ थी?

गोबर : झुनिया एक पेड़ के पीछे खड़ी थी। लेकिन मुझ पर लाठी गिरते देखकर बिजली की तरह आई और मुझे भीड़ से निकाल कर ले गयी।

प्रेमचन्द : उसके बाद ?

गोबर : लेकिन हम कहाँ बच सके। गाँव के नाले पर हमलोग फिर घिर गये।

प्रेमचन्द : वे लोग कौन थे ?

गोबर : मैंने नहीं पहचाना ! हाँ एक आश्चर्यजनक बात देखी। उनका चेहरा आदमी का था पर शरीर भेड़िए का था।

प्रेमचन्द : क्या कहते हो ! कहीं ऐसा भी होता है !

गोबर : ऐसा ही था। मैंने साफ-साफ देखा था उनके हाथों में बड़े-बड़े नाखून थे।

प्रेमचन्द : उसके बाद !

गोबर : उन्होंने झुनिया को पकड़ लिया। झुनिया रोने लगी। उसने रो-रो कर कहा—भइया, मैं तो तुम्हारे गाँव की लड़की हूँ। तुम्हारी बहन लगती हूँ। यह सुनकर वे हँसने लगे। दादा, तुमने कभी भेड़ियों को हँसते देखा है ? ऐसी हँसी सिर्फ भेड़िए ही हँस सकते हैं !

प्रेमचन्द : कितने दुख की बात है।

गोबर : उसके बाद एक दूसरी आश्चर्यजनक घटना घटी। उनका आदमी का चेहरा तेजी से बदलने लगा। धीरे-धीरे वे पूरे भेड़िए बन गए।

प्रेमचन्द : जानवर को क्यों गाली देते हो ? जानवर कभी आदमी सा बर्बर नहीं होता !

गोबर : मैंने जी तोड़ विरोध किया। लेकिन लगातार लाठी प्रहार से बेहोश होकर गिर पड़ा।

प्रेमचन्द : उसके बाद ?

गोबर : होश में आने के बाद मैंने झुनिया को बहुत ढूँढा। झुनिया कहीं नहीं थी। मैंने गाँव के कोने-कोने को देखा। झुनिया का कहीं पता नहीं था।

प्रेमचन्द : तुमने पुलिस वालों से नहीं पूछा ?

गोबर : पूछा था । पुलिस वालों ने मेरे बयान को हवा में उड़ा दिया ।

प्रेमचन्द : तुमने झोपड़ी में जली लाशों को देखा ?

गोबर : वे लाशें इतना जल गयी थीं कि उन्हें पहचानना असम्भव था ।

प्रेमचन्द : हो सकता है मरने वाली औरत झुनिया न हो ।

गोबर : कोई उम्मीद नहीं है । आपने कभी शेर की मांद से शिकार को लौटते देखा है ? लेकिन वे शेर नहीं गीदड़ है !

(होरी और धनिया का प्रवेश)

प्रेमचन्द : क्या हुआ होरी भगत, कुछ पता लगा ?

होरी : नहीं मुंसी जी, हम लोगों ने झुनिया को खो दिया ।

प्रेमचन्द : किसी ने झुनिया की लाश को देखा है ?

होरी : लोगों ने एक औरत की लाश को आग में जलते देखा है । उस लाश का कद झुनिया के जैसा था ।

प्रेमचन्द : क्या कहूँ, बहुत दुख की बात है ।

धनिया : मेरी बेटी की अकाल मृत्यु हो गयी ! पता नहीं उसे कितना नरक भुगतना पड़ेगा !

प्रेमचन्द : ईश्वर की मर्जी ! होरी भगत, अब हमलोग को बेटी के क्रिया–कर्म का प्रबन्ध करना होगा ।

गोबर : इसमें भी कई मुश्किलें हैं । दरोगा कहते थे कि पोस्टमार्टम के बिना लाश नहीं मिलेगी ।

(चारपाई पर बेहोश झुनिया को लेकर रतनलाल और सोमारू का प्रवेश)

रतनलाल : बाबू साहब, आप इनको पहचानते हैं । यह महिला गाँव के बाहर बंसवाड़ी में बेहोश पड़ी थी ।

(सब झुककर देखते हैं)

धनिया : अरे ये तो झुनिया है ! हाँ-हाँ अपनी झुनिया हे ! मुंसी जी जरा नाड़ी देखो !

प्रेमचन्द : (देखकर) नाड़ी ठीक चल रही है। घबड़ाने की कोई बात नहीं है। थोड़ा पानी ले आओ।

(गोबर दौड़कर पानी लाता है छीटें देने पर झुनिया उठकर बैठ जाती है।)

रतनलाल : हमलोग जा रहे हैं। गाँव में हाहाकार मचा हुआ है।

(रतनलाल और सोमारू का प्रस्थान)

होरी : ईश्वर की कृपा है ! मेरी बहु जिन्दा वापस आ गयी ! मौत के मुँह से लौट आयी !

धनिया : यह भगवती को किरिपा है। अब हमलोगों को तुरन्त इस नरक से निकल जाना चाहिये।

प्रेमचन्द : बेटी झुनिया लौट आयी। हम सभी लोगों का ग्रह कट गया।

गोबर : लेकिन झुनिया थी कहाँ ? मैं पूरे गाँव का चक्कर लगा आया था।

प्रेमचन्द : समझो शेर की मांद से लौट आयी। बेटी झुनिया, अब कैसी तबियत है ?

(झुनिया कुछ नहीं बोलती)

होरी : हमलोग–कितना घबरा गये थे। गाँव में सब लोग कह रहे थे कि झुनिया जल कर मर गयी। लेकिन मेरा मन नहीं मानता था।

धनिया : मैंने जीवन भर भगवती का जाप किया है। देवी हमको बचा लीं।

होरी : बेटी, तुम्हारे ऊपर ग्रह था। समझो कि दूसरी जिन्दगी हुई।

धनिया : अब कैसी तबियत है बेटी ?

(झुनिया कुछ नहीं बोलती)

गोबर : यह बोलती क्यों नहीं ?

प्रेमचन्द : तुम भी अजीब आदमी हो ! कितना कष्ट उठा कर आयी है !

गोबर : नहीं दादा, लगता है कि इसके मन में अब भी आग सुलग रही है। इसकी चुप्पी से मुझको डर लग रहा है।

(झुनिया कुछ नहीं बोलती)

होरी : बेटी, अगर तुमको कुछ हो जाता तो हम सबका मुँह हमेशा के लिए काला हो जाता !

धनिया : बहू, उन लोगों ने हमारे साथ जो कुछ किया है, भगवान उसका जरूर दंड देंगे ।

होरी : लोग कितनी भयानक बातें कह रहे थे। पुलिस भी यही कह रही थी ।

धनिया : कुछ लोग तो तुम्हारी लाश ही दिखा रहे थे। उधर पुलिस कहती थी कि लाश चीरफाड़ के बाद मिलेगी ।

होरी : बेटी, उन भेड़ियों के हाथ में पड़कर तुम बच गयी। यह ईश्वर की महान कृपा है !

(झुनिया कुछ नहीं बोलती)

गोबर : बाबू, आप और माँ जाइये। हमलोग भी जल्दी ही आयेंगे। आपके सामने झुनिया कुछ नहीं कहेगी ।

होरी : हाँ ठीक है। चलो धनिया, हम लोग चलें।

(होरी और धनिया जाते हैं।)

गोबर : झुनिया, जो होना था सो हो गया। आज सचमुच हमारे अपमान का दिन था ।

(झुनिया कुछ नहीं बोलती)

प्रेमचन्द : देखता हूँ कि हरेक जुल्म को कानून की आड़ मिल जाती है। न्याय मंदिर में सब कुछ है, इंसाफ नहीं है।

गोबर : बोलो झुनिया बोलो ! अन्यायी को दंड दिलाने के लिए हम ऊँची से ऊँची अदालत में जायेंगे ।

प्रेमचन्द : कोई फायदा नहीं है। गरीबों की कहीं सुनवाई नहीं है।

(झुनिया कुछ नहीं बोलती)

गोबर : यह नहीं हो सकता। झुनिया तुमको कुछ कहना ही पड़ेगा।

(झुनिया का कंधा झकझोरता है ।)

प्रेमचन्द : यह क्या कर रहे हो ? पागल हो गये हो ?

गोबर : आप नहीं समझ रहें हैं । झुनिया आत्महत्या कर सकती है । बोलो झुनिया बोलो ।

(झुनिया के मुँह पर प्रहार करता है)

झुनिया : नहीं, मेरा नाम झुनिया नहीं है !

गोबर : तुम्हारा नाम झुनिया नहीं है ! तुम कहना क्या चाहती हो ?

झुनिया : मेरा नाम झुनिया नहीं है ! झुनिया तो मर गयी !

प्रेमचन्द : बेटी, यह तुम क्या कह रही हो ?

गोबर : मैं जानता हूँ कि तुम नाराज हो । मैं साथ रह रह कर भी तुम्हारी रक्षा नहीं कर सका । लेकिन झुनिया मैं कर ही क्या सकता था ।

झुनिया : मेरा नाम झुनिया नहीं है ! मेरा नाम मथुरा है !

गोबर : मथुरा ! मथुरा के माने क्या ? मथुरा तो एक शहर का नाम हैं ।

प्रेमचन्द : नहीं गोबर, मथुरा एक शहर नहीं, देश के एक कलंक का नाम है । मैंने इस घटना का जिक्र सुना है । मथुरा एक आदिवासी लड़की है, जिसे एक गाँव के थाने में रेप किया गया था ।

गोबर : नहीं दादा, ऐसा नहीं हो सकता !

झुनिया : झुनिया ने कल अपने हो गाँव में दम तोड़ दिया । मेरा नाम मथुरा है ! मेरा नाम माया त्यागी है !

गोबर : दादा, यह क्या कह रही है ? यह माया त्यागी कौन है ?

प्रेमचन्द : गोबर, यह इस देश का दूसरा कलंक है । माया त्यागी उस लड़की का नाम है जिसके पति की हत्या पुलिस के वीर सिपाहियों ने की थी । माया त्यागी को बागपत में सरे बाजार बेइज्जत किया गया था ।

गोबर : दादा, अब मैं और बरदाश्त नहीं कर सकता ! मुझे अब मर जाना चाहिए !

प्रेमचन्द : पागल हुए हो ! अगर मरने की इच्छा थी तो कल लड़कर मरते । आज बुजदिलों की तरह कुँए में कूदने से क्या होगा ?

गोबर : दादा, अब जीने से कोई फायदा नहीं है !

प्रेमचन्द : (आम दर्शकों से)

आप लोगों ने कुछ सुना ? झुनिया अपना नाम भूल गयी है ! यह अपना नाम मथुरा और माया त्यागी बतलाती है ! मैं पूछता हूँ कि इस देश की कितनी लड़कियों को मथुरा और माया त्यागी के नाम से बुलाया जायेगा ?

आप लोग चुप हैं । एक दिन मैंने खून में कलम डुबो कर गाँव की हकीकत को लिखा था । आज कहाँ हैं वे लोग जो साहित्य का झंडा उठाये घूमते हैं ! गाँव के नये यथार्थ को कौन लिखेगा ? आप लड़ नहीं सकते तो कम से कम आवाज तो बुलंद कर सकते हैं !

मैं सभी लोगों से पूछ रहा हूँ । बोलिये, झुनिया, मथुरा, माया-त्यागी पर कौन लिखेगा ? इस जुल्म का पर्दाफाश कौन करेगा ?

आप सब चुप हैं । याद रखिए, जो जुल्म के सामने चुप रहते हैं, वे जुल्म के सबसे बड़े मददगार होते हैं !

चन्द्रा : सर, एक सवाल और है !

प्रेमचन्द : आपने बहुत सवाल पूछे हैं । मैं भी एक सवाल पूछना चाहता हूँ । क्या आप झुनिया के अपमान की कहानी लिखेंगे ?

चन्द्रा : सर, मैं क्या कर सकता हूँ ? अभी मुझे थीसिस पूरी करनी है । अगर थीसिस पूरी नहीं हुई तो मेरा जूनियर मुझको सुपरसीड कर रीडर हो जायेगा ।

प्रेमचन्द : आपकी थीसिस से दुनिया का क्या बनता-बिगड़ता है ! बहुत शर्म की बात है, इतना बड़ा वाकया हो गया और आप सब चुप हैं ।

गोबर : दादा, झुनिया के अपमान पर सिर्फ लिखने से क्या होगा ! इस जुल्म के खिलाफ लड़ना होगा !

प्रेमचन्द : लेकिन, गोबर हमें वापस लौटना है ।

गोबर : नहीं दादा, अब मैं वापस नहीं जाऊँगा । इस जुल्म का मुकाबला करना होगा ! मैं रक्त की अंतिम बूँद तक लड़ूँगा !

प्रेमचन्द : नहीं गोबर, तुम अकेले नहीं हो। प्रेमचन्द हमेशा गरीबों की लड़ाइयाँ लड़ता रहा है। यह गरीब लेखक इस लड़ाई में भी तुम्हारा साथ देगा !

झुनिया : दादा, ये लड़ाईयाँ कब तक चलेंगी ? जुल्म की रात कब खत्म होगी ? आजादी की सुबह कब होगी ?

बोलो, दादा बोलो !

गरीबों की सुबह कब होगी ?

(होरी, धनिया, रतनलाल, सोमारू का प्रवेश)

प्रेमचन्द : बेटी, कल हमने धरती के दामन में कुछ किरणें बोयी थीं।

आज देश में बहुत अंधेरा है।

पर कल रोशनी के लाल कल्ले फूटेंगे !

सुबह होगी ! जरूर होगी !

सब मिलकर— सुबह होगी ! होगी ! होगी !

(पटाक्षेप)

□□

अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा

(महाभारत की पृष्ठभूमि पर एक वैचारिक एकांकी)

(कामायनी, आरा के कलाकारों के द्वारा मंचित)

पात्र-परिचय

१. धर्मराज युधिष्ठिर

२. योगीराज कृष्ण

३. द्रौपदी

४. आर्य भीम

५. संजय

६. युयुत्सु

७. अश्वत्थामा

८. प्रतिहारी–१

९. प्रतिहारी–२

अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा

स्थान : हस्तिनापुर का राजभवन ।

समय : संध्या एवं रात्रि का संधिकाल ।

[इस विचार-एकांकी का समय महाभारत युद्ध के बाद का काल है । महाभारत युद्ध समाप्त हो चुका है और धर्मराज युधिष्ठिर पुनः हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित हो चुके हैं । किन्तु युधिष्ठिर के मन पर इस सर्वग्रासी युद्ध की छाया शेष है । दोनों तरफ पूरे जनपद का विनाश हुआ है । पाण्डवों की ओर बचे हैं, पाँचो पाण्डव और द्रौपदी । कौरवों के एक सौ भाइयों में सिर्फ युयुत्सु बचा है । युयुत्सु एकमात्र कौरव था जिसने युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लिया था । इसके अतिरिक्त शेष था, कृष्ण के शाप से जर्जर अश्वत्थामा ।]

मंचसज्जा : एकांकी की सारी घटनाएँ हस्तिनापुर के राजभवन के सभा कक्ष में घटित होती हैं । मंच पर राज सिंहासन तथा कुछ राजसी आसन रखे हुए हैं । दोनों ओर दो प्रतिहारी माला लिये खड़े हैं । सभा कक्ष में युधिष्ठिर बेचैन सा टहल रहे हैं । तोरण द्वार से संगीत की ध्वनि सुनाई पड़ती है ।

(संगीत थमने के बाद द्रौपदी का प्रवेश)

द्रौपदी : धर्मराज, पश्चिम के आकाश से संध्या रानी विदा ले चुकी है । तोरण द्वार पर राजगायक अब रात्रि के रागों की अवतारणा करेंगे । विश्राम की बेला उपस्थित है ।

युधिष्ठिर : देवी द्रौपदी, लगता है कि इन आँखों से विश्राम बिदा ले चुका है । मन की शान्ति रूठ गयी है । देवी, संशय और पश्चाताप की अग्नि बड़ी दुःसह होती है ।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, जो सिंहासन पर बैठता है उसे चिन्ताओं का वरण करना ही पड़ता है। किन्तु हरेक चिन्ता का अपना क्षण होता है। लगता है कि राजगायक का संगीत आपकी मन की गाँठों को नहीं खोल सका।

युधिष्ठिर : देवी, मैंने राजगायक के संगीत को नहीं सुना। मुझे लगा कि कहीं एक सामुहिक रुदन हो रहा है। संगीत के हजारों स्वर एक शिला पर सिर पटक रहे हैं।

द्रौपदी : धर्मराज, कुरुक्षेत्र की भूमि पर सिर्फ धृतराष्ट्र के पुत्र नहीं मरे, आपकी सारी चिन्ताएँ भी मर गयी हैं। दसो दिशाओं में आपकी विजय वैजयन्ती फहरा रही है। युद्ध में हमारे स्वजन भी मरे हैं। पर एक पवित्र युद्ध में मरे लोगों के लिये शोक व्यर्थ है।

युधिष्ठिर : देवी, हम युद्ध अवश्य जीते पर शान्ति हार गये। मैं हर क्षण एक दिवास्वप्न देखता हूँ। मृत बांधव मुझसे पूछते हैं––धर्मराज, इतने लोगों की हत्या कर तुम्हें क्या मिला ?

द्रौपदी : आर्यपुत्र, आपका हृदय बहुत कोमल है। बन्धुओं की मृत्यु ने आपको आहत किया है। किन्तु समय धीरे-धीरे इस घाव को भर देगा।

युधिष्ठिर : नहीं देवी, लगता है कि सारी प्रकृति मेरे विरुद्ध उठ खड़ी हुई है। अभी-अभी मैंने हजारों बिल्लियों को रोते सुना है।

द्रौपदी : धर्मराज, वह मात्र भ्रम था। मैंने किसी बिल्ली को रोते नहीं सुना! हाँ, कुरुक्षेत्र में सियारों का झुंड शवों के लिये लड़ रहा था।

युधिष्ठिर : देवी, वह देखो उल्कापात! लगता है कि हजार-हजार तारिकाएँ टूट-टूट कर गिर रही हैं।

द्रौपदी : धर्मराज, कहीं कोई उल्कापात नहीं है। शुभ्र आकाश में तारिकाएँ पारिजात के पुष्प सी खिली हुई हैं।

(नेपथ्य से आवाज) अश्वत्थामा हतो, नरो वा कुंजरो वा !

अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ! अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा !

युधिष्ठिर : (**विचलित स्वर में**) सुनो, कोई बार-बार पुकार रहा है— अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ! देवी, आचार्य द्रोण से कही गयी यह बात बिलकुल गोपनीय थी। इसके बारे में सिर्फ कृष्ण जानते थे। आचार्य द्रोण ने भी इसे सिर्फ आधा ही सुना था।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, यह सिर्फ प्रेतलीला है। अकाल मृत्यु में मरे लोग अकसर प्रेतयोनि धारण कर लीलाएँ करते हैं।

(**नेपथ्य से आवाज**) अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ! अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ! अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा !

युधिष्ठिर : (**भयभीत स्वर में**) नहीं-नहीं यह प्रेत लीला नहीं है। यह तो जैसे युद्ध की घोषणा है। लगता है कि कोई योद्धा हमारी विजय को चुनौती दे रहा है।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, कुरुक्षेत्र में आपके सभी शत्रु मारे जा चुके हैं। अब आपको कौन चुनौती दे सकता है।

युधिष्ठिर : देवी, मरे हुए लोग आवाज नहीं दे सकते। मैंने जो कुछ सुना है— वह एक जीवित स्वर है।

(युधिष्ठिर संकेत-ध्वनि करते हैं)

(पहला प्रतिहारी सम्मुख खड़ा होता है)

प्रतिहारी : आज्ञा हो देव !

युधिष्ठिर : प्रतिहारी, हमने अभी-अभी एक आकाशचारी ध्वनि सुना है— अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा !

प्रतिहारी : धर्मराज ने ठीक सुना है। अभी-अभी यह आवाज हस्तिनापुर के राजभवन पर मंडरा रही थी।

द्रौपदी : प्रतिहारी, इस अप्रिय ध्वनि ने आर्यपुत्र को अशान्त कर दिया है। जाओ, पता लगाओ कि यह ध्वनि किसकी है ! देव, दानव, मनुष्य या प्रेत-जो भी होगा, हम उसे दण्ड देंगे !

प्रतिहारी : देवी, हमने उस आवाज का पीछा किया पर असफल रहे। राज-भवन से लगा कि यह आवाज राजपथ से आ रही है। राजपथ पर हमारे सैनिकों ने पर्वतमाला तक इस आवाज का पीछा किया। किन्तु पर्वत के शिखर पर लगा कि यह आवाज दसो दिशाओं से उठ रही है।

द्रौपदी : हरेक कार्य का कारण होता है। इस ध्वनि के पीछे कोई न कोई व्यक्ति होगा।

प्रतिहारी : देवी, आपका अनुमान उचित है। हमें तो यह प्रेतों की लीला जान पड़ती है।

द्रौपदी : नहीं, इस ध्वनि ने धर्मराज को बहुत अस्थिर कर दिया है। हमें अपने शत्रु का पता लगाना ही पड़ेगा।

युधिष्ठिर : जाओ प्रतिहारी, आर्य संजय को बुला लाओ। आर्य संजय दिव्य-चक्षु हैं। वे हमारी सहायता कर सकते हैं।

प्रतिहारी : जो आज्ञा।

(प्रतिहारी का प्रस्थान)

युधिष्ठिर : देवी, कभी-कभी लगता है कि सृष्टि का अन्त निकट है।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, यह धरती आपके पुण्यों पर टिकी हुई है। आपके रहते इस धरती का कैसे क्षय होगा।

(संजय का प्रवेश)

संजय : धर्मराज की जय हो !

युधिष्ठिर : आइये आर्य संजय, हम आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

संजय : धर्मराज की क्या आज्ञा है ?

युधिष्ठिर : आर्य संजय, हस्तिनापुर शापग्रस्त हो गया है। हर क्षण कुछ न कुछ अमंगल घटित हो रहा है। लगता है कि युद्ध में मरा कोई महारथी जी उठा है और युद्ध के लिये प्रस्तुत है।

संजय : धर्मराज युयुत्सु को छोड़कर धृतराष्ट्र के सभी पुत्र वीर गति पा चुके हैं। अठारह अक्षौहिणी सेना अठारह दिनों में नष्ट हो गयी। मैं इस पूरे विनाश का साक्षी रहा हूँ।

युधिष्ठिर : आर्य संजय, फिर हस्तिनापुर में इतनी अशान्ति क्यों है ?

संजय : धर्मराज, एक युग मर चुका है। दूसरा जन्म ले रहा है। परिवर्तन की पीड़ा स्वाभाविक है।

युधिष्ठिर : आर्य संजय, आप दिव्यचक्षु हैं। हमने अभी-अभी एक आकाशचारी ध्वनि सुनी है––अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ! इस ध्वनि ने हमें बहुत चंचल कर दिया है।

संजय : धर्मराज, हमारे-आपके बीच जो कुछ दिव्य था, युद्ध की भेंट चढ़ गया। मैंने अपनी दिव्य दृष्टि खो दी है।

द्रौपदी : आर्य संजय, आपने धरती की धड़कन सुनी है। क्या आपने हस्तिनापुर की प्रजा में अशान्ति और अवज्ञा के स्वर सुने हैं ?

संजय : देवी, हस्तिनापुर में प्रजा के नाम पर बूढ़े, बालक, अपंग और भिक्षुक बच गये हैं। सब तरफ शान्ति ही शान्ति है। प्रजा की अवज्ञा का प्रश्न ही नहीं उठता।

द्रौपदी : आर्यसंजय, तब इस धर्मराज्य में अधर्म की चर्चा कौन कर रहा है ?

संजय : देवी, हस्तिनापुर के बाहर एक भिक्षुक की आँखों में मैंने प्रतिहिंसा की आग देखी है। मैंने उसके मुँह से बार-बार सुना है–– अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा ! किन्तु वह भिक्षु युद्ध के घावों से जर्जर हो चुका है। उसके लिये चिन्ता बेकार है।

द्रौपदी : आर्य संजय, हम उस भिक्षुक की उपेक्षा नहीं कर सकते। आपको स्मरण है न; एक छोटी सी चिनगारी ने पूरे खांडव वन को जला दिया था।

संजय : देवी, आप जैसा उचित समझे।

(दूसरे प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : जो आज्ञा, देव।

युधिष्ठिर : प्रतिहारी, हस्तिनापुर के बाहर एक कोढ़ी भिक्षुक है। उसे रथ पर बिठा कर हमारे सम्मुख ले आओ।

द्रौपदी : एक कोढ़ी भिक्षुक के लिये रथ ! एक अपात्र को इतना सम्मान !

युधिष्ठिर : देवी, भिक्षुक राजभवन में अतिथि बन कर आ रहा हैं। अतिथि को सम्मान मिलना ही चाहिये।

प्रतिहारी : जो आज्ञा देव !

(प्रतिहारी का प्रस्थान)

(नेपथ्य से भीम का अट्टाहास ! गदा के प्रहार की ध्वनि। युयुत्सु की क्रंदन भरी आवाज)

द्रौपदी : लगता है कि आर्य भीम और युयुत्सु फिर उलझ पड़े हैं। इन विवादों का कोई अन्त नहीं दिखाई पड़ता।

(युयुत्सु का प्रवेश)

युयुत्सु : धर्मराज, रक्षा करें। आर्य भीम ने गदा से मुझे क्षत-विक्षत कर दिया है। वे मेरी हत्या को प्रस्तुत हैं।

(भीम का गदा के साथ प्रवेश)

भीम : (**अट्टाहास करते हुए**) मूर्ख ! कायर ! एक ही गदा प्रहार में भाई की शरण खोजने लगा। (**युयुत्सु को पकड़ कर**) चल रंगशाला में ! यहाँ क्यों छिपता है !

युधिष्ठिर : बन्धु भीम, आर्य युयुत्सु दुर्योधन के भाई होते हुए महाभारत में हमारे साथ रहे। हमें उनका सम्मान करना चाहिये।

भीम : सम्मान ! इस कायर का सम्मान ! बन्धुवर, यह युद्ध का भगोड़ा है ! यह धर्म नहीं, युद्ध के भय से हमारे पक्ष में आया था।

युयुत्सु : धर्मराज, धर्म के कारण मैंने भाई दुर्योधन के पक्ष को छोड़ दिया। पिता, माता और भाइयों से मुझे सिर्फ अपमान ही मिला। यहाँ आर्य भीम मुझे हर क्षण अपशब्द कहते रहते हैं। इस जीवन को धिक्कार है !

भीम : मूर्ख ! वाचाल ! तू धर्म की दुहाई देता है ! तू एक मरियल टट्टू है ! तू धर्म के बारे में क्या जानता है ?

युधिष्ठिर : बन्धु भीम, आर्य युयुत्सु हमारे शरण में है। हमें इनका अपमान नहीं करना चाहिये।

भीम : जा कायर ! आज तू बच गया ! लेकिन एक दिन मेरी गदा तेरी पीठ पर पड़ेगी ! मैं दुर्योधन की तरह तेरी जाँघ भी तोड़ूँगा।

(भीम का प्रस्थान)

युधिष्ठिर : देवी, राजवैद्य को बुलवा कर बन्धु युयुत्सु की चिकित्सा का उचित प्रबन्ध करो।

(द्रौपदी और युयुत्सु का प्रस्थान)

युधिष्ठिर : आर्य संजय, लोग कहते हैं कि अधर्म का नाश हो गया। लेकिन धर्म की स्थापना कहाँ हुई ? लोग अपने-अपने धर्म को क्यों नहीं पहचानते ?

संजय : धर्मराज, कुरुक्षेत्र में कौरवों की व्यवस्था नष्ट हो गयी। दूसरी व्यवस्था अभी जन्म ले रही है। इसमें धैर्य और विश्वास की जरूरत है।

युधिष्ठिर : युद्ध हमारे बीच हजारों जीवित प्रेत छोड़ गया है। इन्हें जिन्दगी से फिर जोड़ना कितना मुश्किल है।

संजय : ताजा घाव बहुत दुःख देता है। लेकिन धीरे-धीरे सब ठीक हो जाता है। मैं जा रहा हूँ, धर्मराज !

(संजय का प्रस्थान)

(द्रौपदी का प्रवेश)

युधिष्ठिर : बहुत देर हो गयी। प्रतिहारी उस कोढ़ी भिक्षुक को लेकर नहीं आया।

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : धर्मराज, राजभवन के द्वार पर महाराज वासुदेव कृष्ण उपस्थित है।

युधिष्ठिर : भगवान् कृष्ण ! इतने असमय !

(युधिष्ठिर का प्रस्थान)

(कृष्ण के साथ युधिष्ठिर का प्रवेश)

द्रौपदी : हस्तिनापुर के राजभवन में वासुदेव कृष्ण का स्वागत है !

कृष्ण : देवी द्रौपदी का अभिनन्दन करता हूँ ! देवी कुशल से तो हैं ?

द्रौपदी : बंधुवर, हम तो कुशल से हैं । पर आपके असमय आगमन से मन में अनेक प्रश्न उठ रहे हैं !

कृष्ण : देवी द्वारिकापुरी से संदेश मिला है । यदुवंशियों के बीच अनेक विवाद उत्पन्न हो गये हैं । मेरा प्रस्थान अनिवार्य है ।

युधिष्ठिर : भगवन् हस्तिनापुर की नींवें हिल रही हैं । हर क्षण कुछ न कुछ अमंगल घटित हो रहा है ! देव; आप ही इस राज्य रूपी रथ के सारथी और सूत्रधार हैं ।

कृष्ण : आर्य युधिष्ठिर, कुरूक्षेत्र के युद्ध के साथ एक अध्याय समाप्त हो गया है । यदुवंशियों के संबन्ध बिलकुल छिन्न-भिन्न हो गये हैं । मुझे जाना ही होगा !

(अश्वत्थामा के साथ प्रतिहारी का प्रवेश)

युधिष्ठिर : प्रतिहारी, अतिथि भिक्षुक को लाने में बहुत विलम्ब हुआ ।

अश्वत्थामा : राजन्, मैं न तुम्हारा अतिथि हूँ और न भिक्षुक ! मुझे बलपूर्वक लाया गया है । मुझे तुम्हारा रत्न जटित रथ स्वीकार न था ।

कृष्ण : द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ! तुमने धर्मराज के रथ को अस्वीकार कर अच्छा ही किया ! तुम उसके योग्य पात्र नहीं थे ।

द्रौपदी : अश्वत्थामा ! मेरे पुत्रों का हत्यारा !

अश्वत्थामा : कृष्ण, तुम ठीक कहते हो ! रत्नजटित सिंहासन और सफेद घोड़ों के रथ पर सिर्फ राजपुत्र बैठ सकते हैं ।

द्रौपदी : बंधु कृष्ण, अश्वत्थामा ने अधर्म से मेरे पुत्रों की हत्या की है ! मेरा हृदय क्षोभ से भर गया है ! घृणा से मेरी आँखें बंद हो रही हैं !

अश्वत्थामा : देवी द्रौपदी, अपने मरे हुए पुत्रों के लिये तुम्हारा शोक स्वाभाविक है। लेकिन इस महायुद्ध में करोड़ों माताएँ निपूती हो गयी हैं। इस महासंहार के संयोजक और सूत्रधार एकमात्र कृष्ण थे।

युधिष्ठिर : बंधु अश्वत्थामा, तुम्हारा आरोप गलत है। भगवान् कृष्ण ने अंतिम क्षण तक युद्ध रोकने का प्रयत्न किया।

अश्वत्थामा : आर्य युधिष्ठिर, मुझे यहाँ बलपूर्वक लाया गया है। क्या मैं इसका प्रयोजन जान सकता हूँ ?

युधिष्ठिर : बंधु अश्वत्थामा, धर्मयुद्ध का अंत हो गया। फिर भी तुम इस धर्मराज्य के प्रति द्वेषभाव रखते हो। हम इसका कारण जानना चाहते हैं।

अश्वत्थामा : (**व्यंग से हँसता है**) धर्मयुद्ध ! धर्मराज्य ! आदमी अपने को कितना धोखा दे सकता है ! आर्य युधिष्ठिर, अगर यह धर्मराज्य है तो तुम इतना भयभीत क्यों हो ? धर्म इतना दुर्बल क्यों है ?

युधिष्ठिर : द्रोणपुत्र, आचार्य द्रोण हमारे गुरू थे। हम पिता और पुत्र के बल से सदा परिचित रहे हैं।

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, हमें शोक है कि तुमने पूज्य पिता आचार्य द्रोण का बल नहीं देखा। तुमने मेरी शक्ति भी नहीं देखी। मेरे ब्रह्मास्त्र के सम्मुख महर्षि व्यास हाथ जोड़कर खड़े हो गये थे।

युधिष्ठिर : वह सृष्टि की रक्षा का सवाल था। अगर व्यास रक्षा न करते तो पूरी सृष्टि समाप्त हो जाती।

अश्वत्थामा : महर्षि व्यास ने किसको बचाया ! हस्तिनापुर में सिर्फ मेरे जैसे अपंग, बच्चे और बूढ़े बच गये हैं।

युधिष्ठिर : कम से कम धर्म तो बच गया !

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, इस युद्ध में सबसे पहले धर्म मरा है। जब अर्जुन ने रथ का चक्का निकालते समय कर्ण की हत्या की, उस दिन धर्म मर गया। जब जयद्रथ के बध के लिये सूर्य को असमय छिपा दिया गया, उस दिन धर्म मर गया। जब भीम ने जंघे पर गदा

मारकर दुर्योधन की जांघ तोड़ दी, उस दिन धर्म मर गया। आर्य युधिष्ठिर, जब तुमने आचार्य द्रोण को धोखा देने के लिये मेरे मरने का समाचार सुनाया, उस दिन धर्मराज के धर्म ने शोक से आत्महत्या कर ली।

कृष्ण : द्रोणपुत्र, धर्म की गति बहुत जटिल होती है। संकट काल में धर्म की मर्यादा बदल जाती है।

अश्वत्थामा : नहीं, यह झूठ है। परिस्थिति बदल जाने से अधर्म धर्म नहीं हो जाता।

द्रौपदी : द्रोणपुत्र, तुमने जीवन भर धर्म जानने का प्रयत्न नहीं किया। आज तुम धर्म की मर्यादा नहीं समझ सकते।

अश्वत्थामा : देवी द्रौपदी, तुम ठीक कहती हो। मैं जीवन भर सिर्फ जीविका के सवाल को हल करता रहा। लेकिन क्या तुम्हें भ्रम है कि आर्य युधिष्ठिर धर्म के लिये लड़े थे! फिर हस्तिनापुर के सिंहासन के लिये कौन लड़ा ?

कृष्ण : धृतराष्ट्र के पुत्र !

अश्वत्थामा : नहीं, युद्ध के लिये दो पक्षों की जरूरत होती है। इन दोनो पक्षों के लिये प्रश्न धर्म का नहीं, हस्तिनापुर के सिंहासन का था।

कृष्ण : द्रोणपुत्र, यह तुम्हारा मत हो सकता है !

अश्वत्थामा : कृष्ण, क्या तुम्हें भी भ्रम है कि तुम सत्य के लिये लड़े थे। तुम सत्य के लिये नहीं लड़े। मित्र के लिये लड़े थे।

युधिष्ठिर : द्रोणपुत्र, यह आरोप गलत है !

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर तुम जीवन भर राजभवन के सुख में रहे। क्या तुमने कभी खेतो के पुतले को देखा है। (नेपथ्य की ओर दिखाकर) वह देखों खेतों में पुतले अब भी खड़े है। पर जिन खेतों की रक्षा के लिये ये खड़े किये गये थे वे सारे खेत युद्ध में जल गये !

युधिष्ठिर : तुम कहना क्या चाहते हो ?

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, तुम भी एक पुतले ही हो। कृष्ण के द्वारा खड़े किये गये एक पुतले। लेकिन तुम जिस हस्तिनापुर की रक्षा के लिये खड़े किये गये थे, वह नगर ही युद्ध में समाप्त हो गया।

द्रोपदी : अग्नि तिनके को जला देती है। युद्ध में विनाश स्वाभाविक था।

अश्वत्थामा : वह विनाश नहीं, सर्वनाश था। करोड़ों माताएँ निपूती हो गयीं। करोड़ों पत्नियों के माथे का सिंदूर पुछ गया। अठारह दिनों में अठारह अक्षौहिणी सेना नष्ट हो गयी। युधिष्ठिर मैं तुमसे पूछता हूँ कि इस युद्ध में तुमको छोड़कर, किसको क्या मिला?

द्रौपदी : दोणपुत्र, पिता की मृत्यु ने तुमको बहुत दुखी कर दिया है।

अश्वत्थामा : देवी द्रौपदी, तुमको भी पुत्रशोक है पर राजमहल के सुखों के बीच तुम अपना दुख भुला सकती हो। तुमने एक झोपड़ी के दुख को नहीं देखा है। झोपड़ी का दुख मात्र दुख होता है।

द्रौपदी : तुम कहना क्या चाहते हो?

अश्वत्थामा (नेपथ्य की ओर इशारा करता है) वह देखो। पेड़ के नीचे मलिन वस्त्रों में एक युवती खड़ी है। वह कभी हँसती है, कभी रोती है।

(नेपथ्य से युवती की आवाज) धर्म खाऊँगी! सत्य खाऊँगी! नर खाऊँगी! कुंजर खाऊँगी!

(सब नेपथ्य की ओर देखते हैं)

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, तुम्हारे धर्म युद्ध ने इस औरत को पागल बना दिया है। इसके सभी पुत्र युद्ध में मारे गये। इसके पति को युद्ध ने गलित कुष्ट का रोग दिया है!

कृष्ण : द्रोणपुत्र, शायद वह तुम्हारी पत्नी है!

अश्वत्थामा : हाँ कृष्ण, तुम ठीक समझे। यह मेरी पत्नी है। देवी द्रौपदी, तुम भी देखो! झोपड़ी का दुख कितना हृदय-विदारक होता है।

कृष्ण : द्रोणपुत्र, कभी-कभी सत्य के लिये, धर्म के लिये युद्ध आवश्यक हो जाता है। मैंने कुरुक्षेत्र में अर्जुन से यही कहा था।

अश्वत्थामा : कृष्ण, इस युद्ध के पीछे सत्य नहीं था, धर्म नहीं था, सिर्फ स्वार्थ थे। वासुदेव, इस बात से क्या फर्क पड़ता था कि हस्तिनापुर की गद्दी पर पाण्डु के पुत्र बैठते या धृतराष्ट्र के पुत्र ! कृष्ण तुम चाहते तो यह युद्ध रुक सकता था।

कृष्ण : इस युद्ध की जिम्मेवारी सिर्फ दुर्योधन पर थी। युधिष्ठिर ने अन्त में सिर्फ पाँच गाँव माँगे थे।

अश्वत्थामा : कृष्ण, वह तुम्हारी कूटनीतिक चाल थी। क्या सभी पाण्डव पाँच गाँव के लिये तैयार थे। कृष्ण, तुम भूल गये ! सुलह के लिये जाते समय द्रौपदी ने कहा था—कृष्ण, मेरे खुले हुए बालों को देखो ! इन बालों को बाँधने के लिए कौरवों का रक्त चाहिये !

कृष्ण : द्रोणपुत्र, द्रौपदी के इन शब्दों के बाद भी मैंने दुर्योधन से पाँच गाँव ही माँगे थे। लेकिन दुर्योधन ने कहा—कृष्ण मैं, युद्ध के बिना सूई के नोक बराबर भूमि भी नहीं दूँगा।

रश्वत्थामा : नहीं कृष्ण, तुम चाहते तो यह विनाश रुक सकता था। हस्तिनापुर की गद्दी पर कौन बैठे—यह प्रश्न इतना महत्वपूर्ण नहीं था। एक पूरी पीढ़ी समाप्त हो गयी। पूरी धरती अग्नि वाणों से झुलस गयी है। इन खेतों में अब कुछ नहीं उगेगा !

कृष्ण : द्रोणपुत्र, काल की गति कठिन होती है। उस पर किसी का वश नहीं है।

अश्वत्थामा : कुरुक्षेत्र से अलग एक दूसरा कुरुक्षेत्र भी था। कृष्ण तुम इस लड़ाई को क्यों नहीं लड़े।

कृष्ण : द्रोणपुत्र; तुम किस लड़ाई की चर्चा कर रहे हो ?

अश्वत्थामा : कृष्ण, तुम बचपन से ही सुख में रहे। तुम्हें लोग माखन चोर कहते हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि एक गरीब बच्चे की गरीब माँ ने दूध माँगने पर अपने बच्चे को आटा घोल कर दिया था ?

कृष्ण : हाँ, मैंने यह प्रसंग सुना है।

अश्वत्थामा : कृष्ण, तुम उनके लिये क्यों नहीं लड़े जो आज भी दूध की जगह आटा घोलकर पीने के लिये मजबूर हैं। तुम उनके लिए क्यों नहीं लड़े जिनके पास भोजन नहीं है, वस्त्र नहीं है, रहने को स्थान नहीं है ? तुम्हें तो लोग भगवान् कहते हैं! तुम चाहते तो युधिष्ठिर के राजभवन की तरह गरीबों की झोपड़ियाँ भी प्रकाश से जगमगा सकती थीं !

कृष्ण : सब अपने-अपने कर्मों से बँधे हैं। इसमें मैं क्या कर सकता हूँ।

अश्वत्थामा : कृष्ण, तुमने अपनी सारी शक्ति पाण्डुपुत्रों के पक्ष में लगा दी। अगर कर्मफल ही सत्य था तो तुमने पाण्डवों को उनके कर्मफल पर क्यों नहीं छोड़ दिया ?

कृष्ण : अश्वत्थामा, तुम आज धर्म की चर्चा कर रहे हो ? तुम धर्म के बारे में उस दिन क्यों चुप रहे जब शकुनी ने छल से पाण्डवों को जुए में पराजित किया ? उस दिन क्यों चुप रहे जब दुःशासन ने भरी सभा में द्रौपदी का अपमान किया ? तुमने रात में चोरों की तरह घुसकर पाण्डवों के बच्चों की हत्या की ! आज तुम धर्म-अधर्म की चर्चा कर रहे हो !

अश्वत्थामा : कृष्ण, मैं दुर्योधन का दास था। युद्ध मेरे लिये जीविका का सवाल था। एक दास धर्म-अधर्म की चर्चा नहीं कर सकता।

कृष्ण : द्रोणपुत्र, तुम एक अपात्र हो ! तुम्हारे साथ धर्म-अधर्म की चर्चा का कोई महत्व नहीं है।

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : महाराज कृष्ण, आपका रथ द्वार पर प्रस्तुत है।

कृष्ण : आर्य युधिष्ठिर और देवी द्रौपदी, अब मुझे आज्ञा दें।

(युधिष्ठिर उठकर खड़े होते हैं)

अश्वत्थामा : जाओ कृष्ण, पर तुमने जो बबूल बोये हैं, वे अब फल-फूल रहे हैं : तुम्हे एक और बांधव युद्ध देखना होगा ! तुम्हारे ही पापों से यदुवंशियों का नाश होगा !

कृष्ण : द्रोणपुत्र, मैं तुम्हारी शुभ कामनाओं को स्वीकार करता हूँ।

(कृष्ण का प्रस्थान)

अश्वत्थामा : आर्य युधिष्ठिर, अब मेरी साधना का समय हो गया है। कृपया मुझे जाने की अनुमति दें।

(नेपथ्य से आवाज) अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा! अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा! अश्वत्थामा हतो, नरो वा, कुंजरो वा।

युधिष्ठिर : बन्धु अश्वत्थामा, कृपया इस प्रेत-लीला को बन्द करो। इन आवाजों ने मुझे बहुत अस्थिर कर दिया है।

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, तुम अपने ही इतिहास से भयभीत हो! युद्ध के बीच कुशलता से बोला गया झूठ भी झूठ होता है। आज एक चिड़िया तुम्हारे ही शब्दों को दुहरा रही है।

द्रौपदी : आर्य अश्वत्थामा, धर्मराज ने धर्म के लिये शासन स्वीकार किया है। उनका विरोध, धर्म का विरोध होगा!

अश्वत्थामा : देवी, यह तुम्हारा दम्भ है! और युधिष्ठिर, ये आवाजे धरती के गर्भ से उठती हैं। इन्हें नहीं दबाया जा सकता।

(भीम का प्रवेश)

भीम : तू द्रोणपुत्र अश्वत्थामा है न? दुष्ट रंग पोतकर भिक्षुक बन गया है! पर मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा! चल मेरे साथ गदा युद्ध कर!

अश्वत्थामा : भीम, कृष्ण के शाप से मैं जर्जर हो गया हूँ। मैं तुमसे गदा युद्ध नहीं करूँगा।

भीम : दुष्ट! युद्ध से भागना चाहता है। पर मेरी गदा तेरे खून की प्यासी है। मैं दुर्योधन की तरह तेरी जंघा को तोड़ कर लाल-लाल खून पिऊँगा!

युधिष्ठिर : आर्य भीम, बन्धु अश्वत्थामा हमारे अतिथि है। ये सम्मान के पात्र हैं।

भीम : नहीं यह हमारा भयानक शत्रु है। इसका वध जरूरी है।

द्रौपदी : आर्य भीम, अश्वत्थामा गुरु द्रोण के पुत्र हैं। गुरू भाई होने के कारण इनका वध नहीं किया जा सकता।

भीम : ठीक है! जा पापी, नरक के कीड़े, तू एक बार और बच गया!

(भीम का प्रस्थान)

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर तुम मुझसे क्यों डरते हो! कृष्ण ने मेरे माथे की मणि छीन ली है। अब मैं युद्ध में बिलकुल असमर्थ हूँ।

युधिष्ठिर : आर्य अश्वत्थामा, एक भय मेरा लगातार पीछा कर रहा है।

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, इस युद्ध ने तुम्हे नये विश्वास नहीं, नये मूल्य नहीं, सिर्फ भय दिया है। तुम जिस सत्य की साधना करना चाहते हो वह सत्य युद्ध से नहीं, तपस्या से मिलता है।

युधिष्ठिर : शायद तुम ठीक कहते हो।

अश्वत्थामा : युधिष्ठिर, मैं तुम्हारे राज्य को छोड़कर जा रहा हूँ। लेकिन मेरे जाने के बाद भी कुछ प्रश्न और एक सन्नाटा बच जायेगा। यह सन्नाटा तुम्हें बहुत कष्ट देगा।

(अश्वत्थामा जाने तो तैयार होता है)

युधिष्ठिर : प्रतिहारी, द्रोणपत्र की कुटीर तक पहुँचा दो।

अश्वत्थामा : नहीं राजन्, मुझे तुम्हारे प्रतिहारी या रत्न जटित रथ की जरूरत नहीं है।

(अश्वत्थामा का प्रस्थान)

द्रौपदी : आर्य पुत्र, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा की बुद्धि बिलकुल विकृत हो गयी है। मणि खोकर ये बिलकुल पागल बन गये हैं।

युधिष्ठिर : देवी, लगता है कि मेरे मन में भी एक पागल अश्वत्थामा बैठ गया है। वह अनेक प्रश्न उठा रहा है। उन प्रश्नों का मेरे पास कोई उत्तर नहीं है।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, आप अश्वत्थामा की बातों की परवा न करे।

युधिष्ठिर : देवी, बंधु अश्वत्थामा ने ठीक ही कहा है—युद्ध से सत्य नहीं पैदा होता है; सत्य साधना की कोख से जन्म लेता है।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, आप तो सत्य के अवतार हैं।

युधिष्ठिर : नहीं देवी, हमारा सत्य अधूरा था। इस अर्धसत्य को हम नयी पीढ़ी पर नहीं थोप सकते। हमें नयी पीढ़ी को एक पूरा सत्य पाने का अवसर देना चाहिये।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, रात्रि अधिक बीत चुकी है। अब आप विश्राम करें।

युधिष्ठिर : नहीं देवी, सत्य के मार्ग में कहीं विश्राम नहीं है। आचार्य पुरोहित को बुला लो। कल सुबह के शुभ मुहूर्त में अभिमन्यु-पुत्र परीक्षित का राजतिलक होगा।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, यह आप क्या कह रहे हैं ?

युधिष्टिर : देवी, सत्य के लिये साधना जरूरी है। हम सत्य के संधान के लिये हिमालय की ओर प्रस्थान करेंगे।

द्रौपदी : आर्यपुत्र, आपका मार्ग, हमारा भी मार्ग होगा।

(युधिष्ठिर संकेत ध्वनि करते हैं)

पटाक्षेप

□□

अँधेरे की डाल

(एक मनोवैज्ञानिक ध्वनि एकांकी)

(आकाशवाणी पटना से प्रसारित)

पात्र-परिचय

	आयु
१. आशा	२४ वर्ष
२. अमित	२८ ,,
३. विभा	२५ ,,
४. अनवर भारती	५० ,,
५. लेडी डाक्टर	४० ,,
६. डाक्टर चौधरी	४२ ,,
७. डाक्टर जलोटा	५० ,,
८. रामी	२० ,,
९. नर्स	२४ ,,

अँधेरे की डाल

[१]

स्थान : डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल ।

समय : संध्या ४ बजे ।

विभा : वेल डाक्टर, इंटेसिव केयर यूनिट किधर है ?

डाक्टर चौधरी : इस कारीडोर के बाद टर्न राइट ।

विभा : थैंक यू डाक्टर !

चौधरी : आप किससे मिलना चाहती हैं ?

विभा : आशा वर्मा ! डू यू नो हर ?

चौधरी : येस, मैंने ही अटेंड किया है । शी इज़ इन रूम नम्बर टेन ।

विभा : थैंक यू डाक्टर ! वाई द वे हाऊ इज़ शी नाऊ ?

चौधरी : शी इज़ ओ के ! शी मे गो होम इन टू डेज़ !

विभा : एक्सक्यूज़ भी डाक्टर ! आशा को मेन ट्रबुल क्या था ?

चौधरी : इट वाज़ ऐन एबॉर्शन केस !

विभा : ओ सॉरी ! वेरी सारी !

चौधरी : यू कैन गो ऐंड मीट हर !

विभा : थैंक यू डाक्टर !

चौधरी : इट्स ऑल राइट ! नेक्स्ट पेशेंट !

(कारीडोर में चलने की आवाज)

विभा : एट''''नाइन''''ये रहा टेन ! वेल सिस्टर, इस रूम में आशा वर्मा हैं ?

सिस्टर : हाँ, वे यही हैं । आइये ।

(रूम में सिस्टर और विभा का प्रवेश)

विभा : हलो आशा !

आशा (थोड़ा कहरते हुए) कौन विभा ! ससुराल से कब आई रे ?

विभा : कल आई। पूरे दो साल के बाद मैके आने का परमिट बना।

आशा : कैसी है रे ?

विभा : ठीक हूँ। ससुराल से मूल के साथ सूद भी लाई हूँ।

आशा : बधाई ! कहाँ है ?

विभा : माँ के पास छोड़कर आई हूँ।

आशा : ठीक है। बिना वजह अस्पताल लाना उचित नहीं होता।

विभा : यह तेरा क्या हाल है ? अभी डाक्टर बड़ी भयानक बात कह रहा था।

आशा : डाक्क्टर ने ठीक ही कहा है।

विभा : पिछले साल तेरी शादी का कार्ड मिला था। मैं तो एक खुश-खबरी का इंतजार कर रही थी।

आशा : सब अपनी-अपनी किस्मत है।

विभा : लेकिन यह सब हुआ क्योंकर ? कुछ लापरवाही हो गयी थी !

आशा : नहीं रे, मैंने खुद एबार्शन कराया है।

विभा : क्या कह रही है ! भई, मुझे ऐसी आधुनिकता पसन्द नहीं है।

आशा : सवाल आधुनिकता का नहीं था। मजबूरी थी।

विभा : नानसेंस, ऐसी भी क्या मजबूरी थी।

(नर्स का प्रवेश)

नर्स : मैडम, बेबी को नहला-धुलाकर फीड दे दिया है। सो रहा है।

आशा : पालने में सुला दो। ठंड कुछ ज्यादा है। एक एक्सट्रा ब्लैंकेट डाल दो।

नर्स : ठीक है मैडम !

(पालने में बच्चे को सुलाकर नर्स चली जाती है)

विभा : क्यूँ रे, यह बेबी किसका है ?

आशा : मेरा। कैसा है ?

विभा : बड़ा सुन्दर बच्चा है। पर यह सब क्या गोरखधंधा है !

आशा : इसमें गोरखधंधा क्या है ?

विभा : तूने एबार्शन की बात कही थी। अब बगल में न्यू बार्न बेबी सुला रही है।

आशा : दोनो सच हैं।

विभा : क्यू रे, कोई पहेली बुझा रही है। या किसी नयी कविता की टाँग तोड़ रही है !

आशा : विभा, जिन्दगी की सच्चाई किसी भी कविता से अधिक विस्मयपूर्ण होती है।

विभा : नानसेंस ! कहीं पति महोदय से तकरार तो नहीं हो गयी।

आशा : ऐसी कोई बात नहीं है !

विभा : जरूर कोई गड़बड़झाला है। कहा है तेरा हसबेंड ? मैं उसी से सब कुछ पूछती हूँ।

आशा : अमित कालेज के काम से पटना गये हैं। शाम तक आयेंगे।

विभा : लगता है तू कोई बहुत बड़ा जूआ खेल रही है। पूरी जिन्दगी दाँव पर लगा बैठी है।

आशा : नहीं विभा, जिन्दगी ने ही मुझे दाँव पर लगा दिया है। जिन्दगी ने मुझको इतना सुख और इतना दुःख दिया हैं कि समझ में नहीं आता कि रोऊँ या हँसू !

विभा : क्यू रे तुझे तो सभी हँसी की फुलझड़ी कहते थे। शादी भी तूने अपनी पसंद से की है। फिर रोने का इतना डायलॉग कहाँ से ले आई !

आशा : विभा, एक जगमगाती हुई जिन्दगी अचानक बुझ गयी है।

हँसते हुए गुलाबों की घाटी पर घने बादल छा गये हैं। मैं प्रकाश के लिये बेतरह भटक रही हूँ।

विभा : मैं तेरे दुःख का कारण नहीं समझ पा रही हूँ।

आशा : मैं सबसे सब कुछ नहीं कह सकती। इससे लोग गलत धारणाएँ बना रहे हैं। लेकिन मन पर बहुत बोझ इकट्ठा हो गया है। आज तुझसे सब कुछ कहूँगी।

विभा : आशा, दुःख बाँटने से बहुत कुछ घट जाता है। मैं शायद तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।

आशा : मैं सहायता की सीमा से परे जा चुकी हूँ। मुझे केवल शुभ कामना चाहिये।

विभा : आशा, हो सकता है तेरी समस्या उतनी बड़ी न हो जितना तू समझ रही है।

आशा : विभा, मेले में एक चित्र बिक रहा था। चित्र में तस्वीरों के टुकड़े इस तरह जोड़े गये थे कि अलग-अलग कोणों से अलग-अलग तस्वीरें दिखाई पड़ती थी। लगता है कि अपनी जिन्दगी भी कुछ वैसी ही है।

विभा : आशा, सभी जिन्दगियाँ ऐसी ही होती हैं। पूर्ण जिन्दगी पाने के लिये सही कोण जरूरी है।

आशा : विभा, जिन्दगी के कई पन्ने उलट चुकी हूँ। क्या कहूँ मैं लोककथा की राजकुमारी का भाग्य लेकर आयी थी। एक अत्यन्त सुखी परिवार में इकलौती, लाडली खूबसरत सी डॉल। छोटी सी आशा सुख बिछाती और सपने ओड़ती थी। उसके एक-एक शब्दों में मंदिर की घंटियों की ताजगी थी। उसकी हँसी में घुँघरुओं की खनक थी।

सुन्दर गुड़िया में गुणों की भी कमी नहीं थी। ग्रेड वन से एम० ए० की परीक्षाओं में उसका प्रथम स्थान सुरक्षित था। डिबेट, संगीत, नृत्य, नाटक-सभी क्षेत्रों में आशा सबसे

आगे थी। उसे कविताओं का बड़ा शौक था। धीरे-धीरे वह खुद भी कविताएँ लिखने लगी। आगे चलकर कविता आशा वर्मा की सबसे बड़ी पहचान बन गयी।

उसे नगर के सबसे बड़े कालेज में लेक्चरर का पद मिल गया। अब और क्या चाहिये। जिन्दगी की बड़ी से बड़ी उँचाइयाँ बहुत पास दिखने लगीं।

विभा : आशा, अँग्रेजी में एक मुहावरा है—बार्न विथ ए सिल्वर स्पून इन द माउथ। तुम्हारे बारे में यही सच था।

आशा : यह चाँदी का चम्मच ही आगे चलकर कंठ में चुभने लगा। मैंने भी भगवान् बुद्ध की तरह दुःख का चेहरा नहीं देखा था। जब दुःख दिखाई पड़ा तो मैं बुरी तरह टूट गयी।

विभा : आशा, भावुक हृदय जल्दी आंदोलित होता है। वीणा के तारों की तरह बहुत देर तक स्पंदित रहता है।

आशा : विभा, तभी एक भयानक दुर्घटना घटी। बद्रीनाथ की यात्रा के समय हमारी कार पर एक बड़ी चट्टान टूट कर गिर गयी। मैं तुरंत बेहोश हो गयी। होश में आने पर अपने को अस्पताल में पाया। यह भी पता लगा कि मैं दुर्घटना में माता और पिता को एक साथ खो चुकी हूँ।

विभा : दुर्घटना की बात सुनी थी। एक अखबार में पूरा विवरण छपा था।

आशा : विभा, दुःख कभी अकेला नहीं आता। अस्पताल में रिहाई के बाद ही मैंने महसूस किया कि मेरी आँखों की शक्ति काफी घट गयो है। इसके बाद शुरू हुआ जाँचों का सिलसिला, एक स्पेशलिस्ट के बाद दूसरा स्पेशलिस्ट-दवाइयों के कोर्स। लेकिन किताबों के अक्षर धुँधलाते ही गये। मेरा आसमान दिनोदिन बदरंग होता गया।

[२]

स्थान : अलीगढ़—आँखों का अस्पताल ।

समय : सुबह दस बजे ।

डाक्टर जलोटा : लुक हीयर मिस वर्मा, ये हैं आपकी टेस्ट-रिपोर्टस् । मैंने प्रेस्क्रिप्शन भी लिख दिया है । विश यू गुड लक !

आशा : डाक्टर, इन रिपोर्टस् की भाषा मेरे समझ में नहीं आती । इन सभी टेस्टस् का नेट रिजल्ट क्या है ?

जलोटा : नेट रिजल्ट कहना बहुत मुश्किल है । मिस वर्मा यू हैव टू स्ट्रगल अगेन्स्ट ए डिफिकल्ट डिजीज ।

आशा : डाक्टर, मैं आपको अपनी हिस्टरी बता चुकी हूँ । कोई कह रहा था कि मोटर एक्सिडेंट में आँख की कोई नर्व डैमेज्ड हो गयी है ।

जलोटा : कोई जरूरी नहीं है । आपकी बीमारी के बारे में हमारी पुस्तकों में लिखा है—काज नाट नोन ! इसे एक अनकौंकर्ड डिज़ीज़ कहा जा सकता है ।

आशा : डाक्टर, मैं एक कालेज में लेक्चरर हूँ । अपना अच्छा-बुरा समझती हूँ । प्लीज टेल मी द ट्रुथ !

जलोटा : मिस वर्मा, सचाई कभी-कभी बहुत कड़वी और क्रूर होती है । तुम्हारी आँखों की रोशनी धीरे-धीरे विदा ले रही है ।

आशा : लेकिन डाक्टर..... ।

जलोटा : अधिक से अधिक एक वर्ष—उसके बाद पूरा अंधेरा ! मिस वर्मा तुम्हें एक अँधेरी दुनिया के साथ सुलह करना होगा ।

आशा : नहीं डाक्टर, ऐसा नहीं हो सकता ।

जलोटा : डोंट लूज हार्ट, मिस वर्मा, तुम एक बहुत टैलेंटेड लेडी हो । टेक इट ऐज ए चैलेंज !

आशा : लेकिन डाक्टर, आपने मुझे एक प्रेस्क्रिप्शन दिया है ?

जलोटा : मिस वर्मा, मेडिकल साइन्स में सरेन्डर नाम का शब्द ही नहीं है। हमें अंतिम साँस तक संघर्ष करना पड़ता है।

आशा : ठीक है डाक्टर ! जा रही हूँ। थैंक यू फोर द एक्सट्रा केयर !

जलोटा : बेबी, खत लिखते रहना। जरूरत पड़ने पर फोन करना। आई ऐम ए बिलीवर ! में गॉड ब्लेस यू !

पहले दृश्य की पुनरावृत्ति

विभा : यह कब की घटना है ?

आशा : करीब आठ महीने बीत गये। तब से मैं पूरे फिफ्टी परसेंट आई-साइट खो चुकी हूँ !

विभा : बहुत दुःख की बात है !

आशा : पहले मैं बहुत दुःखी हुई। दिन-रात रोती रहती थी। लेकिन धीरे-धीरे सँभल गयी। मैंने कहा — नहीं, यह एक चुनौती है। हार नहीं मानूँगी।

विभा : तुम एक कवियित्री हो। तुम्हारे जैसे लोग जिन्दगी से जूझना जानते हैं।

आशा : हाँ विभा, कविता ने मुझे बड़ी शक्ति दी। मैंने जिन्दगी को नये सिरे से पहचानना शुरू किया। मुझे पता लगा कि ईश्वर ने शरीर ही नहीं, मन में भी आँखे दी हैं। मेरे सामने प्रकाश का नया सरोवर लहरा रहा था।

विभा : आशा, यू आर ए ग्रेट गर्ल ! तुमने एक दुःख के क्षण को सुख में बदल दिया !

आशा : जानती हो, इसके बाद मैंने बहुत आक्रामक कविताएँ लिखीं ? दुःख और सुख के बीच मानवीय नियति की भूमि है। वहाँ खड़े होकर मैंने जिस दुःख का साक्षात्कार किया वह सिर्फ मेरा दुःख नहीं था। मानवीय करुणा की तूलिका से मैंने दुःख को सँवारा और बड़े तीखे चित्र प्रस्तुत किये।

इन कविताओं ने मुझे लोकप्रियता के ऊँचे शिखर पर बिठा दिया। मैं अचानक जिन्दगी के एक ऐसे मोड़ पर खड़ी हो गयी जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी।

[३]

स्थान : एक कवि-गोष्ठी।

समय : संध्या आठ बजे !

(**हल्का सा कलरव**)

अनवर : हाजरीन, शेरो शायरी की यह खूबसूरत शाम कई मंजिलें तय कर चुकी है। इसे अलविदा कहने से पहले हम इस महफिल की रौनक, शायरा मिस आशा वर्मा को आपके सामने पेश कर रहे हैं। आशा जी ने जिन्दगी को आमने-सामने रूबरू देखा है। उनकी कविताओं में हिन्दी-उर्दू का मिला-जुला खूबसूरत अंदाज है।

आशा जी, आज आप क्या सुनाएँगी ?

आशा : एक हिन्दी गज़ल पेश कर रही हूँ।

अनवर : वाह-वाह, क्या बात है ?

आशा : (**मोटे सुरों में**)

एक सितारा माँगा था, आसमान दे डाला,
प्यार ने मुझे पूरा एक जहान दे डाला।
मंजिलों ने खुद बढ़कर उसके पाँव चूमे है,
जिसने दिल की राहों में इम्तिहान दे डाला।
मैंने प्रेम की खातिर घर लुटा दिया अपना,
दिल कहाँ है सीने में, दिल को दान दे डाला।
आयना बनी हूँ मैं आपकी अदाओं की,
आपने अपना मुझे, हर निशान दे डाला
मैं तो सिर्फ मीरा थी, टूटा इक तारा थी,
साँवरे की वंशी ने, मुझको तान दे डाला।

(तालियों की गड़गड़ाहट)

अनवर : दोस्तों, इस गज़ल के साथ आज की रंगीन महफिल खत्म होती है। हम सभी कवियों-शायरों खासकर मिस आशा वर्मा को आज की शिरकत के लिये तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

(हल्का सा कलख)

अमित : बधाई मिस वर्मा। आपकी कविताओं में गज़ब का जादू है।

आशा : अरे अमित जी, आप भी मौजूद हैं ?

अमित : अरे, आपको क्या मालूम, आप तो अपनी ही गज़ल के सुरों में डूबी हुई थीं। कविता पढ़ते समय आप कहीं दूर, किलकुल सितारों में पहुच जाती है।

आशा : ओ माई गॉड ! इतना ऊपर मत चढ़ाइये अमित जी ! कहीं सितारों ने ढकेल दिया तो गिर कर चकनाचूर हो जाऊँगी। (हंसती है)

अमित : नहीं-नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा ! सितारे आपकी हकीकत को जानते हैं। आपकी कविता एक पुल है—आसमान और ज़मीन के बीच फूलों का खूबसूरत पुल !

आशा : अरे बाप रे ! आपने तो गज़ब कर दिया। अमित जी आप साइंस के प्रोफेसर है। देखती हूँ कि प्रयोगशालाओं के बीच आप कविताओं से भी छेड़छाड़ कर लेते हैं।

अमित : विज्ञान की प्रयोगशालाओं में कविताओं को ढूँढना असम्भव है। वहाँ तरह-तरह के रसायन हैं—उनकी कड़वी गन्ध है। इसलिये उनके बाहर निकलकर मैं तलाश करता हूँ—फूलों की खुशबूँ, फूलों की दास्तान, फूलों में बसी खूबसूरत हस्ती !

आशा : अमित जी, आपकी बातों में कहीं रसायन की गन्ध नहीं है।

अमित : आशा जी, मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ, उसके लिये मेरे पास भाषा नहीं है। अपनी गज़लों से मुझे कुछ शब्द उधार दीजिये। आशा जी, मैं आपको प्यार करता हूँ !

क्या आप मुझे स्वीकार करेंगी ?

आशा : यह आप क्या कह रहे हैं ! यह बिलकुल असम्भव है !

अमित : मैं अपनी सीमाएँ जानता हूँ। फिर भी हर आदमी को सपने देखने का हक है। आशा जी, आप मेरे सभी सपनों से बेतरह जुड़ गयी हैं।

आशा : अमित जी, मैं आपकी सीमाओं को नहीं जानती। लेकिन मेरी अपनी मजबूरियाँ है—मेरे लिये सभी रास्ते बन्द है।

अमित : कोई भी मजबूरी आदमी से बड़ी नहीं होती।

आशा : नहीं-नहीं, मेरी मजबूरी मुझसे बहुत बड़ी है। मैं झूठे सपने नहीं पाल सकती।

अमित : आशा जी, आप मेरे प्रस्तावपर सोच-विचार कर फैसला करें। मैं आपके लिये इन्तजार कर सकता हूँ।

आशा : किसी तरह के सोच-विचार से कुछ होने वाला नहीं है। अमित जी, मेरे लिये विवाह का कोई अर्थ ही नहीं रह गया है।

अमित : यह आप क्या कह रही है !

आशा : मैं आपको झूठे भ्रम में नहीं रखना चाहता ! ऐक्सिडेंट के बाद मेरी आई-साइट दिनों दिन घट रही है। एक डाक्टर के मुताबिक इस साल के अन्त तक मेरी आँखों के चिराग बिलकुल बुझ जायेंगे !

अमित : आशा जी, मुझे सब कुछ मालूम है। लेकिन तन से परे मन की आँखें होती हैं। उनकी ज्योति कभी मलिन नहीं होती।

आशा : नहीं-नहीं, मैं आपको जान-बूझकर अपने नरक में नहीं ले जाऊँगी।

अमित : आशा जी, स्वर्ग हो या नरक, मैं खुली आँखों वरण कर रहा हूँ। हम दोनों की किस्मत जुड़ गयी है। स्वर्ग के देवता भी हमारे सुख से ईर्षा करेंगे !

आशा : अमित जी, आप सचमुच स्वर्ग के भटके हुए देवता है। लेकिन ठहरिये, मुझे सभी स्थितियों पर विचार करने दीजिये।

अमित : नहीं आशा, अब सोचना क्या है ! आँख उठा कर देखो, पूर्ण-मासी का चाँद हमें आशीर्वाद दे रहा है। आकाश के सभी सितारे रोशनी के अक्षत छींट रहे हैं।

पहले दृश्य की वापसी

आशा : अमित के परिवार में इस प्रस्ताव का बड़ा विरोध हुआ। मेरी आँखों की बात सबको मालूम हो गयी थी। लेकिन अमित विचलित नहीं हुआ। उसके हठ के सामने सब झुक गये।

विभा : परिवार का दृष्टिकोण बहुत अस्वाभाविक नहीं था।

आशा : तुम ठीक कहती हो। लेकिन अमित ने अपने सभी वायदों को पूरा किया। मैंने इतने सुख की कल्पना भी नहीं की थी। कविता और जिन्दगी समानान्तर हो गयी थी। चारो ओर सुख की फुहारें उड़ रही थीं और मैं धरती से बहुत दूर आकाश गंगा में कमल के फूल चुन रही थी।

विभा : अमित इज़ रीयली ए ग्रेट लवर। सभी मजबूरियों के बावजूद उसने तुम्हें एक पूरी जिन्दगी दी।

आशा : सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसने एहसान नहीं दिखाया। उसने सहानुभूति की बात भी नहीं कही। अगर वह मुझे सहा-नुभूति देता तो मेरा प्रेम बहुत छोटा हो जाता।

विभा : हाँ यह सचमुच बहुत बड़ी बात है।

आशा : लेकिन एक काला ग्रह हमारा लगातार पीछा कर रहा था। सुख के चरम क्षणों में भी मैं महसूस करती—नहीं, यह सब कुछ सच नहीं है। सुख नहीं, दुःख सच है। रोशनी के छोटे से टुकड़े के बाद अँधेरे का अखंड विस्तार है।

एक दिन अमित से बात करते-करते मैं रोने लगी। उसने कारण पूछा। कारण क्या था—अचानक मुझे लगा कि कुछ महीनों के बाद मैं अमित के सुन्दर चेहरे को नहीं देख पाऊँगी! जानती हो अमित ने सुनकर क्या कहा—

अमित (उसी के स्वर में) नहीं आशा, ऐसा कभी नहीं होगा ! चलो आँख मूँदो, देखो मैं तुम्हें दिखाई पड़ता हूँ या नहीं । आशा, आँख बन्द होते ही मन की आँखें खुल जाती हैं । आदमी का चेहरा और भी ज्यादा साफ दिखाई पड़ता है ।

आशा : उस तर्क का मेरा पास कोई जवाब नहीं था ।

विभा : आशा, यू आर फार्चूनेट ! वेरी फार्चूनेट !

आशा : जानती हो एक दिन मैंने उसके सामने एक भारी भरकम माँग रख दी !

विभा : कैसी माँग ! तुमने जेवर-कपड़ा तो नहीं ही माँगा होगा !

आशा : नहीं विभा, मुझे ज़ेवर-कपड़ों का कभी शौक नहीं रहा । मैंने उसे कहा कि अमित, मेरी जिन्दगी में अँधेरा पाख लगने ही वाला है । आँखों को खोने से पहले मैं कम से कम पूरा देश देख लेना चाहती हूँ । देश की नदियाँ-पहाड़-तीर्थ-दर्शनीय स्थान-सब कुछ !

इस प्रस्ताव ने अमित को दुविधा में डाल दिया । एक छोटे से फ्लैट की खरीदारी ने हमारी आर्थिक हालत बहुत पतली कर दी थी । फिर अमित रिसर्च कर रहा था, उसके अपने खर्चे थे । लेकिन उसने ना नहीं किया । पी० एफ० से कर्ज लेकर हम दो-तीन महीनों के लिये दूर पर निकल गये ।

विभा : सी यू हैंड ए नाइस हनीमून ।

आशा : उसे हनीमून मत कहो । वह मेरा दूसरा बचपन था । हमने कश्मीर की बर्फ पर घंटों स्केटिंग की । कन्याकुमारी के तट पर उगते और डूबते सूर्य का दर्शन किया । दक्षिण के मंदिरों ने तो मुझे अपने वैभव से आवाक् ही कर दिया । मैंने इतना सुख कभी नहीं पाया था । पुरी में समुद्र की नटखट लहरों पर छलांग लगाते समय एक अत्यन्त अराजक इच्छा मन में आई । कितना अच्छा हो अगर ऐसी ही एक पागल लहर मुझे हमेशा

के लिये समेट कर ले जाये। इतने सुख के बाद किसे जीने की इच्छा होती है!

विभा : हाँ आशा, अधिक सुख नशा पैदा करता है।

आशा : किन्तु वह नशा जल्दी ही टूट गया। एक दिन की बात है····

[४]

स्थान : आशा का फ्लैट।

समय : संध्या ४ बजे।

भिखारिन की आवाज : माँ पैसा दे! बाबा पैसा दे। ईश्वर, तुम्हारे बाल-बच्चों को सलामत रखे!

अमित : माई गॉड, ये भिखमँगे बहुत डिस्टर्ब करते हैं। कोई भी काम करना मुश्किल है।

भिखारिन : भइया, अँधी भिखारिन दरवाजे पर खड़ी है। ईश्वर तुम्हारे बाल-बच्चों को सलामत रखे!

(आशा का प्रवेश)

आशा : लो, यह पैसे! देखो, इस दरवाजे पर इतने शोर की जरूरत नहीं है:

भिखारिन : बहन, तुम मुझे नहीं जानतीं। मेरी माँ तुम्हारे मैके में चौका बर्तन करती थी। मैं सुखिया की बेटी रामी हूँ!

आशा : रामी! अच्छा-अच्छा याद आया! लेकिन तू भीख क्यों माँग रही है!

रामी : अपनी-अपनी किस्मत है बहन! आँख बन्द होते ही मरद की आँख बदल गयी। उसने दूसरी औरत रख लिया।

आशा : माई गॉड, यह तो बहुत बुरी बात है। लेकिन रामी, तेरी आँख कब खराब हुई?

रामी : करीब दो साल पहले की बात है! आँख से खून बहने लगा। ईलाज किया, ठीक हो गया। लेकिन फिर वही हुआ। साल भर में आँख बिलकुल चली गयी!

आशा : ए जी सुनते हो !

अमित : क्या कह रही हो ?

आशा : इसे भी वही आँख की बीमारी थी ! शी इज़ नाऊ टोटली ब्लाइंड !

अमित : आशा, उसे कुछ दे दो। बेगरसू को इतना एनकरेज मत करो।

आशा : अमित मैं इसे जानती हूँ। यह मेरी माँ की महरी की बेटी रामी है।

रामी : भइया, ईश्वर तुम्हारे बाल-बच्चों को सुखी रखे !

आशा : लेकिन रामी, हमारी अभी शादी हुई है। अभी तो हमी बच्चे हैं !

रामी : अच्छा बहन, ईश्वर जल्दी तुम्हारी गोद भरेगा ! दूधो नहाओ, पूतो फलो !

अमित : गुड, तुम्हारी रामी ने तुम्हें जबरदस्त आशीर्वाद दिया है !

आशा : डोंट बी सिली, अमित !

अमित : अच्छा रामी, हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं !

रामी : भैया, बड़ी भूख लगी है। पेट भर खाना खिला दो !

अमित : ठीक है। आशा, गिव हर फूड ! ऐंड आस्क हर टु गो !

आशा : जा रही हूँ !

अमित : जानती हो, शी इज़ कैरिइँग ए बेबी ! पता नहीं, किसका पाप ढो रही है !

रामी : भइया, यह पाप नहीं है ! यह मेरे प्यार का फूल है ! इसने ही गरीब रामी को जीने के लिए मजबूर किया है !

आशा : रामी, लो यह तुम्हारा भोजन है ! एक ठोंगे में पैक कर दिया है !

रामी : ईश्वर तुम्हें सुखी रखे ! बहन, दूधो नहाओ, पूतो फलो !

(रामी का प्रस्थान)

अमित : ये अनपढ़ लोग बड़े ईडियट होते हैं। खाने का ठिकाना नहीं पर देश की जनसंख्या बढ़ाने पर तुले हुए हैं। दिस इज़ ए फिट केस फॉर फैमिली प्लानिंग !

आशा : ऐसा मत कहो अमित ! इन लोगों में भी जीने की इच्छा होती है। अपने बच्चों को जन्म देने के लिए रामी कितना कष्ट भोग रही है।

अमित : आशा, यू आर वेरी साफ्ट टू हर ! हर भिखमंगे की बात सुन-कर पिघल जाती हो !

आशा : नहीं अमित, रामी ने मुझे भयभीत कर दिया है !

अमित : लगता है तुम्हारे ऊपर फिर मेलेंकोलिया का दौर सवार हुआ !

आशा : नहीं—नहीं, एक दूसरी बात कह रही हूँ। अमित, अगर मुझे माँ बनना है तो आँखों के चिराग गुल होने के पहले मुझे माँ बन जाना चाहिये !

अमित : आशा, यह क्या कह रही हो !

आशा : अमित, अपनी मजबूरियाँ ही मुझे ऐसा सोचने के लिए विवश कर रही हैं !

अमित : आशा, पढ़े-लिखे लोग सब कुछ प्लैन करते हैं। इस साल मुझे अपनी थीसिस पूरी करनी है। इफ़ यू गो द फैमिली वे, देयर वुड बी टोटल केआस !

आशा : ठीक है अमित, मैं अपना प्रस्ताव वापस ले लेती हूँ !

अमित : आशा !

आशा : रामी अपने बेटे का मुँह कभी नहीं देख पायेगी ! मेरे साथ भी यही होगा। एनी वे सब ठीक है ! जिन्दगी में सब चलता है (सिसकती है)

अमित : आशा, तुम रो रही हो ! लेकिन मैं तुम्हें रोने नहीं दूँगा ! लो मैं तुमसे वादा करता हूँ। मेक योर ओन प्रोग्राम ! तुम्हारी

खुशियाँ खरीदने के लिए मैं सब कुछ दे सकता हूँ ! सब कुछ कर सकता हूँ !

पहले दृश्य की पुनरावृत्ति

आशा : विभा, मेरी योजना बहुत जल्दी रंग लायी ! लेडी डाक्टर से कंफर्म होते ही मैं खुशी से झूम उठी !

विभा : आशा, पहला मातृत्व बहुत एक्साइटिंग होता है !

आशा : मेरी तो जिन्दगी ही बदल गयी ! मैं एक अनोखी अनुभूति की तरंगों में बह रही थी ! मुझे कभी-कभी लगता कि मैं सृष्टि की पहली माँ हूँ और जो कुछ घट रहा है, अभूतपूर्व है।

अमित भी बहुत खुश था। हम अनेक योजनाएँ बनाते रहते थे। मैंने बच्चों के सैकड़ों कपड़े सिल डाले, बच्चों पर अनेक पुस्तकें पढ़ी और आने वाले शिशु पर अनगिनत कविताएँ लिख डाली।

लेकिन तभी एक भयानक भूकम्प फट पड़ा। अस्पताल में रूटीन चेक-अप के समय एक बहुत कड़वा यथार्थ सामने आया····

[५]

स्थान : अस्पताल।

समय : सुबह दस बजे।

लेडी डाक्टर : मिसेज वर्मा, सब कुछ ठीक है ! यू आर ए हेल्दी वुमन ! नो प्राब्लम फार यू !

आशा : थैंक यू डाक्टर !

(**डाक्टर चौधरी का प्रवेश**)

चौधरी : यू आर आशा वर्मा, आई रिमेम्बर ! एक्सपेक्टिंग ए बेबी !

आशा : येस डाक्टर।

चौधरी : आपकी आँख कैसी है ?

आशा : आई ऐम लूजिंग इट वेरी फास्ट !

चौधरी : मिसेज वर्मा, तेक केयर। आँख की ये बीमारी कभी-कभी हेरेडिटरी होती है ! योर बेबी मे बी बार्न ब्लाइंड !

आशा : नहीं डाक्टर, यह असंभव है ! ऐसा कभी नहीं हो सकता !

चौधरी : ईश्वर की मर्जी ! मे गॉड ब्लेस यू !

[६]

स्थान : अमित का फ्लैट।

समय : संध्या ४ बजे।

अमित : आशा, उठो; डाक्टर ने निश्चयात्मक कुछ नहीं कहा है। अंग्रेजी में 'मे' के माने 'हाँ' और 'नहीं' दोनो हो सकता है।

आशा : नहीं अमित, डाक्टर ने सब कुछ कह दिया है। सब कुछ खत्म हो गया; एवरी थिंग इज़ ओवर नाऊ !

अमित : आशा, हिम्मत छोड़ने की जरूरत नहीं है।

आशा : नहीं अमित, मैं रिस्क नहीं ले सकती। एक अंधे बच्चे को जन्म देने से बढ़कर पाप क्या हो सकता है !

अमित : आशा, डाक्टर चौधरी इज़ नॉट ए स्पेशलिस्ट ! मैं स्पेशलिस्ट से कंसल्ट करता हूँ।

आशा : कुछ नहीं हो सकता। किस्मत के लेखे को कौन टाल सकता है ! सब कुछ खत्म हो गया।

अमित : आशा, टेक करेज। डोंट लूज़ हार्ट !

(कुछ दूर पर शोरगुल)

अमित : यह कैसा शोर है ! लगता है कोई एक्सीडेंट हो गया है ! पता लगाता हूँ !

(अमित बाहर जाता है। कुछ क्षणों के बाद लौटकर आता है)

अमित : आशा, एक सीरियस दुर्घटना हो गयी है ! तुम्हारी रामी को एक ट्रक ने 'नौक' कर दिया ! बेचारी बुरी तरह जख्मी हो गयी है ! पूअर वुमन, उसके दिन पूरे हो गये थे !

आशा : रामी ! वह अँधी लड़की मोटर से टकरा गयी ! हर अन्धे की यही नियति होती है ।

अमित : आशा, ऐक्सिडेंट तो किसी के साथ हो सकता है ।

आशा : तुम इस दुःख को नहीं जानते ! जानते हो अमित, हमारा अँधा बच्चा भी इसी तरह मोटर से टकरा जायेगा । ये दैत्याकार बसे उसे कुचल कर रख देगी !

अमित : आशा, यह क्या कह रही हो ? एक सम्भावित दुःख ने तुम्हें असामान्य कर दिया है !

आशा : मैं बिलकुल सामान्य हूँ । अमित, मैंने नरक से सुलह कर लिया है ! लेकिन अपने बच्चे को इस नरक की आँच नहीं लगने दूँगी ।

अमित : आशा, होश में आओ !

आशा : स्वर्ग के देवताओं, मैं तुमसे क्षमा माँगती हूँ । मेरे अजन्मे शिशु, तुम भी मुझे क्षमा कर दो । मैंने तुमको नहीं देखा है । तुम्हें अब कभी नहीं देख सकूँगी । अमित, तुम भी मुझे क्षमा करना। इतिहास एक बार फिर अपने को दुहरा रहा है । एक शैंव्या एक बार फिर अपने बच्चे के शव को लेकर मरघट जा रही है।

अमित : आशा, तुम्हें क्या हो गया है ?

आशा : कुछ नहीं हुआ है । मैं बिलकुल ठीक हूँ ! मुझे कुछ नहीं हुआ है !

अमित : आशा, अपने को सँभालो । हो सकता है कि स्थिति इतनी निराशाजनक न हो ! मैं अलीगढ़ के डाक्टर से टेलीफोन पर बात करता हूँ । लेकिन बीच में कोई पागलपन मत करना ।

पहले दृश्य की पुनरावृत्ति

विभा : उसके बाद !

आशा : मैंने अमित के लिये इन्तजार नहीं किया । मैं जोखिम नहीं उठाना चाहती थी । अनन्त दुःखो के जबड़ों से बच्चे की रक्षा के लिए मैंने खुद सभी दरवाजे बन्द कर दिये !

विभा : तुमने जल्दीबाजी से काम लिया। तुम्हें अमित के लिये इन्तजार करना चाहिये था।

आशा : रामी की घटना ने मुझे बहुत अपसेट कर दिया। आपरेशन के बाद जब मुझे होश आया तो अमित बगल में बैठा हुआ था।

[७]

स्थान : अस्पताल।

समय : संध्या ४ बजे।

अमित : यह तुमने क्या किया आशा। जानती को स्पेशलिस्ट ने क्या कहा ! बीमारी की सम्भावना पच्चीस परसेंट से अधिक नहीं होती !

आशा : अमित, मैं पाँच परसेंट का भी रिस्क नहीं चाहती थी !

(डाक्टर चौधरी का प्रवेश)

चौधरी : अब कैसी है, मिसेज वर्मा !

आशा : ठीक हूँ। डाक्टर चौधरी, मीट माई हसबेंड, प्रो, अमित कुमार।

चौधरी : वेरी ग्लैड टू सी यू। अमित जी, योर वाइफ़ इज़ ए ग्रेट वुमन ! ऐसा कठोर निर्णय लेना आसान नहीं था ! ।

(नर्स का प्रवेश)

(अमित का प्रवेश)

नर्स : डाक्टर, उस अंधी औरत के बच्चे का क्या किया जाय। अनाथालय के लोग माँग रहे हैं।

आशा : नर्स, उस औरत का क्या नाम था ?

नर्स : रजिस्टर में रामी लिखा है। बेचारी एक एक्सीडेंट का शिकार हो गयी। लेकिन उसने एक बहुत सुन्दर बच्चे को जन्म दिया है !

आशा : नर्स, उस बच्चे की आँख ठीक है न ?

नर्स : बिलकुल ठीक है। बहुत सुन्दर आँखें हैं।

डाक्टर : पुअर वुमन ! अपने बच्चे को नहीं देख सकी !

नर्स : डाक्टर, बच्चे का क्या किया जाय ?

आशा : डाक्टर चौधरी, बच्चे को मैं गोद लेना चाहती हूँ।

चौधरी : आप गोद लेंगी ! हर मदर वाज़ ए बेगर !

आशा : इससे क्या फर्क पड़ता है ! अमित, तुम्हें प्रस्ताव पसंद है न ?

अमित : नॉट बैड ! रादर ए गुड आइडिया !

चौधरी : ठीक है। नर्स, सभी फार्मेलिटीज पूरी कर लो। बच्चा मिसेज आशा वर्मा की कस्टडी में दे दिया जाय।

अमित : थैंक यू डाक्टर ! आशा को एक फुल टाइम जॉब मिल जायगा।

आशा : अमित, मैं उसकी माँ बनूँगी ! मदरहुड एक फुल टाइम जॉब से बड़ी चीज़ होती है !

पहले दृश्य की वापसी

विभा : आशा, तुम सचमुच एक नरक से गुजर चुकी हो।

आशा : विभा, तुम ठीक कहती हो ! मैं सचमुच अपना नरक झेल चुकी हूँ। लेकिन इस बच्चे का मुँह देखकर मैं अपना सारा दुख भूल गयी हूँ !

(अमित का प्रवेश)

आशा : आओ अमित ! इनसे मिलो ! ये हैं मेरी बचपन की सहेली, विभा !

अमित : नमस्कार, आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

विभा : मैं तो घंटों से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। इस बीच एक पूरी दास्तान सुन ली।

अमित : देखिये विभा जी, जरा आशा को समझाइये। अपनी बीमारी को लेकर बहुत कुंठित हो गयी है !

आशा : नहीं अमित, कहीं कोई कुंठा नहीं है !

अमित : आशा, देयर इज़ गुड न्यूज़ फार यू। तुम्हारी पुस्तक 'बचपन के गीत' पर अकादमी ने सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार घोषित किया है !

विभा : कांग्रेचुलेशंस ! आशा हार्टी कांग्रेचुलेशंस !

अमित : आशा, यू आर नाऊ ऐट द पीक ऑफ योर कैरियर। अब क्या चाहिये ! अब भी कोई कुंठा बच गयी है !

आशा : नहीं, मुझे सब कुछ मिल गया है। अमित, अंधेरे की डाल में प्रकाश के अगणित फूल लग गये हैं। मेरे आँगन में इतना प्रकाश भर गया है कि अंधेरे के लिए कोई जगह नहीं है···कहीं कोई जगह नहीं है···!

(एक नवोदित शिशु के रोने की आवाज)

(पटाक्षेप)

●

□□

कोई जगह खाली नहीं है।

(एक व्यंग एकांकी)

(आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम में प्रसारित)

पात्र-परिचय

	आयु
१. लक्ष्मी शंकर—एक बेकार युवक	२४ वर्ष
२. मरघट का मुंशी	५० ,,
३. पहला शवयात्री	३० ,,
४. दूसरा शवयात्री	३५ ,,
५. तीसरा शवयात्री	४० ,,
६. हेडमास्टर शीतल बाबू	५५ ,,
७. यमराज	एक प्रौढ़ व्यक्ति

कोई जगह खाली नहीं है।

[१]

स्थान : शहर का मरघट

समय : संध्या छह बजे

(मरघट के मुन्शी जी बैठकर रजिस्टर में कुछ लिख रहे हैं)

(लक्ष्मीशंकर का प्रवेश)

लक्ष्मी : बड़े बाबू !

मुंशी : (रजिस्टर से सिर उठाकर) कहो !

लक्ष्मी : बड़े बाबू, आप मरघट के मुंशी हैं न ?

मुंशी : हाँ, मुरदे का नाम बोलो।

लक्ष्मी : मेरा नाम लक्ष्मी शंकर है।

मुंशी : मुझे तुम्हारा नाम नहीं चाहिये। मुर्दे का नाम, वल्दियत, रहने की जगह बोलो।

लक्ष्मी : मैं किसी मुर्दे के साथ नहीं आया हूँ। आपके रजिस्टर में अधमरे लोगों का कॉलम हो तो मेरा नाम लिख लीजिये।

मुंशी : अजब आदमी हो ! कहीं मुर्दाघाट में मज़ाक किया जाता है ?

लक्ष्मी : बड़े बाबू, जिन्दगी का अन्तिम मज़ाक यहीं होता है।

मुंशी : देखो भाई, मुझे बहुत काम है। मेरा वक्त बरबाद मत करो।

लक्ष्मी : माफ़ कीजिये। मैं आपके पास एक सूची लेने आया हूँ।

मुंशी : कैसी सूची ?

लक्ष्मी : यहाँ पिछले महीने जितने लोग मरे, मैं उनका नाम, पता और पेशे का विवरण चाहता हूँ।

मुंशी : अच्छा, तो तुम रिसर्च स्कॉलर हो। मुर्दों की गिनती करके मुफ्त में पी० एच० डी० लेना चाहते हो !

लक्ष्मी : माफ कीजिये, मैं पी० एच० डी० की डिग्री ले चुका हूँ। मुझे अब डिग्री नहीं, नौकरी चाहिये।

मुंशी : नौकरी ! अगर तुम्हे नौकरी चाहिये तो तुम किसी स्कूल या कॉलेज में कोशिश क्यों नहीं करते ?

लक्ष्मी : मैं यूनिवर्सिटी से नगरपालिका के प्राइमरी स्कूल में कोशिश कर चुका हूँ। कहीं कोई जगह नहीं है। सभी जगह 'नो वेकैंसी' की तख्ती लगी हुई है।

मुंशी : इस शहर में कई कल-कारखाने हैं। वहाँ खोजने से काम मिल सकता है।

लक्ष्मी : मेरे जैसे हजारों उम्मीदवार चक्कर लगा रहे हैं। पर हर आफिस या फैक्टरी के सामने यही लिखा है ! 'कृपया परेशान न करें; कोई जगह खाली नहीं है।'

मुंशी : सुनो, तुम 'काम दिलाओं दफ्तर' में क्यों नहीं जाते। वहाँ जाने से कुछ काम बनेगा।

लक्ष्मी : वह तीरथ भी देख देख चुका हूँ। लोग पाँच-पाँच साल से वेटिंग-लिस्ट में पड़े हुए हैं।

मुंशी : मुझे सख्त अफसोस है; पर भाई मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ।

लक्ष्मी : आपको कुछ नहीं करना है। मैं आपके रजिस्टर से पिछले महीने भरे हुए लोगों का नाम, पता और पेशा नोट कर लूँगा। कम से कम यह तो मालूम हो कि वेकेन्सी कहाँ है !

मुंशी : सुनो भाई, मैं तुम्हें रजिस्टर देने के लिये तैयार हूँ। पर एक महीने की बासी सूची तैयार करने से क्या होगा ?

लक्ष्मी : आप कहना क्या चाहते हैं ?

मुंशी : देखो भाई, यह मेहनत बिलकुल बेकार है। कोई भी जगह एक महीने तक खाली नहीं रहती।

लक्ष्मी : आप ठीक कहते हैं। फिर आप क्या सलाह देते हैं ?

मुंशी : मैं तुम्हारे लिये एक कुर्सी डाल देता हूँ। तुम यहीं बैठ जाओ। शहर में बीमारी फैली हुई है। शाम तक एक ताज़ी सूची बन जायगी।

लक्ष्मी : जी हाँ, ठीक है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

[२]

स्थान और समय : वही।

('राम नाम सत्य है' की सामूहिक आवाज)

पहला शवयात्री : मुंशी जी!

मुंशी : हाँ, मुर्दे का नाम बोलो!

प० श० : सुदामा प्रसाद।

मुंशी : वल्द?

प० श० : गोविन्द प्रसाद!

मुंशी : साकिन मुहल्ला?

प० श० : गौसगंज

मुंशी : पेशा?

प० श० : शिक्षक। नगरपालिका के प्राइमरी स्कूल में पढ़ाते थे। कई महीने से बीमार थे। ठीक से इलाज न होने से मर गये।

लक्ष्मी : माफ़ कीजियेगा, स्वर्गीय सुदामा बाबू आपके कौन थे?

प० श० : वे मेरे सहयोगी थे। हम दोनों बचपन से साथ थे। एक ही स्कूल में पढ़े, फिर एक ही स्कूल में नौकरी की। आज उन्होंने साथ छोड़ दिया।

लक्ष्मी : माफ़ कीजिये, आपके अनुसार सुदामा बाबू इलाज के बिना मर गये। आप उनके पुराने मित्र थे, कुछ मदद क्यों नहीं किया?

प० श० : सब अपनी-अपनी समस्याओं से परेशान हैं। कौन किसकी मदद कर सकता है!

लक्ष्मी : सुदामा बाबू के परिवार में कौन-कौन है?

प० श० : विधवा पत्नी, तीन लड़के और पाँच लड़कियाँ।

लक्ष्मी : जीविका का साधन?

प० श० : कुछ नहीं। आप तो जानते ही हैं कि हरेक शिक्षक अपने पीछे एक यतीम परिवार छोड़ जाता है।

लक्ष्मी : माफ़ करेंगे, सुदामा बाबू के करने से स्कूल में एक जगह खाली हुई होगी ?

प० श० : क्या मैं आपका परिचय पूछ सकता हूँ ?

लक्ष्मी : मेरा परिचय ! उसका कोई महत्व नहीं है। मैंने यह सवाल यूँही पूछ लिया।

प० श० : क्या आप इस पोस्ट के लिये कैंडिडेट हैं ?

लक्ष्मी : नहीं-नहीं, मैं कैंडिडेट नहीं हूँ। मैं तो एक सामाजिक सर्वेक्षण कर रहा हूँ।

प० श० : मुरदों का सामाजिक सर्वेक्षण ?

लक्ष्मी : आपने मेरे सयाल का जवाब नहीं दिया। मैंने स्वर्गीय सुदामा बाबू के पोस्ट के बारे में आपसे पूछा था।

प० श० : आप कुछ भी कहें, मुझे विश्वास है कि आप इस पोस्ट में गहरी दिलचस्पी रखते हैं।

लक्ष्मी : आपकी इस बात का क्या आधार है ?

प० श० : क्योंकि मैं खुद बहुत दिनों तक बेकार रहा हूँ। मैं बेकारी का चेहरा, उसकी आवाज़ को अच्छी तरह पहचानता हूँ।

लक्ष्मी : आपने ठीक ही समझा है। मैं इस पोस्ट के लिये उम्मीदवार होना चाहता हूँ।

प० श० : आप स्कूल के अध्यक्ष से परिचित हैं ?

लक्ष्मी : नहीं।

प० श० : आपने इस पोस्ट के लिये कोई पैरवी की है ?

लक्ष्मी : बिलकुल नहीं। क्यों क्या बात है ?

प० श० : ईश्वर को धन्यवाद है। कहीं आप बीच में पड़ जाते तो एक गरीब परिवार बेमौत मर जाता।

लक्ष्मी : क्यों, क्या हुआ ?

प० श० : इस पोस्ट के लिये हजारों उम्मीदवार थे। पर अध्यक्ष महोदय ने सुदामा बाबू का खयाल कर यह नौकरी उनके लड़के को दे दिया।

लक्ष्मी : उनके लड़के को ! उसकी क्या क्वालिफिकेशन है ?

प० श० : एम० ए० कर रहा था। इस लड़के के बारे में सुदामा बाबू के कितने ही सपने थे। यह भी अंत में प्राइमरी स्कूल का टीचर बना।

लक्ष्मी : यह लड़का अब भी उन सपनों को पूरा कर सकता है।

प० श० : आप बहुत भोले हैं। बाबू साहब, हम लोग एक बन्द गली में बैठे हैं। इसके आगे कोई रास्ता नहीं जाता।

लक्ष्मी : हाँ, शायद आप ठीक कहते हैं। सुदामा बाबू के लड़के की जरूरत मुझसे अधिक है। यह नौकरी उसे ही मिलनी चाहिये।

[३]

समय और स्थान : वही

(बैंड की आवाज सुनाई पड़ती है)

लक्ष्मी : इस जुलूस में बड़ी धूमधाम है!

मुंशी : हाँ लगता है कि किसी बड़े आदमी का शव आया है!

(दूसरे शवयात्री का प्रवेश)

मुंशी : कहो भाई, कौन मरा है?

दू० श० : शंकर टोबैको कम्पनी के मैनेजर, बाबू पूरन चन्द मर गये।

लक्ष्मी : शंकर टोबैको! नाम तो बहुत सुना है।

दू० श० : हाँ, देशी तम्बाकू का कारबार है। दूर-दूर तक माल जाता है।

लक्ष्मी : बाबू पूरन चन्द कम्पनी के मालिक थे?

दू० श० : नहीं मालिक तो बम्बई में रहते हैं। पर कारबार पूरन चन्द ही देखते थे। उन्होंने दस साल में इस कम्पनी को इतना बढ़ा दिया।

लक्ष्मी : माफ़ कीजिये, स्वर्गीय बादू पूरन चन्द के लड़के भी होंगे?

दू० श० : हाँ, उनके लड़के का नाम गणेश लाल है।

लक्ष्मी : तब तो शंकर टोबेको की मैनेजरी गणेश लाल को मिलेगी?

दू० शल : आप अजीब बात करते हैं! बाबू गणेश लाल का अपना स्वतन्त्र कार-वार है। आपने गणेश टोबैको का नाम सुना है?

लक्ष्मी : जी, लगता है कि यह नाम किसी कैलेण्डर पर देखा है। एक तरफ गणेश जी का चित्र था, दूसरे तरफ शुद्ध तम्बाकू का ढेर।

दू० श० : हाँ, यही उनका ट्रेडमार्क है ।

लक्ष्मी : माफ कीजिये, बाबू पूरन चन्द के मरने से एक जगह खाली हुई है। क्या मैं इस पोस्ट के लिये उम्मीदवार हो सकता हूँ ?

दू० श० : आप अजीब आदमी हैं ! कहीं मैनेजर की नियुक्ति इस तरह होती है !

लक्ष्मी : तब कैसे होगी ?

दू० श० : मैनेजर की पोस्ट पर डीपुटी मैनेजर का प्रोमोशन होगा, बशर्ते कि सेठ जी चाहें ।

लक्ष्मी : तब डीपुटी मैनेजर की पोस्ट खाली होगी ?

दू० श० : कत्तई नहीं । डीपुटी मैनेजर की जगह असिस्टेंट मैनेजर का प्रोमोशन होगा, बशर्ते कि सेठ जी की सहमति हो ।

लक्ष्मी : तब तो असिस्टेंट मैनेजर की जगह खाली हो जायगी ?

दू० श० : बिलकुल नहीं । असिस्टेंट मैनेजर की जगह किसी सीनियर एजेन्ट को दी जायगी ।

लक्ष्मी : तब तो सीनियर एजेंट की जगह खाली हो जायगी ।

दू० श० : नहीं जनाब, यह पोस्ट किसी जूनियर एजेंट को मिलेगी ।

लक्ष्मी : तब तो जूनियर एजेंट की वेकेंसी हुई ?

दू० श० : नहीं साहब, जूनियर एजेंट का जॉब आफिस के बड़े बाबू को मिल सकता है ।

लक्ष्मी : कृपया यह बताइये कि इसके नीचे कितनी सीढ़ियाँ हैं ?

दू० श० : बड़े बाबू के बाद छोटे बाबू; छोटे बाबू के बाद किरानी बाबू ।

लक्ष्मी : मेरा मतलब है कि पूरी फौज में एक संख्या कम हुई है । कहीं न कहीं एक भरती तो होगी ।

दू० श० : हाँ एक किरानी की भरती होगी ।

लक्ष्मी : क्या स्वर्गीय पूरन चन्द के लड़के की इस पोस्ट में दिलचस्पी है ?

दू० श० : अजब पागल हो ! मैंने तुम्हें बताया है कि पूरन चन्द के लड़के गणेश लाल की अपनी फर्म है ।

लक्ष्मी : पूरन चन्द के कोई भतीजा तो नहीं है ?

दू० श० : नहीं उनका कोई भतीजा नहीं है ।

लक्ष्मी : बाबू पूरन चन्द के दूसरे सम्बन्धी होंगे। मेरा मतलब है कि साले का लड़का या भतीजा ?

दू० श० : उनके ससुराल के लोग, सब बड़े आदमी हैं। वे किरानीगीरी नहीं करेंगे।

लक्ष्मी : आप बुरा न मानें। मैं सिर्फ यही जानना चाहता हूँ कि क्या मैं इस पोस्ट के लिये उम्मीदवार हो सकता हूँ ?

दू० श० : सुनो, शंकर टोबैको का जाँब ऐसे थोड़े ही मिलता है !

लक्ष्मी। तब कैसे मिलता है ?

दू० श० : शंकर टोबैको की हरेक पोस्ट की कीमत है। सच कहा जाय तो इस फर्म की हरेक पोस्ट नीलाम होती है।

लक्ष्मी : माफ कीजिये; एक सवाल और। जो पोस्ट खाली हुई है उसकी कीमत क्या होगी ?

दू० श० : बीस हजार तक बोली पहुँच गयी है। इसके ऊपर हिम्मत हो तो मैदान में आओ।

लक्ष्मी : लेकिन, मेरे पास तो बीस रुपया भी नहीं है।

मुंशी : हाँ साहब, बोलिये। बाबू पूरन चन्द की वल्दियत, साकिन मुहल्ला, कैसे मरे ?

[४]

समय और स्थान : वही।

('राम नाम सत्य है' की सामूहिक आवाज)

लक्ष्मी : बहुत लोग आ रहे हैं। लगता है कि कोई लोकप्रिय आदमी मरा है।

मुंशी : हो सकता है।

लक्ष्मी : अरे, बहुत से जाने-पहचाने लोग हैं ! कितने तो स्कूल के मास्टर हैं !

(तीसरे शवयात्री का प्रवेश)

लक्ष्मी : माफ कीजिये, आप इस शव के साथ आये हैं ?

तीसरा शवयात्री : जी हाँ !

लक्ष्मी : कौन मरा है ?

तीο शο : शीतल बाबू मर गये !

लक्ष्मी : कौन शीतल बाबू ?

तीο शο : अरे शीतल बाबू को कौन नहीं जानता ! शीतल बाबू, हेडमास्टर !

लक्ष्मी : अरे, हेडमास्टर साहब मर गये !

तीο शο : आप उन्हें जानते थे ?

लक्ष्मी : वे मेरे गुरु थे। उन्होंने मुझे कई साल पढ़ाया था।

तीο शο : हाँ बड़े नामी आदमी थे। बड़े योग्य और दबंग व्यक्ति थे।

लक्ष्मी : हाँ शीतल बाबू के बारे में क्या कहना है ! बेजोड़ आदमी थे।

तीο शο : लिखिये मुंशी जी, शीतल बाबू का सब विवरण लिख लीजिये।

मुंशी : शीतल बाबू तो बहुत हट्टे-कट्टे थे। अचानक मर कैसे गये ?

तीο शο : क्या कहा जाय ! एक घण्टे पहले बैठकर गप-शप कर रहे थे। अचानक सीने में दर्द उठा। डाक्टर के आने के पहले सब खेल खतम हो गया।

लक्ष्मी : माफ़ कीजिये, शीतल बाबू के बाद स्कूल में एक जगह खाली हुई होगी ?

तीο शο : हाँ, हुई तो है।

लक्ष्मी : क्या-इस जगह पर शीतल बाबू के लड़के की नियुक्ति होगी ?

तीο शο : आप अजब आदमी हैं ! इतना भी नहीं जानते कि शीतल बाबू का कोई लड़का नहीं है।

लक्ष्मी : कोई भतीजा होगा ?

तीο शο : कोई भतीजा भी नहीं है।

लक्ष्मी : कोई दूसरा निकट सम्बन्धी होगा जैसे साले का बेटा या भतीजा ?

तीο शο : नहीं उनका कोई सर्म्बन्धी इस पोस्ट के लायक नहीं है।

लक्ष्मी : सुनिये, कहीं यह पोस्ट नीलाम तो नहीं की जायगी ? अगर नीलाम हो तो इस पोस्ट की क्या कीमत होगी ?

तीο शο : आप पागल हुए हैं ! यह पोस्ट नीलाम क्यों होगी ?

लक्ष्मी : कृपया, बुरा न माने। मैंने यह सवाल यूँहीं पूछ लिया था।

ती० श० : क्या आप इस पोस्ट के लिये उम्मीदवार हैं ?

लक्ष्मी : अभी तो नहीं हूँ, पर बनना चाहता हूँ।

ती० श० : तब इसमें क्या दिक्कत है ?

लक्ष्मी : यह मैं क्या बता सकता हूँ। कृपया यह बताइये कि इस पद पर नियुक्ति किस आधार पर होगी ?

ती० श० : सिर्फ योग्यता के आधार पर। शीतल बाबू को जनता बहुत प्यार करती थी। लोग उनकी जगह किसी अयोग्य आदमी को बरदाश्त नहीं करेंगे।

लक्ष्मी : जरा फिर से कहिये। यह मेरे लिये जिन्दगी और मौत का सवाल है।

ती० श० : देखिये, मैं पूरी जानकारी से कह रहा हूँ। लेकिन क्या आपके पास अच्छी योग्यता है ?

लक्ष्मी : इस देश में जितनी डिग्रियाँ मिलती हैं, मैंने सब ले ली हैं। सिर्फ एक डिग्री नहीं ले सका।

ती० श० : मैं आपकी बात नहीं समझ सका।

लक्ष्मी : मैं किसी योग्य आदमी का भाई या भतीजा नहीं बन सका। यह डिग्री किसी विश्वविद्यालय में नहीं मिलती है।

ती० श० : सुनिये, मैं इतना कह सकता हूँ कि शीतल बाबू की जगह किसी के भाई या भतीजे को नहीं मिलेगी।

लक्ष्मी : क्या आपको पूरा विश्वास है ?

ती० श० : हाँ भाई, आप सौ बार पूछेंगे तब भी यही कहूँगा। स्कूल के सचिव भी आये हैं। आप चाहें तो उनसे मिल सकते हैं।

लक्ष्मी : चलिये, आपके साथ ही चलता हूँ।

(कफन लपेटे शीतल बाबू का प्रवेश)

ती० श० : अरे बाप रे, भूत ! भूत ! भूत !!!

लक्ष्मी : अरे, यह तो शीतल बाबू हैं !

शीतल : मूर्ख छोकरे, तू मुझे भूत कहता है ! जानता नहीं कि मेरी छड़ी को देखते ही बड़े से बड़े भूत भाग जाते हैं।

ती० श० : आप ! आप ! जिन्दा हैं ?

शीतल : इतना कांपा क्यों रहा है ? मुझे छूकर देख ले। क्या मैं मरा हुआ लगता हूँ ?

ती० श० : पर आप तो मर गये थे ! डाक्टर ने आपको मृत घोषित किया था !

शीतल : डाक्टर के कहने से क्या होता है ! क्या मैं डाक्टर को खुश करने के लिये मर जाऊँ ?

ती० श० : सचमुच बहुत आश्चर्य की बात है !

शीतल : आश्चर्य की बात छोड़ ! मेरे लौट आने से तू तो खुश है न ?

ती० श० : मैं क्या; पूरा शहर खुशियां मनायेगा ! यह घटना देश-विदेश के अखबारों में छपेगी !

शीतल : सुन, तुझे असली किस्सा सुनाता हूँ। मैं सचमुच मर गया था। पर यमराज को पछाड़ कर वापस आ गया।

ती० श० : यह आप क्या कह रहे हैं ! आपने यमराज को पछाड़ दिया ?

शीतल : हाँ बेटे, मैंने ऐसी दलील दी कि वह चारो खाने चित्त हो गया। जब यमदूत मुझे यमराज के पास ले गये तो मैंने उसकी हुलिया ही दुरुस्त कर दी।

[५]

स्थान : यमराज का दरबार

समय : संध्या काल।

शीतल : सुन रे मौत के ठीकेदार, तूने मुझे समय से पहले क्यों बुला लिया ?

यमराज : मास्टर साहब, आपका समय पूरा हो गया था।

शीतल : मेरा समय तो स्कूल में भी पूरा हो गया था। मैंने वहाँ पाँच साल का एक्सटेंशन लिया है।

यमराज : यह यमपुरी है। यहाँ आपके स्कूल का नियम नहीं चलता।

शीतल : जरूर चलता है। स्कूल में भी क्या मुझे आसानी से एक्सटेंशन मिला था। प्रशासिका सभा ने मेरे प्रार्थनापत्र को तीन बार ठुकरा दिया था। फिर मैंने शंकर भगवान से प्रार्थना की। उनके प्रताप से जनता

माँग कर बैठी। नारे लगे "वी वांट शीतल बाबू!" बस मुझे तुरंत एक्सटेंशन मिल गया।

यमराज : आपके स्कूल के एक्सटेंशन से मुझे क्या मतलब है?

शीतल : जरूर है। शंकर भगवान आपके कौन हैं?

यमराज : वे हमारे बॉस हैं।

शीतल : तब फिर! आप शंकर भगवान के आदेशों की अवज्ञा करेंगे?

यमराज : यह तो आप पॉलिटिक्स कर रहे हैं!

शीतल : देखिये मि० यमराज, कभी-कभी पॉलिटिक्स जरूरी हो जाती है। आप तो जानते हैं कि मैं आपके बॉस को एप्रोच कर सकता हूँ!

यमराज : मास्टर साहब, आप तो प्रेशर डाल रहे हैं!

शीतल : देखिये मि० यमराज मैंने स्कूल से पाँच साल का एक्सटेंशन लिया है। आपको भी मुझे पाँच साल का एक्सटेंशन देना होगा!

यमराज : भई, आपने तो बहुत झमेला पैदा कर दिया।

शीतल : देखिये मेरा वक्त बहुत कीमती है। आप तुरंत कुछ फैसला कीजिये।

यमराज : देखिये मास्टर साहब, एक बात और है।

शीतल : कहिये।

यमराज : मेरा एक भक्त, लक्ष्मीशंकर, नौकरी की तलाश में मरघट पर बैठा हुआ है। मुझे उस पर दया आ गयी है। मैंने आपका जॉब उसे दिलवा देने का वादा कर दिया है।

शीतल : आपके वादे से क्या होता है। मुझे एक्सटेंशन मिला है। आप मेरी जगह दूसरे की नियुक्ति कैसे करा सकते हैं?

यमराज : तब लक्ष्मीशंकर का क्या होगा?

शीतल : आप अजीब आदमी हैं! मेरी फाइल अलग है, लक्ष्मीशंकर की फाइल अलग! आप इन दोनों को 'मिक्स-अप' कैसे कर सकते हैं?

यमराज : अच्छा जाइये, आपने तो मास्टर साहब परेशान कर दिया!

[६]

पिछले दृश्य की पुनरावृत्ति

ती० श० : आप सचमुच जबरदस्त आदमी हैं। आपने तो यमराज को बिलकुल डाऊन कर दिया !

शीतल : हाँ देखो न, क्या जमाना आ गया ! अब यमराज भी खुल्लमखुल्ला पैरवी करने लगा !

लक्ष्मी : पर खीतल बाबू, आप दोनों के दंगल में एक गरीब लड़के का गला कट गया।

शीतल : क्यों बेटे, तू ऐसे क्यों बोलता है। क्या तू मेरे लौट आने से नाखुश है ?

लक्ष्मी : नहीं ऐसी क्या बात है ! आप मेरे गुरू रह चुके हैं। आपके नवजीवन से कौन नाखुश होगा ?

शीतल : बेटे, तेरा नाम क्या है ?

लक्ष्मी : मेरा नाम लक्ष्मीशंकर है।

शीतल : लक्ष्मी शंकर ! तो यमराज ने तेरी ही सिफारिश की थी ?

लक्ष्मी : मुझे यालूम नहीं है।

शीतल : बेटे, तेरी क्वालिफिकेशन क्या है ?

लक्ष्मी : मैंने विश्वविद्यालय से मिलने वाली सभी डिग्रियाँ प्राप्त कर ली हैं।

शीतल : तू इतना योग्य है, मेरा शिष्य है; और अभी तक बेकार है ?

लक्ष्मी : जी हाँ, ऐसा ही है।

शीतल : चल बेटे, मैं वापस लौट आया तो क्या हुआ ! क्या शीतल बाबू एक नौकरी का बंदोबस्त नहीं कर सकता !

लक्ष्मी : क्या आप मेरी मदद करेंगे ?

शीतल : जरूर करूँगा। चल बेटे तू मेरे साथ चल। पर बेटे, जमाना बहुत मुश्किल है। अभी गुरू-शिष्य का सम्बन्ध काफी नहीं है। चल, तू मेरा भतीजा बन जा।

लक्ष्मी : चलिये चाचा जी, मैं आपका भतीजा बनने के लिये तैयार हूँ। जीने के लिये मुझे कोई भी शर्त मंजूर है !

□□

(पटाक्षेप)

अँधेरे से उजाले की ओर

(गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित एक काव्य नाटिका)

(कामायनी, आरा के कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत)

पात्र-परिचय

१. सन्त तुलसी दास

२. रत्नावली

३. पवन सुत हनुमान

४. दो पृष्ठभूमि उद्घोषक

अँधेरे से उजाले की ओर

स्थान : एक जंगली मार्ग। पृष्ठभूमि में एक पर्वत श्रेणी और वृक्ष समूह। बीच मंच पर शिलाखण्ड जैसी वस्तु।

[१]

पहला स्वर : कटे एक रघुनाथ संग, बाँधि जटा सिर केस,
हम तो चाखा प्रेम रस, पतिनी के उपदेस।

दूसरा स्वर : महा काल सी रात,
अँधियारे के नागपाश में,
मूर्छित धरती,
मूर्छित सा आकाश

पहला स्वर : वन प्रांतर के कठिन मौन को,
कभी बेंधता,
वनपाखी के क्रंदन का स्वर,
कालिन्दी का पावस जल भी,
शोर कर रहा तट गुल्मों में,
हहर-हहर हर, हहर-हहर हर
विषम ताल पर ज्यो मृदंग स्वर।

दूसरा स्वर : अँधेरे के अंक में लेटा,
गाँव बःरिया,
मृगछौने सा निद्रालस है।

पहला स्वर : एक झरोके में प्रकाश है।

दूसरा स्वर : काले काजल के परवत पर,
वह दीपक कितना बेबस है।

(तुलसी दास का प्रवेश)

पहला स्वर : विजन खण्ड में ब्रह्म प्रेत सा,
व्याकुल मन से कौन चला है ?
प्रणय मार्ग का पागल प्रेमी
या यह शवसाधक तान्त्रिक है ।
चौर्य कार्य के लिये चोर है,
या कोई भटका यात्रिक है ।

दूसरा स्वर : कदम-कदम पर अटक रहा है,
लगता कोई परदेशी है,
बीच राह में भटक रहा है ।

(तुलसीदास शिलाखण्ड से टकराते हैं)

तुलसी : कदम-कदम पर शिलाखण्ड है
कदम-कदम पर पदाघात हैं,
प्रेम मार्ग कितना दुर्गम है,
कितनी काली आज रात है !

(शिलाखण्ड हिलता है । वेदना का स्वर मुखरित होता है)

शिलाखंड : महाप्राण, तुम भला कौन हो,
दीन हीन को पदाघात कर
अनायास ही दर्प दिखाते,
देश देश के महाराज हो ?
या त्रेता के रामचन्द्र हो !
चित्रकूट में भटक रहे हो,
शिलाखंड को खोज खोज कर,
पदाघात से जीवन देते,
शापमुक्ति का व्रत पाले हो ?
या तुम गोकुल के ग्वाले हो ?
कालिन्दी के कालियदह में,

कलियनाग के सहस फनों को,
चूर-चूर कर पद प्रहार से,
यमुना तट पर रास करोगे,
सखियों के संग लास करोगे ?

तुलसी : आकास्मिक आघात के खातिर,

सुनो भिक्षु, मैं अति लज्जित हूँ।
पर तुम कितना कटु भाषी हो।
अर्ध रात्रि को, बीच मार्ग में,
शिलाखंड से पड़े हुए तुम
अपशब्दों के महावीर हो।
मैं सुपात्र को परिचय दूँगा,
तुम पहले अपना परिचय दो।

शिलाखंड : (भिक्षु) क्षमा करो तुम, मैं प्रार्थी हूँ,

दीन हीन असमर्थ जीव हूँ,
तन में, मन में क्रोध अधिक है।
गलित कुष्ट और जरा से जर्जर
मैं जीवन से ऊब गया हूँ !
आत्म घात के लिये चला था,
पहुँच न पाया जमुना तट तक,
घिसट घिसट कर कल जाऊँगा।

एक कृपा बस माँग रहा हूँ,
आज बड़ी ही पुण्यरात्रि है,
कालिन्दी के गहरे जल मे,
अपने हाथों करो प्रवाहित,
मेरी अब बस यही नियति है,
मर जाऊँगा, तर जाऊँगा।

तुलसी : हरे राम, यह क्या कहते हो !
तुम जैसे कोढ़ी भिक्षुक को,
इतना नरक शीश पर रख कर,
कालिन्दी में करूँ प्रवाहित,
मैं क्या यह सब कर सकता हूँ,
घोर असंभव, घोर असंभव !

आत्म घात यदि करना ही हो,
यमुना का तट बहुत पास है,
शांति रूप से कल कर लेना।

शिलाखंड (भिक्षु) : एक और अनुरोध करूँगा,
शुभ मुहूर्त है,
मृत्यु आज की अति पवित्र है,
सभी पाप से छुट जाऊँगा,
सभी शाप से छुट जाऊँगा।

तुलसी : अकस्मात् ही तुम्हें छुआ था
एक पाप था, एक शाप था,
अब तुमको क्या छू सकता हूँ,
इन बाहों में आज बँधेगी,
कमल ताल की कोमल कलिका,
मानसरोवर की कल हँसिनी,
यक्ष कुमारी अलका पुर की,
रत्न राशि से सुन्दर रत्ना।

इसी मिलन सुख के खातिर मैं,
कितने योजन नाप चुका हूँ,
यमुना की उत्ताल तरंगें,
एक-एक करके माप चुका हूँ।

शिलाखंड (भिक्षु) : विप्रराज, मैं समझ गया सब,
प्रेमातुर हो, कामातुर हो
तब विवेक की राह कहाँ है,
मैंने ही ज्यादा माँगा था,
तुमको कुछ ज्यादा आँका था।
प्रेम राग जब थक-थक जाये,
ज्वार नदी का जब कम जाये,
कार्य विवश—कर्तव्य विवश,
राह तुम्हारी वापस लौटे,
इसी मार्ग पर पड़ा मिलूँगा,
इन्हीं करों से जल समाधि हो,
मेरी अंतिम अभिलाषा है,
एक पिपासा यही शेष है।

तुलसी : भिक्षु, मूर्ति तुम हो असगुन की,
छोटे से कामना-पुष्प पर,
नरक-कीट सा बैठ गये हो।
अगर मृत्यु हो तुम्हें वरण है,
चरण मृत्यु के तुम्हें ढूँढ़ते,
कहीं निकट ही भटक रहे हैं।
चलो तुम्हारे कुत्सित शव को,
जमुना जल में मैं डालूँगा,
पाप एक कम हो जायगा।

(तुलसी दास का प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

[२]

स्थान : बदरिया गाँव में दीनबंधु पाठक का ऊपरी कक्ष

समय : अर्ध रात्रि

(खिड़की के रास्ते तुलसी का प्रवेश)

तुलसी : शयन कक्ष में अंधकार है,
जैसा बाहर, वैसा भीतर,
लेकिन रत्ना गई किधर है ?
बिलकुल अनछूई शय्या है,
विरह व्यथा से व्याकुल विरहिन,
नींद कहाँ है, चैन कहाँ है,
मेरी रत्ना एक कली सी,
मुझे देख कर खिल जायेगी,
यथा कमलिनी चाँद देखकर,
पखुंरिया पसार देती है !
लेकिन उसकी विस्मय दूँगा,
पलंग पास में छिप जाता हूँ,
महारास के पहले जैसे,
यमुना तट पर श्याम छिपे थे।

(दीपक लेकर रत्नावली का प्रवेश)

रत्ना : कक्ष में खटखुट लगा सुनी हूँ,
या यह फिर मेरा भ्रम ही है,
लगता चूहे खेल रहे हैं !
लेकिन यह कैसी आहट है,
यह किसके श्वासों का स्वर है ?
लगता कोई नया चोर है ?
एक विपन्न विप्र के घर में,
खोज रहा है हीरा माणिक,
सोना चाँदी, रत्न राशि को।

(तुलसी दास बाहर निकल आते हैं)

तुलसी : देवी सचमुच नया चोर है,
रत्नराशि को नहीं चला है,

रत्नावली के खातिर आया,
जिसकी कीमत माणिक मुक्ता
स्वर्ग राशि से कहीं अधिक है।

रत्ना : आप ! आप यहाँ पर !
सचमुच यह कितना विस्मय है,
अर्ध रात्रि की इस आहट से,
मैं मन ही मन काँप रही थी।

तुलसी : पूज्य श्वसुर के आदेशों से,
मैंने तुमको विदा किया था,
क्या वह मेरी इच्छा थी !
चक्रवाक की विरह-व्यथा को,
कवि कहते हैं, सब सुनते हैं,
किन्तु हमारी करुण कथा को,
कौन कहेगा, कौन सुनेगा ?
विरह तुम्हारा, समझो इतना,
अंगारों की इक शय्या है,
मैं तन-मन से सुलग रहा हूँ।

रत्ना : पिता असुख थे,
अति आग्रह था,
बोलो, मैं क्या कर सकती थी,
पर प्रबन्ध सब कर आयी थी,
क्या भोजन का कष्ट हुआ है,
लगता बुद्धन भाग गया है।

तुलसी : बुद्धन तो डट कर बैठा है
भोजन का भी कष्ट नहीं है
फिर भी शाप विद्ध यक्ष सा,
दिशाहीन मैं भटक रहा हूँ,

आंगन में हैं भूत डोलते,
घर में डह-डह अंधकार है।

रत्ना : अर्धरात्रि के अंधकार में,
इतने कोस भागते आये,
मेरी समझ में पागलपन था।
जमुना की उत्ताल तरंगे,
घाट तोड़कर उफन रही हैं
कोई नौका तुम्हें मिली थी ?

तुलसी : कोई नौका वहाँ नहीं थी,
सभी घाट पर आतंकित थे,
प्रेम तुम्हारा बस सम्बल था,
तोड़-तोड़ कर वज्र सी लहरें,
मैंने जमुना पार किया है !

रत्ना : कितना बड़ा किया पागलपन,
यह जोखिम क्या आवश्यक था ?

तुलसी : मेरी रत्ना प्रेम तुम्हारा,
रह-रह मन में कौंध रहा था,
देख कक्ष का दीप तुम्हारा,
मैंने जमुना पार किया है।

रत्ना : किन्तु कक्ष का द्वार बन्द था,
आंगन में अर्गला लगी है,
युक्ति कौन जो भीतर आये,
क्या कोई जादू सीखा है ?

तुलसी : प्रेम पंथ होता है, गोपन,
संकेतों में अर्थ ढूँढ़ता,
शयन कक्ष का खुला झरोखा,
एक रज्जुका लटक रही थी,

समझ गया संकेत तुम्हारा,
उसी राह से चढ़कर आया।

रत्ना : कैसी भाषा बोल रहे हो!
कोई रस्सी नहीं बँधी थी!
अभी देखती हूँ मैं चलकर
तुम कैसे ऊपर आये हो!

(रत्ना आगे बढ़कर नेपथ्य में झाँकती है। बहुत भयभीत होकर आती है)

रत्ना : हे राम!
राम, तुम्ही ने रक्षा की है,
सुनो थाम तुम जिसको आये,
कई हाथ लम्बा गेहुवन है!

तुलसी : कई हाथ लम्बा गेहुवन!
यह कैसे, क्योंकर संभव है।

(तुलसी नेपथ्य में जाते हैं। कुछ क्षणों के बाद एक मरा हुआ साँप लेकर आते हैं)

दैवयोग था, बस सुयोग था,
आज भाग्य ने साथ दिया है,
या हो सकता, प्रेम तुम्हारा,
कलियनाग को कुचल गया है।

रत्ना : अगर प्रेम की यह परिभाषा,
पागल की भाषा क्या होगी?
मृत्यु के मुख में शीश डालकर,
बार-बार मेरे सुहाग की,
कितनी बार परीक्षा लोगे?

तुलसी : प्रेम एक स्वर्गीय ज्योति है,
प्रेम एक दैवी अनुभव है,

प्रेम स्वर्ण सा आग में तपता,
प्रेम मार्ग में सब सम्भव है।

रत्ना : एक निरक्षर नारी मात्र हूँ
फिर भी तुमसे पूछ रही हूँ,
अर्धरात्रि के अन्धकार में,
बिना निमन्त्रण पाये घर से,
तुम मुझसे मिलने आये हो,
क्या यह सब कुछ धर्म विहित है,
बोलो, क्या व्यवहार विहित है!

तुलसी : एक साँप की मृतक देह ने,
तुमको बेहद डरा दिया है,
वेद शास्त्र क्या प्रासंगिक है,
आज हमारा मिलन पर्व है,
आज रात इतना ही सच है।

रत्ना : अगर तुम्हारा प्रेम सत्य है,
चार हाथ लम्बा गेहवन भी,
समझो उससे बड़ा सत्य है।
सप्तपदी के समय याद है,
हवन अग्नि के सम्मुख जाकर,
हमने-तुमने यही कहा था—
धर्म धुरी पूरे जीवन की,
एक सत्य है, चरम सत्य है,
धर्म बिना यह प्रेम राग सब,
चार हाथ लम्बा गेहुवन है।

तुलसी : शायद मुझको मोह हुआ हो,
क्रोध अग्नि में शुष्क डाल सी,
तुम भी कितना सुलग रही हो!

रत्ना : मैं तुमसे फिर पूछ रही हूँ,
वेद शास्त्र के जानकार हो।
नीति शास्त्र के कथाकार हो,
कवियों में तुम शिखर विन्दु हो।
किन्तु सुबह मैं पिता के सम्मुख,
किन शब्दों में परिचय दूँगी—
मेरे प्रियवर ऋषि तुल्य है,
किन्तु प्रिया के प्रेम में व्याकुल,
नदी, नार औ पर्वत तय कर,
अर्ध रात्रि के सन्नाटे में,
अनायास ही आ धमके हैं—
बोलो, इतना कह सकती हूँ ?

तुलसी : कितना लज्जित और करोगी,
अतिथि बिना आमन्त्रण का हूँ,
बहुत अकिंचन, फिर भी पति हूँ।

रत्ना : एक बात और कहनी है,
माता के आग्रह पर मैंने,
चन्द्रायण व्रत ठान लिया है,
आज मास का पहला दिन है,
व्रत की विधियाँ बहुत कठिन हैं,
समझो पूरे एक मास तक,
प्रेम राग बिलकुल वर्जित है।

तुलसी : तुम सचमुच कितनी पवित्र हो,
मैं हूँ एक अकिंचन पापी,
नरक वीथी में भटक रहा हूँ।

रत्ना : यह एक झूठा हीन भाव है,
तुमको बहुत दूर जाना है,

बाबा नरहरि के पोषित हो,
भक्तराज ने मन्त्र दिया है,
बार-बार कहते थे बाबा,
तुलसी है पावन तुलसी सा,
काव्य जगत का बाल सूर्य है,
वाल्मीकि की वाणी लेकर,
रमबोला जब राम कहेगा,
नभ से फिर गंगा उतरेगी,
धरती नव-नव रूप धरेगी।

तुलसी : मेरी कविता तुम्हीं को अर्पित,
देखो, यह रचना तुम पर है,
कितनी सुन्दर उपमाओं में,
सुन्दरता को बाँध सका हूँ।

रत्ना : मेरी एक शपथ मानोगे,
मैं कविता की पात्र नहीं हूँ,
मुझ पर कविता नहीं लिखोगे,
कालिदास कवि नहीं बनोगे,
जिसने देवी के प्रसंग पर,
कितना कुत्सित काव्य लिखा था,
निष्कासित वे हुए राज्य से,
गलित कुष्ठ का वर पाया था।

तुलसी : बात-बात में रात ढली है,
तन से, मन से बहुत थका हूँ,
गंगा की शीतल धारा से
एक घूँट का बस प्यासा हूँ।

रत्ना : जनम-जनम के तुम साथी हो,
जनम-जनम की मैं चेरी हूँ,

तुमको ही निर्णय करना है,
अगर कहोगे व्रत तोड़ूँगी,
भोर काल में पिता के सम्मुख,
चर्चाओं के सारे विष को,
मीरा जैसा पी जाऊँगी।

पर विचार लो, दो विकल्प हैं,
एक तरफ बाबा नरहरि हैं,
एक तरफ लम्बा गेहुवन है।

तुलसी : बाबा को तो समझा लूँगा,
किन्तु ये सारी नीति की चरचा,
बिना वक्त की शहनाई है।

रत्ना : अगर वासना भरे नयन हों
तो रत्ना बस रूप राशि है
किन्तु मेरे अन्तर के स्वर को,
मेरे सपनों की भाषा को,
अगर सुनो तो मैं कहती हूँ–

देखो, दुनिया बहुत दुखी है,
देश-देश सब दिशाहीन है,
याद नहीं कहते थे बाबा,
कलियुग में एक राम मंत्र है,

तुम कविता के गंगोत्री हो,
गली-गली के बीच राम की,
सरिता नयी बहा सकते हो,
एक डाल जो सूख रही है,
जीवन से नहला सकते हो।

तुलसी : देवी रत्ना, क्या कहती हो ?

रत्ना : प्रियवर, रत्ना बहुत अकिंचन,
राम नाम तो अमर सत्य है,
राम नाम तो अमर सत्य है।

तुलसी : ठीक है देवी, मैं जाता हूँ,
अविवेक से हुई असुविधा,
इसके लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

रत्ना : मैंने जाओ नहीं कहा है,
अभी रात आधी बाकी है,
मैं जाकर भोजन लाती हूँ,
भोर के पहले तय कर लेना।

(रत्ना का प्रस्थान । तुलसी बेचैन सा टहलते हैं ।

तुलसी : एक इमारत टूट गयी है,
एक सफर का अन्त हुआ है,
रत्ना ने सब कह डाला है,
एक अस्वीकृति के आँगन में,
झलक सत्य की देख रहा हूँ।
बाबा तुमने सही कहा था,
कलियुग में एक राम मन्त्र है,
तुलसी उसका वरण करेगा,
राम शक्ति दो, राम भक्ति दो,
अँधेरे के साये टूटें,
सूरज मुट्ठी में बँध जाये।

(थोड़ा रुक कर)

रत्ना भोजन लाती होगी,
किन्तु मोह के हाथ बड़े हैं
एक नये जीवन के खातिर
देवी, बिना मिले जाता हूँ।

(तुलसी का प्रस्थान)

(भोजन लेकर रत्ना का प्रवेश। तुलसी को इधर-उधर खोजती है)

रत्ना : लगता यात्रिक चला गया है,
संकल्पों के पावन पथ पर,
नये दीप को जला गया है
क्या रत्ना को कोई दुःख है !
क्या रत्ना को कोई दुःख है ।
गगन धरा से पूछ रहा है—
(नेपथ्य से) क्या रत्ना को कोई दुःख है ।
क्या रत्ना को कोई दुःख है ।
आज देवता साक्षी रहना,
कविता को वाल्मीकि मिला है,
घर-घर कविता मुखरित होगी,
किन्तु एक अनाम नारी ने
माथे का सिंदूर पोछ कर
जन जीवन को मुखर किया है ।
सुनो राम इतना कहती हूँ
राम नाम का अर्थ उदित हो,
घर-घर की मर्यादा खातिर,
आँगन में ही चिता रचाकर,
रत्ना ने अपने हाथों से,
अपना सब कुछ होम किया है,
प्रभु हो इतना भूल न जाना,
प्रभु हो इतना भूल न जाना !

(रत्ना शोकाकुल हो राम की प्रतिमा के सम्मुख गिर पड़ती है)

(पर्दे पर राम-लक्ष्मण-सीता की छाया)

नेपथ्य से गायन—राम-राम-राम
सीता राम-राम-राम-राम

राम-राम-राम,
राजा राम-राम-राम ।

(पर्दा गिरता है)

[३]

स्थान : पहिले दृश्य की पृष्ठभूमि ।
समय : रात्रि का अंतिम प्रहर ।

(मंच पर भिक्षु गठरीनुमा पड़ा है)

(तुलसी दास का प्रवेश)

तुलसी : भिक्षुराज हूँ कुशल पूछता,
घर को वापस लौट रहा हूँ ।
भिक्षु : बहुत वेग से लौट रहे हो,
माथे पर तीखा तनाव है,
क्या अनिष्ट कुछ घटित हुआ है ?
तुलसी : दुनिया अपनी धुरी पर चलती,
श्वेत-श्याम का अपना क्रम है,
सुख-दुःख तो चलता रहता है ।
तुमने मुझको याद किया था,
बोलो क्या कुछ कर सकता हूँ ।
भिक्षु : आत्मघात का इंतजार था,
किन्तु तुम्हारे प्रेम राग से,
मेरे मन में मोह जगा है ।
कई कोस पर मध्य नगर में,
एक रूपजीवा रहती है,
उसको जीवन भर चाहा है ।
मुझे ले चलो उसी द्वार पर
एक बार बस दर्शन कर लूँ
इस इच्छा से सुलग रहा हूँ ।

उसके बाद पवित्र नदी में,
मुझे डाल कर राह पकड़ लो।
राम तुम्हें मनचाहा वर दें।

तुलसी : भिक्षु, कुष्ठ से क्षत-विक्षत हो,
चार हाथ पर खड़ी मौत है,
रूपा से मिल क्या पाओगे,
तुमको बस अपमान मिलेगा।

भिक्षु : एक बार मेरा मन रख लो,
तभी शांति से मर पाऊँगा।

तुलसी : रूप का दर्शन मात्र मोह है,
मैं अपनी अविकल सेवा से
यमदूतों को लौटा दूँगा,
चलो भिक्षु मेरी कुटिया में,
तुमको मेरा आमंत्रण है।

भिक्षु : गलित कुष्ठ की चरम दशा है,
मुझे गाँव से निर्वासन है,
सबकी नजरों में अछूत हूँ,
मृत्यु ही मेरे लिये मुक्ति है।

तुलसी : सुनो भिक्षु, राही को पथ से,
कुँठाए कब बाँध सकी है,
हममें तुममें फरक कहाँ है,
एक विन्दु पर खड़े हुए हैं,
हम दोनों का एक सफर है,
मोहपाश से साथ लड़ेंगे,
अँधेरे को अस्वीकार कर,
हम प्रकाश के गुण गायेंगे,

भले रात के दस-दस मुख हों,
सुबह का सूरज अटल सत्य है।

(तुलसी दास भिक्षु को उठाने का प्रयत्न करते हैं। क्षण भर के लिये अंधकार)

नेपथ्य से : राम, राम, राम
सीता राम, राम, राम
राम, राम, राम,
सीता राम राम, राम।

(भिक्षुराज हनुमान के रूप में प्रगट होते हैं)

(तुलसी उनका पैर पकड़ लेते हैं)

हनुमान : भक्त शिरोमणि मैं प्रसन्न हूँ,
तुमने कड़ी परीक्षा दी है,
वर माँगो, मैं तुमको दूँगा।

तुलसी : राम नाम से कम क्या माँगू,
राम नाम से अधिक कहूँ क्या,
मैं प्रकाश का सहयात्री हूँ,
मुझको पूरा सूर्य चाहिये,
जन जीवन को जो प्रकाश दें।

हनुमान : भक्तराज, तुम स्वयं सूर्य हो,
राम नाम की गरिमा पाकर
उजली किरणों से चमकोगे,
पूरी सृष्टि के अंतिम दिन तक।
विद्या की देवी के वर से,
वेदतुल्य तुम काव्य लिखोगे,
शब्द तुम्हारे मंत्र बनेंगे,
गूँज उठेगी इन शब्दों से,
ईश्वर की छाया उतरेगी।

किन्तु तुम्हारी राम कथा में,
कौशल्या के राम न होंगे,
जन-जन के जो सतत मूल्य हैं
घर-घर के जो नियम धर्म है,
उन्हें नया आकार मिलेगा।

दो बार { मर्यादा के पुरुष रूप में,
नये राम की प्रतिमा होगी।

तुलसी : देव एक वर माँग रहा हूँ,
प्रभु के दर्शन का प्यासा हूँ।

हनुमान : राम बसे हैं सबके मन में,
आँख खुलेगी, दर्शन होगा।

(पर्दे पर राम-लक्ष्मण-सीता की छाया)

नेपथ्य से : रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।

(पटाक्षेप)

●

□□